वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली

★

क्रम संख्या 9125
काल नं० ५२०.२ ५३०५
खण्ड

सस्ता साहित्य मण्डल

उनहत्तरवां ग्रन्थ

---

[६९]

आगे बढ़ो

[स्वेट् मार्डेन की Pushing to the Front का संक्षिप्त अनुवाद]

नाथूराम शुक्ल

प्रकाशक

सस्ता साहित्य मण्डल

दिल्ली

पहली बार २०००
सन् उन्नीस सौ पैंतीस
मूल्य आठ आना

पूज्य मालवीयजी की अपील

"'सस्ता साहित्य मण्डल' ने हिन्दी में उच्चकोटि की सस्ती पुस्तकें निकालकर हिन्दी की बड़ी सेवा की है। सर्वसाधारण को इस संस्था की पुस्तकें लेकर इसकी सहायता करनी चाहिए।"

मदनमोहन मालवीय

मुद्रक
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस,
दिल्ली

दो शब्द

दम वर्ष पहले की बात है। मे शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा से लखनऊ गया था। हृदय मे माहस मात्र था। कुछ दिन बाद मुझे आर्थिक मकट मे पड जाना पडा। मुझे चारो ओर निराशा ही निराशा दिखाई देती थी। न कोई सहायक था और न कोई सहानुभूति के दो शब्द ही कहनेवाला था। मुझे एक कविता की दो पक्तिया बारबार याद आती थी—

भला सुनेगा यहाँ कौन अब,
मेरी करुण कहानी।
जीवन की उलझन में भूले,
जग के सारे प्राणी॥

मच है, उस वैभवपूर्ण नगरी मे कौन किमकी मुननेवाला था? एक दिन बाजार मे घूमते-घूमते स्वेट मार्डन की "पुशिग टू दी फ्रन्ट" नामक रचना रद्दी कागजो म हाथ लग गई। थोडे मे मूल्य पर मैने पुस्तक खरीद ली और एक रात मे ही उमे पढ डाला।

पुस्तक पढने पर ऐसा मालूम हुआ कि कर्मयोगी वीरो के लिए निराशा नाम की तो कोई चीज ही नही है। पुस्तक क्या थी उच्च विचारो का खजाना। वह एक अमोध शक्ति मिद्ध हुई। पतन और असफलता मे तो उसके एक-एक शब्द जादू का काम करते थे। इस फटी हुई पुस्तक ने मेरे जीवन की काया पलट दी। कई बार पुस्तक को भारतीय नवयुवको के हाथ मे पहुँचाने की इच्छा हुई परन्तु अनेक विपति परिम्थितियो मे पडे रहने के कारण यह स्वप्न सफल न हो सका।

पाठको, जब आपका भाग्य अधकारमय दीखता हो, जब विपत्तियो के बादल चारो ओर घिर रहे हो, जब आप कर्त्तव्य भ्रष्ट हो रहे हो, जब जीवन की नौका—इस बेकारी के युग मे—डवाडोल होकर डूबना चाहती हो तब आप "आगे बढो" को उठाइए। एकबार आदि से अत तक पढ जाइए। आपको साहस की सजीवनी शक्ति प्राप्त होगी। आप का मार्ग कष्ट मय होते हुए भी आशा और सुख की प्रभा से दीप्त हो जायगा। आप अपने ध्येय की ओर दृढता से बढ सकेगे। मेरे इन शब्दो की सचाई आपको यह पुस्तक पढने से ही ज्ञात हो सकेगी। सच तो यह है कि आप विद्यार्थी हो, व्यापारी हो, नौकर हो, युवा हो, बूढे हो, गरीब हो, अमीर हो, सुख मे हो, दुख मे हो—कही कैसी भी परिस्थित मे हो, यह ग्रन्थ आपकी मदद करेगा। आपका सच्चा मित्र सिद्ध होगा।

इस पुस्तक के प्रत्येक अध्याय मे ससार के महान् पुरुषो के जीवन चरित्रो का—चुने हुए उदाहरणो का—बडे ही रोचक ढग से समावेश हुआ है। उनके जीवन चरित्रो की ये चुनी हुई बाते हरेक के जीवन को लाभदायक और उन्नति के पथ पर ले जानेवाली है। आप उन्नति के शिखर पर चढना चाहते हो तो इन बातो का मनन कीजिए और उन्हे अपने जीवन मे प्रयोग कर देखिए। ये चरण चिन्ह अमर चिन्ह है। इन पर चलकर भूले भटके लोग सफलता के द्वार पर अवश्य पहुँच सकेगे।

जिस ग्रन्थ से लाखो ने लाभ उठाया उससे आप भी लाभ उठा अपने जीवन को सुखी बनाने मे समर्थ हो—यही मेरी कामना है।

विनीत

जबलपुर
५-९-३५

नाथूराम शुक्ल

विषय-सूची

आगे बढ़ो !

[१]

मनुष्य और अवसर

"कोई भी आदमी जबतक किसी चीज के लिए मिहनत नही करेगा तबतक वह चीज उसे मिल नही सकती।"

—गारफील्ड

"सतर्कता मे अवसर की ताक मे रहना, कौशल और साहस से अवसर को प्राप्त करना, शक्ति और दृढता के द्वारा अवसरो को सर्वोत्तम सफलता पर पहुँचाना—निश्चय ही सफलता को देनेवाले प्रधान सद्‌गुण है।"

—आस्टिन फेल्पस

"क्या तुम सच्चे हृदय से उद्योगी हो? तो इस मिनट को व्यर्थ मत जाने दो। जिस बात को तुम कर सकते हो अथवा जिस बात का तुम स्वप्न देख सकते हो, उसे शुरू करदो।"

"मै रास्ता ढूढ लूगा या अपना रास्ता स्वय बना लूगा।"

—वर्ले

नील नदी का युद्ध समय पास आ रहा था। नेलसन ने अपने सेनानायकों के सामने लडाई का नक्शा पेश किया। कप्तान बेरी उसे देखकर हर्षित हो उठा और बोला—"यदि हमारी जीत हो गई तो दुनिया क्या कहेगी ?"

नेलसन चुप न रह सके। वह बोल उठे—"यदि के लिए कोई स्थान नहीं है, जीत निश्चय ही हमारी होगी। हां, हमारे विजय की कहानी कहनेवाला कोई बचेगा या नहीं, यह प्रश्न दूसरा है।" थोडी देर मे उसके कप्तान-गण जाने लगे। तब निश्चयपूर्वक नेलसन ने कहा—"कल इस समय के पहले ही या तो मुझे विजय प्राप्त हो जावेगी या मेरे लिए वेस्टमिस्टर के गिर्जे मे कब्र तैयार हो जायगी।"

सब लोग चले गये। जिस बात मे उसके अन्य साथियों को हार की सम्भावना दीखती थी वहीं उसकी तीव्र दृष्टि और साहसी आत्मा को एक शानदार विजय का अवसर दीख रहा था।

सेन्ट बरनार्ड की घाटी का निरीक्षण करके लौटे हुए एंजीनियरों से नेपोलियन ने पूछा—"क्या रास्ता पार करना सम्भव है ?" एंजीनियरों ने कुछ झिझकते हुए कहा--"हां, शायद हम पार कर लेंगे।"

"सिपाहियो आगे बढो।" सामने दिखाई देनेवाली बहुतसी महान कठिनाइयों की ओर जरा भी ध्यान दिये बिना नेपोलियन के मुंह से निकल पड़ा। इंग्लैण्ड और आस्ट्रिया के लोग इस नाटे कद के नवयुवक की बातों को सुनकर हंसते थे और कहते थे कि ६० हजार मनुष्यों की सेना, सैकड़ो मन युद्धास्त्र के साथ, आल्पस पहाड को भला कैसे पार

कर सकती है ? परन्तु उसी समय जोनेवा में उसका साथी मासेना शत्रुओं से घिरा भूखों मर रहा था। विजयी आस्ट्रियन नीस के फाटकों पर धावा कर रहे थे। क्या ऐसे संकट के समय नेपोलियन अपने साथियों से मुंह मोड सकता था ?

जब यह असम्भव बात सम्भव होगई तो लोग कहने लगे—"वाह! यह कौनसी बड़ी बात है, ऐसा तो पहिले भी हो सकता था।" दूसरे लोग राह की भीषण कठिनाइयों के कारण उसे दुस्तर कार्य कहते थे। बहुत से कमान्डरों के पास भी सेना हथियार और अन्य उपयोगी सामग्रिया थीं, परन्तु उनके पास वह दृढ इच्छा शक्ति नहीं थी जिसके कारण बोनापार्ट का कलेजा कठिनाइयो को देखकर वज्र हो जाता था। वह बडो से बडी आपत्ति के आजाने पर अपनी आवश्यकताओं के द्वारा ही अपने अवसरों का मालिक बन बैठता था।

क्या ये सब बातें अपने-आप हो गई, जब होरेशस ने केवल दो साथियों के बल पर ६० हजार टसकनों की सेना को टाइबर के पुल के टूटने तक रोक लिया था, जब लियोनिड्स ने थर्मापोली पर जरजेक को रोका था, जब सीजर ने हार होते देख भाला लिए हुए आगे बढकर युद्ध की कायापलट करदी थी, जब विकल रीड ने अपनी छाती को अस्ट्रेलियन भालों के सामने करके स्वतंत्रता का मार्ग खोल दिया था, जब कि वर्षों तक नेपोलियन किसी युद्ध मे पराजित नहीं हुआ था ?

इतिहास के पन्ने ऐसे हजारों उदाहरणों से भरे पड़े हैं जिनसे पता चलता है कि शीघ्र-निर्णय और आत्मा की पुकार पर किये हुये कार्य के सामने संसार मे कोई बाधा ठहर नहीं सकती।

कई लोग असाधारण अवसर की बाट जोहा करते है। साधारण अवसर उनकी दृष्टि में उपयोगी नहीं रहते। परन्तु वास्तव मे कोई अवसर छोटा-बड़ा नहीं है। छोटे से छोटे अवसर का उपयोग करने से, अपनी बुद्धि को उसीमे भिड़ा देने से, वही बडा होजाता है।

ई० एच० चेपिन ने ठीक ही लिखा है कि सर्वोत्तम मनुष्य वे नहीं हैं जो अवसरों की बाट देखते रहते है, परन्तु वे है जो अवसर को अपना दास बना लेते है। लाखों अवसरों को खोजने से शायद ही ऐसा अवसर मिले जो खास तौर से तुम्हारी सहायता कर सके। परन्तु तुम्हारे सामने हमेशा ही अवसर उपस्थित रहते है। यदि तुममे इच्छा-शक्ति है, काम करने की ताकत है, तब तो तुम स्वयं ही उनसे फायदा उठा सकते हो। ईश्वर की कृपा-रूपी इस बहती हुई गगा मे स्नान करके अपने जीवन को क्यों नहीं सफल कर लेते?

अवसर न मिलने की शिकायत कमजोर और हिचकिचानेवाले मनुष्य ही हमेशा किया करते है। अवसर? स्कूल अथवा कालेज का प्रत्येक पाठ एक अवसर है। प्रत्येक परीक्षा जीवन का एक अवसर है। कठिनाई का प्रत्येक पल एक अवसर है। प्रत्येक सदुपदेश एक अवसर है। प्रत्येक व्यापार-सम्बन्धी बात एक अवसर है। उस अवसर से तुम नम्र हो सकते हो, मनुष्यत्व प्राप्त कर सकते हो, ईमानदार हो सकते हो, और मित्र बना सकते हो। विश्वासपात्रता का हरएक सुबूत एक अवसर है। तुम्हारी शक्ति और तुम्हारे ईमान पर छोडा हुआ उत्तरदायित्व अमूल्य है। जीवन अवसरों की एक धारा है।

आलसी आदमी ही शिकायत किया करते हैं कि उन्हे समय नहीं है, उन्हे अवसर प्राप्त नही है, पर काम करनेवाले ऐसी बातें कभी नहीं कहते। कुछ नवयुवक छोटे-मोटे अवसरों को उपयोग में लाकर इतना काम कर डालते हैं कि जितना दूसरे सारे जीवन में भी नहीं कर पाते। शहद की मक्खियों के समान वे नवयुवक हरेक फूल मे शहद इकट्ठा करते है। प्रत्येक मिलनेवाला व्यक्ति, दिन की प्रत्येक घटना उनके ज्ञान-भण्डार को या उनके व्यक्तित्व को बढ़ाती है।

कारडिनल ने कहा है कि ऐसा कोई भी व्यक्ति संसार मे नहीं है जिसके पास एक बार भाग्योदय का अवसर न आता हो, परन्तु जब वह देखता है कि यह व्यक्ति उसका स्वागत करने के लिए तैयार नहीं नहीं है तब वह उलटे पैर लौटा जाता है।

राकफेलर ने अपना अवसर पेट्रोलियम (मिट्टी का तेल) मे देखा। उसकी आखों के सामने मन्द-मन्द दीपक के प्रकाश से जागृत होनेवाले सैकडों घर थे। पेट्रोलियम बहुत था किन्तु उसको साफ करने की क्रिया इतनी रद्दी थी कि उससे साफ तेल न निकलता था। यहीं राकफेलर का अवसर था। उसने सेम्युअल एण्डरूज नामक पोर्टर को अपना हिस्सेदार बनाया। उसने एक अच्छी विधि से तेल को साफ करना शुरू किया। उसका तेल बहुत साफ होता था। शीघ्र ही उनकी वृद्धि होने लगी। उन्होंने फ्लागर नामक एक तीसरे हिस्सेदार को शामिल कर लिया। परन्तु एण्डरूज शीघ्र ही असन्तुष्ट हो गया। एक दिन राकफेलर ने पूछा—'तुम क्या लोगे ?'

एण्डरूज ने बेपरवाही से एक पुरजे पर लिख दिया—"१० लाख डालर।" २४ घन्टों के अन्दर राकफेलर ने दस लाख डालर का चेक देते हुये कहा—"एक करोड़ की अपेक्षा दस लाख देकर सस्ते ही मे निपट गये।" बीस वर्षो मे वह छोटा-सा तेल साफ करने का कारखाना—जिसके यंत्र की कीमत मुश्किल से एक हजार डालर होगी—'स्टंन्डर्ड-आइल ट्रस्ट' मे परिवर्त्तित हो गया, जिसका मूलधन ६ करोड़ डालर है, जिसके स्टाक का मूल्य १७ करोड डालर था और बाजार-भाव से जिसकी कीमत १ अरब ५ करोड डालर है।

ऐसे अनेक लोग है जो अवसर को पकड़कर धनवान होगये और करोड़पति कहलाने लगे। परन्तु अवसरों का क्षेत्र यहा समाप्त नहीं हो जाता। नई पीढी के सामने ऐसे-ऐसे अवसर है जिनका उपयोग करके वे इंजीनियर, विद्वान, कला-विशारद, कवि आदि बन सकते हैं। यद्यपि अवसरों के उपयोग से धन कमाना अच्छा काम है, परन्तु धन से भी कही श्रेष्ठ कार्य सामने है। धन ही जीवन के प्रयत्नों का अन्त नहीं है, मनुष्य-जीवन के लक्ष्य की चरम सीमा नही है, बल्कि एक घटना है। अतएव दूसरे प्रकार के अवसरो पर ध्यान देकर तुम अपने को महत्वशाली व्यक्ति बना सकते हो।

एलिजाबेथ फ्राय नामक देवी ने इंग्लेण्ड के जेलखानों मे अवसर देखा। सन १८१३ तक लन्दन के जेलखानों की बड़ी बुरी अवस्था थी। एक ही कमरे मे लगभग ३०० औरतें अर्ध-नग्न अवस्था मे बन्द कर दी जाती थीं। उनको न बिस्तर मिलते थे और न कपड़े। बूढी-युवती और बालिकाये सभी घास, कचरे और चिथड़ों मे सोया करती

थी। कोई उनकी परवाह नही करता था। जिन्दा रखने मात्र के लिए सरकार उन्हे भोजन देती थी। श्रीमती फ्राय ने जेलखाने मे शिक्षा का प्रचार करना अपने जीवन का मुख्य काम बना लिया। जेल की स्त्रिया पहिले तो यह सुनकर आश्चर्य मे पड गईं। कौन सोचता था कि इस भयंकर विकारपूर्ण दल के उद्धार लिए कोई आगे बढ़ेगा ? किसे मालूम था कि माता के महान प्रेम के द्वारा कोई रमणी इन पाप और अज्ञान मे डूबी हुई स्त्रियो को हृदय से लगावेगी ? किन्तु अन्त मे शिक्षा का काम शुरू हो गया। शिक्षा ने बड़ा परिवर्तन किया। तीन महीने मे वे भयंकर पशु शान्त और निर्दोष हो गये। सुधार का विस्तार होने लगा। अन्त मे सरकार ने इस बात को कानूनन जारी कर दिया। एक सदी बीत गई और आज श्रीमती फ्राय की स्कीम सभ्य ससार भर मे काम मे लाई जाती है।

एक लडका मार्ग से जा रहा था। मोटर के धक्के से वह गिर पड़ा। उसकी एक नस टूट गई और खून बड़े जोर से बहने लगा। किसीको कुछ नही सूझता था कि क्या करे। यदि थोडी देर और खून बहता तो सम्भव था कि लडका बडी बुरी अवस्था मे पड जाता। परन्तु उसी समय एक आस्टूले नामक युवक की नजर उसपर पडी। उसने नस के ऊपरी हिस्से को बाध दिया। इससे खून का जाना बन्द हो गया। लडके की जान बच गई। लोग युवक की खूब प्रशंसा करने लगे। आस्टूले की छाती फूलकर दूनी हो गई। इसी उत्साह ने उसे संसार का एक प्रसिद्ध सर्जन बना दिया।

एक दिन हाथार्न और लागफेलो भोजन कर रहे थे। उनके एक

मित्र जेम्स फील्ड्स भी वहां मौजूद थे । उन्होंने कहा—"देखो मैं कितने दिन से हाथार्न से एक आर्केडियन दन्तकथा के आधारपर कहानी लिखने के लिए कह रहा हूँ । कथानक यों है कि आर्केडियन लोगों की भागदौड मे एक लडकी अपने प्रेमी से जुदा हो गई । उसने अपना सारा जीवन उसे ढूँढने मे बिता दिया, और अन्त में एक अस्पताल मे मृत्यु-शैया पर उसे पाया ।" यह सुनकर लाँगफेलो आश्चर्य मे पड गया । उसने हाथार्न से कहा—"अगर तुम्हारा विचार इस कहानी को लिखने का नहीं है तो क्या तुम मुझे इसपर कविता बनाने की अज्ञा देते हो ?" हाथार्न ने स्वीकार कर लिया । लागफेलो ने अवसर से लाभ उठाया और संसार के सामने "इवेंजेलिन" नामक काव्य उपस्थित कर दिया ।

आखे खोलकर देखो और हरेक जगह तुम्हे अवसर मिलेंगे । कान खुले रखनेवालों के पास असहाय मरनेवालों की आवाजें पहुंचे बिना न रहेगी । खुले हृदयवालों को मुक्त हृदय से दान देने योग्य सुन्दर वस्तुओं की कमी नहीं होगी । और खुले हाथों के लिए महान कार्य करने के अवसर का कमी न होगी ।

भला कौन नहीं जानता कि पानी से भरे किसी बर्तन मे कोई एक ठोस चीज डुबोई जाती है तो थोडा पानी बह जाता है, परन्तु कोई अपने इस ज्ञान का उपयोग न कर सका । आर्किमिडीज की नजर इस चीज पर पडी । उसने देखा कि प्रत्येक पदार्थ अपने आयतन के अनुसार ही पानी बाहर फेंक देता है । उसी दिन से संसार को सब प्रकार के पदार्थों का आयतन निकालने का तरीका मिल गया ।

कौन नहीं जानता था कि कोई भी लटकता हुआ पदार्थ जब हिला दिया जाता है तो वह इधर-उधर हिलता है। उसकी यह गति धीरे-धीरे हवा के विरोध और घर्षण से बन्द हो जाती है। किसीने भी इस घटना का मूल्य नहीं समझा, परन्तु बालक गैलीलियो ने एक दिन पाइज़ा नगर के गिरजाघर मे ऊंचाई से लटके हुए चिराग को देखा। हवा के झोंके के कारण चिराग झूलने लगा था। इसी झूलने की गति ने 'पेन्डुलम' के सिद्धान्त को जन्म दिया।

यह सब जानते है कि कोई भी चीज ऊपर से नीचे की ओर गिरती है। लेकिन पेड़ पर से सेब को नीचे गिरते देखकर पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण का सिद्धात न्यूटन ने ही खोजा था।

अवसर कोई पकी-पकाई रोटी तो है ही नही, कि झट कौर लिया और खाने लगे। उसे आंखे खोलकर पहिचानना पड़ता है, उसमे उचित सुधार करना पड़ता है और कार्य और उद्देश्य के अनुकूल बनाना पड़ता है। अवसर का उपयोग तो बीज बोने के समान है। इस बीज से वृक्ष तैयार होता है, फिर फल लगते है, इन फलों से दूसरे लाभ उठाते है। भूतकाल मे उद्योग करनेवालो ने ज्ञान और उपयोग की अगणित चीजो को तैयार किया और आज वे अप्राप्य वस्तुए गली-गली मारी-मारी फिरने लगीं।

वर्तमान युग मे एक पढ़े-लिखे संयमी युवक के सामने, एक चपरासी के लड़के के सामने, एक क्लार्क के सामने, एक गली-गली भटकने वाले अनाथ के सामने, पचासों बड़े-बड़े सुगम मार्ग खुले पड़े है। पहले इनेगिने थे, आज अनेकों है। जो बाते भूतकाल मे इस श्रेणी के

मनुष्यों की सीमा के बाहर थीं वे ही आज उनका स्वागत करने के लिए खडी हैं। अवसरों की कमी नहीं, भाग्य पलट देनेवाली घटनाओं की कमी नहीं, कमी है तो केवल कार्यशील दृढ युवकों की।

चित्रशाला मे एक व्यक्ति ने प्रवेश किया। बहुतसे चित्र उसे दिखलाये गये। एक चित्र मे एक चेहरा बालों मे ढका हुआ था। पैर मे पंख लगे हुए थे।

दर्शक ने पूछा—"यह किसकी तसवीर है ?"

मूर्तिकार ने कहा—"अवसर की।"

"इसका मुंह क्यों छिपा हुआ है ?"

"क्योंकि जब यह मनुष्यों के सामने आता है तो वे इसे पहिचान नहीं सकते।"

"इसके पैरों मे पंख क्यों लगे है ?"

"क्योंकि यह जल्दी चला जाता है, और एक बार चला जाता है तब इसको फिर कोई नहीं पा सकता।"

एक लेटिन लेखक ने लिखा है —"अवसर के चेहरे के सामने बाल रहते है और पीछे वह गंजा रहता है। यदि तुम सामने के बालों को पकड लो तो उसे पकड़े रह सकते हो, परन्तु यदि तुम भाग जाने दोगे तो स्वयं देवता भी उसे फिर न पकड सकेंगे।"

परन्तु जो लोग अवसर का उपयोग नही कर सकते, जो अवसरों का उपयोग करना नही चाहते और जो अवसरों का उपयोग भविष्य में भी नहीं करेंगे, उनके लिए उम्दा से उम्दा अवसर भी किस काम का

जिसे हम जीवन की एक महत्वपूर्ण घड़ी कहते हैं वह अरनाल्ड महोदय के कहने के अनुसार एक ऐसा अवसर है जो हमारी पहले की सुरक्षित सारी ताकतों को इकट्ठा कर उनके द्वारा काम निकालता है। आकस्मिक घटनायें केवल उन्हीं लोगों के काम की है जिनके पास उनसे काम लेने का ज्ञान पहिले से ही मौजूद है। दूसरे अन्य लोगों के पास से ऐसी घटनायें यों ही निकल जाती है।

हमारी सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि हम हमेशा एक ऐसे बहुत अच्छे अवसर की फिराक मे रहते है जिसके द्वारा हम क्षणभर मे महान हो जायं। जुए के दाव के समान हम बिना कोशिश के ही विजय और धन-दौलत प्राप्त कर लेना चाहते है। हम बिना काम किये उस काम में पारंगत कहलाना चाहते हैं, अध्ययन से दूर रहने पर भी ज्ञानवान कहलाना चाहते हैं, उधार के धन पर श्रीमत बनना चाहते हैं। कैसा कपटपूर्ण व्यापार है। इस तरह की धोखे की टट्टी कबतक टिक सकेगी ? इस प्रकार जीवन का क्यों सत्यानाश करते हो ?

सारा दिन आप आलस्य मे क्यों बिताते है ? हाथ-पैर हिलाइए। काम कीजिए और ज्ञान की बढ़ती हुई सम्पत्ति में कुछ थोड़ा-सा जोड़कर अपने को कृतार्थ कीजिए—मनुष्य बनिए।

ऐसे जमाने और ऐसे देश मे आपका जन्म हुआ है कि जहाँ जगह-जगह पर कहीं पर न पाये जानेवाले साधन और अवसर आपके सामने पड़े है। काम करने से शक्ति और बुद्धि आपको ईश्वर ने दी है। तब आपको ईश्वर की आज्ञा मांगने के लिए क्यो रुकना चाहिए ? इस जगत् में आपके करने को बहुत-सा काम पड़ा है।

मानव प्रकृति ऐसी बनी है कि बहुधा एक सुन्दर शब्द या एक तुच्छ सहायता किसी भाई की जीवन-नौका को आपत्ति से बचा सकती है, अथवा उसके जीवन को सफलता के पथ पर ले जा सकती है। हमारे सामने अगणित वीरों के उदाहरण हमे साहस देने और उत्साहित करने के लिए मौजूद है। ऐसे संसार और समय मे, हरएक क्षण हमे किसी न किसी नये अवसर के दरवाजे पर ले जाकर खड़ा कर देता है।

अपने अवसर की बाट मत देखो, उसे स्वयं ही खोजो-पहचानो। फार्युसन नामक गड़रिये लड़के के समान अवसर बनाओ। देखो उसने थोड़े में काच के टुकड़ों के द्वारा दूर आकाश के तारों की दूरी का पता लगाया। जार्ज स्टीफन्स के समान अवसर बनाओ। देखो उसने खरिया मिट्टी के एक टुकड़े की सहायता से कोयले की गाडियो के तख्तों पर गणित के नियमो को सीखा था। अपने-अपने अवसर उन हजारो स्वावलम्बी और निराश्रय बालको के समान बनाओ। देखो उनके पास कुछ नहीं था, कड़ाके की ठंड मे उनका शरीर काँपता था, मूसलाधार बारिश मे वे भीग जाते थे और कड़ी धूप मे वे नगे पैर बिना छाते के दौड़ते फिरते थे। उनके पास पेट भर अन्न प्राप्त करने की ताकत भी नहीं थी, कभी अधपेट रहते तो कभी पानी पीकर ही दिन बिताते थे। उनका कोई सहायक नहीं था। ऊपर एक परमात्मा, और उनके हाथ पैर और हृदय की दृढ़ता ही उनकी संगिनी थी। इन्हीं के बल पर उन्होंने संसार की काया पलट दी। संसार उनका ऋणी है।

युद्ध और शान्ति के समय मे वीरों ने जिस तरह से अपने अवसर को स्वयं बनाकर सफलता हासिल की वैसा तुम क्यों नही करते ? उद्योगी पुरुष साधारण अवसर को भी स्वर्णमय बना लेते है।

जब भाग्य चमक रहा हो और कर्त्तव्य राह बतला रहा हो तो उस मौके को मत जाने दो, भय से कापकर दूर न हटो, यदि सुख अपनी वाटिका मे तुम्हे बुला रहा हो तो भी उधर मत झाको। वीरता से अपने लक्ष्य की ओर बढते चले जाओ। अवसर तुम्हारी राह देखता बैठा है।

---

[२]

अभागे बालक

"प्रत्येक आपत्ति श्राप के समान नहीं होती। जीवन की प्राथमिक आपत्तिया बहुधा आशीर्वाद रहती ह। जीती हुई कठिनाइया न केवल हमे शिक्षा ही देती है बल्कि वे भविष्य के प्रयत्नो मे हमे साहसी बनाती है।"

—शार्प

"इसमे सन्देह नही कि बडे-बडे कारखानो के मालिको ने अपना जीवन 'गरीब लडकपन' मे शुरू किया था।"

—सेथलो

कीटो नामक एक बहिरे लडके ने पढने की इच्छा बताते हुए कहा—"पिताजी मेरे भूखो मरने की बात से आप क्यो डरते है? हमारे पास सब कुछ है। मैं भूख दूर करने का तरीका जानता हूँ। हाटेनटाट नामक जगली बहुत समय तक केवल एक तरह की गोंद ही

खाकर जीते थे। जब उन्हे भूख लगती थी तब वे अपने पेट के चारों ओर पट्टी बाध लेते थे। क्या मैं भी यही काम नहीं कर सकता? झाडियों मे बेर और मकोय फलती है, खेतों में शलजम पाये जाते है। क्या इनसे पेट का काम नही चल सकता?"

यह एक गरीब और बहरा लडका, एक शराबी पिता का पुत्र था। लोग कहते थे कि वह जूते बनाने के सिवाय कुछ नही कर सकता—लेकिन वही लडका संसार का महान् प्रतिभाशाली बाइबिल का पडित हो गया था।

क्रियों एक गरीब गुलाम था। उसका दिमाग ललित कलाओं का घर था। सौन्दर्य उसका देवता था। लेकिन ग्रीस मे एक नवीन कानून बना। इस कानून के अनुसार कोई गुलाम एक आजाद व्यक्ति के समान ललित कलाओ का अध्ययन नहीं कर सकता था। उन दिनों ग्रीस का समाज दो भागों में बटा था। एक स्वतंत्र और दूसरे गुलाम। स्वतन्त्र व्यक्ति ही सब तरह की कलाओं और ऐश-आराम के अधिकारी थे। गुलामों के हाथ मे कठिन से कठिन काम था। जिस समय यह कानून जारी किया गया उन दिनों क्रियों एक सुन्दर मूर्ति-समूह को बनाने में लगा था। संगमर्मर के टुकड़े मे उसने अपना दिमाग निकालकर रख दिया था, अपना हृदय उसमे उंडेल दिया था, अपनी आत्मा रख दी थी। पेरीक्लीज से इनाम पाने की उसकी मुराद थी। लेकिन इस कानून ने तो मानो उसके हाथ काट डाले, उसका दिल मानों टूट गया।

क्रियों की एक बहिन थी। उसे भी इस घटना से बड़ा आघात

लगा। वह आंखों में आंसू भर कर देवी-देवताओं से प्रार्थना करने लगी—"हे माता! हमारे घर की पूज्य देवी! मेरे भाई की रक्षा करो! तुम्हारे चरणों में हमारा मस्तक अर्पित है। देवी! तुम्हारी कृपा ही हमारे जीवन की रक्षा कर सकती है।"

फिर उसने अपने भाई से कहाः—"भैया! तुम मकान के नीचेवाले तहखाने में अपनी चीजें लेकर चलो। और मैं थोड़ी देर में दिया और खाना लेकर आती हूँ। तुम अपने काम को जारी रखो। मैं तुम्हारी मदद करूंगी। भगवान जरूर हमारी मदद करेंगे।"

क्रियों तहखाने में गया। वहाँ उसकी बहिन उसकी सेवा में तैयार रहती थी। दिन और रात वह अपने अद्भुत एवं महान प्रतिभाशाली काम को करता रहा।

इसी समय कला के नमूनों का प्रदर्शन देखने के लिए सारा ग्रीस प्रदेश एथेन्स की कला-प्रदर्शनी में निमंत्रित किया गया। इसके लिए एगोरा नामक जगह चुनी गई। पेरीक्लीज उस उत्सव के सभापति बनाये गये थे। उनके पास ही श्रीमती एस्पेसिया बैठी हुई थीं। फीडीयास, साक्रेटीज, साफोक्लीज आदि सब प्रख्यात आदमी भी पास में थे।

बहुतसी उच्च कला-कृतियों के नमूने वहाँ थे। लेकिन एक समूह की ओर ही सबका ध्यान ज्यादा जा रहा था। यह अन्य समूहों की अपेक्षा कहीं अधिक सुन्दर था और ऐसा मालूम होता था मानो ललित कलाओं के देवता अपोलो ने ही स्वयं अपने हाथों से उसे बनाया है। दूसरे कला-विशारदों को उसे देखकर जलन हो रही थी।

"इसका बनानेवाला कौन है?"—दर्शकों ने पूछा।

लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। बार-बार चोबदार ने यह प्रश्न किया, पर कहीं से कोई जवाब नहीं मिलता था। लोग मूर्ति बनानेवाले को जानने के लिए उत्सुक हो रहे थे और तरह-तरह की बाते व प्रश्न कर रहे थे। इतने मे एक लड़की घसीटकर एगोरा मे लाई गई। उसके कपड़े तितर-बितर हो रहे थे, बाल बिखरे हुए थे, ओठ बन्द थे, परन्तु उसके चेहरे से दृढता टपकती थी।

"यह लडकी कारीगर को जानती है, परन्तु उसका नाम नहीं बतलाती।" शाति-रक्षको ने कहा।

लडकी से फिर पूछा गया। मगर वह चुप रही। उसे उत्तर न देने की सजा की सूचना दे दी गई, लेकिन उसने फिर भी अपना मुह नही खोला। तब पेरीक्लीज ने कहा—"कानून का अमल जरूर होना चाहिए। इस लडकी को कैदखाने में ले जाओ।"

इन शब्दों के निकलते देर नहीं हुई थी कि भीड मे से एक युवक निकल पडा। उसके बाल उड रहे थे, आखों से प्रतिभा की ज्योति निकल रही थी। दौडकर वह पेरीक्लीज के पैरों पर गिर पडा और बोला—"क्षमा करो। उस लडकी को बचालो। वह मेरी बहिन है। अपराधी मैं हूं। इस मूर्ति-समूह को मेरे ही गुलाम हाथों ने तैयार किया है।"

गुलाम और कला! क्रोधी जन-समूह ने बात भी पूरी न सुनी और चिल्लाकर कहा—"लेजाओ, इसे जल्दी ही जेलखाने मे बन्द कर दो।"

लेकिन पेरीक्लीज ने खड़े होकर कहा—"नही, जब तक मैं जिन्दा हूं तब तक ऐसा नही हो सकता। एक बार उस कला-समूह को तो देखो। देखो, कला के देवता भगवान अपोलो खुद निर्णय कर रहे हैं कि ग्रीस

का यह कानून कितना जालिम है। कानून का सबसे ऊंचा उद्देश कला का विकास होना चाहिए। हमारा कला-प्रेम ही हमे अमर बना सकता है, जेलखाना नहीं। इस युवक का स्थान कैदखाने मे नही है; मेरे पास है। इसे मेरे पास ले आओ।"

और हजारों आदमियों के सामने एसपीशिया ने क्रियो के सिर पर मुकुट रख दिया। सब लोगों की तुमुल हर्षध्वनि के बीच क्रियों की बहिन का श्रीमती एस्पीसिया ने स्नेह से चुम्बन कर लिया।

अमेरिका के प्रेसीडेन्ट विलसन ने कहा था—"गरीबी मे मेरा जन्म हुआ था। अभाव मेरा पलना था। मैं जानता हूं कि जब माता के पास रोटी न हो उस समय रोटी मागना किसे कहते है। दस बरस की उम्र मे मैंने अपना घर छोड़ दिया। और ग्यारह बरस तक उम्मेदवारी मे काम करता रहा। साल मे केवल एक महीने स्कूल की शिक्षा मिलती थी। ११ बरसों की कड़ी मिहनत से मुझे केवल ८४ डालर मिले। मैंने एक भी डालर अपने सुख के लिए कभी खर्च नहीं किया। २१ बरस की उम्र तक मैं एक पसे तक को गिनता रहा। मीलों पैदल चलकर साथी मनुष्यों से काम करने की भीख मांगने की वेदना को मैं समझता हूं। २१ बरस की उम्र के पहले महीनों में जंगल गया, बैलों को हांका और लकड़ियाँ काटी। मैं सवेरे बहुत ही जल्दी उठता था और शाम तक कठिन काम करता रहता था। इतने सब काम करने पर भी मुझे महीने मे ६ डालर ही मिलते थे। प्रत्येक डालर मुझे उस समय इतना बडा दीखता था जितना बड़ा कि आज की रात का चाँद दीख रहा है।"

आत्म-सुधार और स्वयं-शिक्षा के किसी अवसर को विलसन ने नहीं खोया। संसार में बहुत कम आदमी बचत के मिनटों के मूल्य को इतना महान समझते हैं। विलसन हर एक मिनट को सोने के समान समझते थे, उसे फजूल नहीं जाने देते थे, और उससे जितना अधिक बन सकता था उतना लाभ निकाले बिना न रहते थे। २१ वर्ष की उम्र होने के पहिले उन्होंने एक हजार अच्छे-अच्छे ग्रन्थों को पढ़ डाला। इसके बाद नाटिक नामक शहर को जो उनके गाँव से १०० मील दूर था, काम करने के लिए रवाना हुए। उन्होंने बोस्टन शहर होते हुए जाना ठीक समझा जिसमें वे रास्ते के ऐतिहासिक स्थानों को देख सकें। सारे सफर में उनका केवल एक डालर ६ सेन्ट खर्च हुआ।

एक साल में वे नाटिक की वादविवाद-सभा के खास वक्ता हो गये। ८ वर्ष भी नहीं बीतने पाये थे कि मासाचुसेट की व्यवस्थापक सभा में गुलामी के विरुद्ध उनका पहला भाषण हुआ। बारह वर्ष के बाद वे वहाँ की राष्ट्रीय कांग्रेस में आ गये। उनका प्रत्येक क्षण महान अवसर था। उन्होंने जीवन की प्रत्येक घटना को अपनी विजय का साधन बना लिया था।

लगभग १ हजार बरस पहिले लायोन्सनगर में एक भोज दिया गया था। बड़े-बड़े लोग उपस्थित थे। प्राचीन ग्रीस की पौराणिक कथाओं के चित्रों के सम्बन्ध में कुछ विवाद हो पड़ा। मेहमानों में इस तरह से विवाद बढ़ते देखकर गृह-स्वामी ने अपने एक नौकर को बुलाया और उस चित्र के विषय में समझाने के लिए कहा। नौकर ने

स्पष्ट, संक्षेप, सरल और विश्वसनीय भाषा मे सारे विषय को समझा दिया। सब आश्चर्य में पड गये और साथ ही सारे झगड़े का भी अन्त हो गया।

एक मेहमान ने बड़े आदर के साथ पूछा—"महाशय! आपने किस स्कूल में शिक्षा पाई है?" नौजवान नौकर ने नम्रता से उत्तर दिया—"महाशय! मैंने कई स्कूलों मे शिक्षा पाई है, परन्तु 'विपत्ति' के स्कूल मे मैंने सब से अधिक समय तक अध्ययन किया है।" गरीबी से उसने कितना अच्छा लाभ उठाया। उन दिनों यद्यपि वह एक गरीब नौकर था, परन्तु जल्दी ही यूरोप मे उसकी कलम की कीर्त्ति गूंज उठी थी, और आज कौनसा सभ्य देश है जो क्रान्तिकारी जीन जेक रूसो के ग्रन्थों से परिचित नही है?

आठ बरसों तक विलियम कार्बेट हल चलाया करता था। वहां से भाग कर वह लन्दन आया आठ नौ महीने तक वह कानून सम्बन्धी कागजों की नकल करता रहा। फिर पलटन मे भरती हो गया। अपने सैनिक जीवन के प्रथम वर्ष मे एक पुस्तकालय का सदस्य बन गया और उसकी अधिकाश पुस्तकें पढ डालीं। वह खुद लिखता है कि जब मैं ६ पैसे प्रतिदिन तनख्वाह पाता था तब मैंने व्याकरण सीखा था। मेरी कोठरी का किनारा मेरे अध्ययन करने का कमरा था, सिपाही का झोला किताबे रखने की आलमारी थी, मेरी गोद मे पडा हुआ लकड़ी का तख्ता मेरी टेबिल थी। इस काम मे मुझे एक वर्ष से अधिक नही लगा। मोमबत्तियां और तेल खरीदने के लिए मेरे पास पैसा नही था, ठंड के दिनों मे मुझे अंधेरे मे रहना पडता

था. आग की रोशनी से मैं काम चलाता था। कलम या कागज़ ख़रीदने के लिए मुझे अपने खाने के रुपयों में से खर्च करना पड़ता था। अतएव मुझे आधे पेट ही रह जाना पड़ता था। मुझे कभी ऐसा समय नहीं मिला था जिसे मैं स्वतंत्रता से अपना कह सकता। दस सिपाहियों की आपस की बातचीत, हँसी, गायन, सीटी और शोर-गुल के समय ही मुझे पढ़ना पड़ता था। उनकी स्वतंत्रता पर मेरा कोई अधिकार नहीं था। क़लम और स्याही के लिए खर्च हो जानेवाले एक फार्दिंग को आप मामूली चीज मत समझिए। वह एक फार्दिंग, ओह! मेरे लिए बड़ी भारी चीज थी। मेरा स्वास्थ्य अच्छा था और मैं खूब व्यायाम करता था। हरेक आदमी के लिए बाजार-खर्च दो पेंस प्रति सप्ताह मिलता था। मुझे अच्छी तरह याद है कि एक समय मैंने एक आध पेनी बचाकर जेब में रख ली थी। मेरी इच्छा थी कि सबेरे इसकी एक लाल मछली खरीदूंगा। मुझे बड़ी भूख लगी और मैंने अपनी जेब में हाथ डाला तो वह बिलकुल ख़ाली था। अध-पेनी नदारद थी। भूख के मारे प्राण निकल रहे थे। लेकिन क्या किया जाय? मैं बिस्तर पर अपना सिर रखकर बच्चे की तरह व्याकुलता से आँसू बहाता रहा।"

परन्तु कावेट महोदय ने अपनी दरिद्रता और कठिनाइयों का अपनी ज्ञान और सफलता की मुराद को पूरा करने के लिए उपयोग किया। वह लिखता है कि यदि मैं ऐसी परिस्थिति में ऐसा काम कर सका तो क्या संसार भर में कोई ऐसा युवक है, या हो सकता है, जो इस काम को न करने के लिए कोई बहाना ढूँढ निकाले?

थियोडर पारकर ने एक दिन कहा—"पिताजी! क्या कल मुझे छुट्टी मिलेगी? गरीब पिता ने यह बात सुनकर आश्चर्य से अपने छोटे-से लड़के की ओर देखा, क्योंकि दूसरे दिन काम बहुत था, परन्तु लड़के की सच्ची इच्छा को देखकर उसने उसे छुट्टी दे दी। थियोडर प्रातःकाल जल्दी उठा और दस मील पैदल चलकर हार्वर्ड कालेज पहुँचा। उसने वहा प्रवेश-परीक्षा मे भरती होने की इच्छा बताई। वह आठ बरस की उमर से ही नियमपूर्वक स्कूल नहीं जा पाया था। ठण्ड के दिनों मे वह केवल तीन महीने जाता था और बारम्बार अपने सबक को हल चलाते समय अथवा कोई और काम करते समय याद किया करता था। यहाँ-वहाँ बचा हुआ समय वह अच्छे-अच्छे ग्रन्थों के पढ़ने मे लगाता था। बेचारा माग-मागकर किताबे पढ़ता था। एक किताब वह माँग नही सका परन्तु उसकी उसे बड़ी जरूरत थी। एक दिन गर्मी के मौसम मे सूर्योदय से पहिले वह उठा और बेरों को चुन थैलों मे भरकर बोस्टन के बाजार मे बेच आया। उनकी बिक्री से जो पैसे मिले उससे उसने लेटिन कोष खरीदा।

जब थियोडर रात मे बड़ी देर से घर लौटकर आया और अपनी सफलता का किस्सा पिता को सुनाया, तब पिता ने कहा:—"शाबास थियोडर! परन्तु तुम्हे मैं पढ़ने का खर्च देने मे तो असमर्थ हूं।" पुत्र ने जरा भी विस्मित न होते हुए कहा—"पिताजी! सच है। पर मैं स्कूल मे नहीं रहूंगा, मैं घर ही मे पढ़ाई करूंगा और अन्तिम परीक्षा में बैठकर सार्टीफिकेट प्राप्त कर लूंगा।" और उसने ऐसा ही किया। बाद मे चलकर यही व्यक्ति देश का हार हो गया।

एल हूबरिट कहता है—"मेरे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घड़ी वह थी जब मैंने होमर की लिखी हुई इलियड की पन्द्रह पंक्तियाँ पढ़ीं थी।" उसका पिता जब मरा था तब उसकी उमर १६ वर्ष की थी। वह लुहारी का काम सीखता था। दिन में १०-१२ घंटे रोज उसे भट्टी का काम करना पड़ता था। भट्टी धौंकते समय वह अंकगणित के प्रश्न हल करता जाता था। दस बरस बाद उसने वुर्स्टर के पुस्तकालय का आश्रय लिया। उस समय वह रोज अपनी दिनचर्या लिखता था। उसकी कुछ सतरों पर दृष्टि डालिए :—

"सोमवार जून १८, सिरदर्द, ४० पृष्ठ कुवियेर की लिखी हुई, पृथ्वी-सम्बन्धी बातें, ६४ पृष्ठ फ्रेन्च, ११ घंटे भट्टी धौंकना। जून १९, ६० लकीरें हिब्रू, ३० डेनिश, १० बोहेमियन, ९ पोलिश, १५ ताराओं के नाम, १० घंटे भट्टी का काम। बुधवार जून २०, २५ लकीरें हिब्रू, ८ लकीरें साइरिक, ११ घंटे काम।"

इस तरह से इस बालक का समय बीतता था। गजब का परिश्रम वह करता था। उसने १८ भाषायें और ३२ बोलियों को सीख लिया। वह 'विद्वान लुहार' के नाम से प्रसिद्ध हो गया था। इस भाग्यहीन बालक के अध्यवसाय को देखकर थोड़ी-सी सुविधावाले लड़के यदि शिक्षा प्राप्त न कर सकते हों तो उन्हें शर्म से मुह नीचा कर देने के लिए यह उदाहरण पर्याप्त है।

टाल्पेज युवकों के साथ बातें करते-करते कहा करते कि "नवयुवको! क्या तुमको आपत्तियों को देखकर डर लगता है? क्यों तुम्हारी गरीबी तुम्हारे रास्ते में बाधक हो रही है? एक बार सोचो,

तुम आज उसी जगह पर खड़े हुए हो जिसपर अन्त मे सफलता पानेवाले भी खड़े हुए है। मेरे शब्दों को ध्यान से सुनो और तीस बरस बाद इनपर विचार करना। तुम्हे पता लगेगा कि उस समय जो लोग देश के लखपती धनवान प्रभावशाली वक्ता, प्रतिभावान कवि, ऐश्वर्यशाली सौदागर, बड़े-बड़े मानवजाति के प्रेमी, राष्ट्र और धर्म के उद्धारक होंगे—वे सब इस समय तुम्हारी ही बराबर खड़े है। एक इंच ऊंचाई पर भी कोई नही है। वे भी बडी ही कठिन परिस्थितियों मे फंसे हुए हैं।

"यदि पास कुछ नहीं है, कोई सम्पत्ति नही है, तो नवयुवक! किसी पुस्तकालय मे जाओ, कुछ पुस्तकों को निकालो और उस परमेश्वर के बनाये इस आश्चर्यजनक यंत्र—अपने शरीर—के हाथ-पैर, आंखों और कानों के बारे मे पढो, फिर किसी डाक्टर के साथ अस्पताल मे जाकर शरीर के भीतरी भागों को देखो और कभी भी भूलकर अपने मुह से मत निकालो कि तुम्हारे पास जीवन-यात्रा शुरू करने के लिए पूंजी नहीं है। देखो हरेक गरीब से गरीब नवयुवक को खुद ईश्वर ने अच्छी तरह से सुसज्जित कर दुनिया मे भेजा है। मिहनत करो, और दुनिया मे अपनी ज्योति प्रकटाओ।"

अखबार बेचने का धन्धा जीवन की सफलता और सम्मान पाने के लिए क्या कोई अच्छी शुरुआत है? अखबार बेचकर रोज के भोजन का प्रबन्ध करना कोई बडी किस्मत की बात नहीं है। तिसपर भी अमेरिका के व्यापार का पुनर्जन्म करनेवाले एडीसन ने, ग्रान्ट ट्रन्क रेलवे पर अखबार बेचने का काम शुरू किया था। थामस एलवा

एडीसन उस समय १५ वर्ष का था। इतनी छोटी उमर मे ही उसने रसायनशास्त्र का अध्ययन करना शुरू कर दिया था।

एडीसन प्रतियोगिता मे हमेशा सर्वश्रेष्ठ निकलता था। थोडी सी उम्र ही मे उसने विज्ञान के ध्येय को अपना लिया था। हाल मे एक बार जब उससे उसकी सफलता का कारण पूछा गया तब उत्तर दिया कि मै हमेशा नशे से दूर और कार्य को छोडकर दूसरी सब बातो मे बिलकुल सयमी रहा हू।

दो अशिक्षित और अज्ञात व्यक्ति एक सस्ते-से होटल मे आकर ठहरे। इन्होंने देश के खून मे मिली हुई एक बुराई को मिटाने का निश्चय किया था। एक ओर ये थे साधनहीन और गरीब व्यक्ति, और दूसरी ओर थे देश के पढ़े-लिखे विद्वान राजनीतिज्ञ, धर्मोपदेशक, धनशाली और वैभवशाली व्यक्ति। उन्हे राष्ट्र की एक रूढि के विरुद्ध सफल होने का क्या कोई अवसर था? हा! क्योकि इन युवकों के दिलो मे ऊचे उद्देश्य की एक आग जल रही थी। उनका कार्य सच्चा था। उनमे से एक का नाम बेन्जिमन लॉन्डे था। उसने ओहियो से एक 'द जिनियस आफ युनिवर्सल लिबर्टी' (विश्व-स्वतन्त्रता की प्रतिभा) नाम का पत्र निकाला था। हर महीने वह उस पत्र की छपी प्रतिया छापेखाने से २० मील की दूरी पर पीठ पर लादकर ले जाता था। अपने ग्राहकों की सख्या बढाने के लिए उसने ४०० मील की यात्रा की थी। वह एक असाधारण व्यक्ति था।

विलियम लाइड गैरीसन को सहयोगी बनाकर उसने इस काम को और भी अच्छी तरह से चलाया। आम सडकों पर काम करनेवाले

गुलामों के दृश्यों ने, घर और कुटम्ब से अलग किये गये इन अभागे गुलामों से लदे हुए जहाजों ने, नीलाम-घर की हृदयविदारक बातों ने, गैरीसन के हृदय पर एक अमिट छाप लगा दी थी। गरीब माता के इस पुत्र ने, जिसे स्कूल की शिक्षा नही मिली थी परन्तु बचपन ही से अत्याचार का विरोध करना सिखाया गया था, इन दोनों को आजादी दिलाने के लिए अपने जीवन को अर्पण करने का निश्चय कर लिया था।

पत्र के पहिले ही अंक मे गैरीसन ने "गुलामी से शीघ्र मुक्ति" विषय पर एक जोरदार अग्रलेख लिखा। सारे समाज ने उसे गालियाँ देना शुरू किया। वह पकड लिया गया और जेलखाने मे भेज दिया गया। यह खबर उसके मित्र जान जी० ह्विटियर को मिली। उसने एक धनी मित्र हेनरी बले को लिखा कि आप मिहरबानी करके जुर्माना देकर गैरीसन को छुडा लीजिए। ४९ दिन की कैद के बाद वह छोड दिया गया। गैरीसन को २४ वर्ष की आयु मे अपने आजाद विचारों के कारण जेल भोगनी पडी थी। उसने अपनी जवानी मे एक राष्ट्र की एक बुराई का जोरों से विरोध किया था।

बिना धन, दोस्त और किसी जान-पहचान के उसने बोस्टन से 'लिबरेटर' (मुक्तिदायक) नामक पत्र निकालना शुरू किया। जरा इस युवक की पहिली घोषणा को तो पढिए। वह लिखते है—"मैं सत्य के समान कठोर और न्याय के समान दृढ रहूँगा। मैं हृदय से सत्य कहता हूँ, मैं व्यर्थ के शब्दों का जंजाल नही रचूँगा। मैं क्षमा नही करूँगा। मैं एक इंच पीछे नहीं हटूँगा, मेरी बातें सुननी पड़ेगी।"

जिस युवक के खिलाफ सारी दुनिया हो उसके लिए ये कितनी ढिठाई की बाते है ?

दक्षिण करोलिना के आनरेबल राबर्ट हेने ने बोस्टन के मेयर को लिखा—"मेरे पास किसी ने 'लिबरेटर' की एक प्रति भेजी है। कृपया उसके प्रकाशक का नाम लिख भेजिए।" मेयर को पता लगा कि एक युवक इसे एक कोठरी मे छापता है। उसके साथ में एक हब्शी लडका रहता है तथा कुछ आदमी भी और काम करते है।

परन्तु इसी युवक ने एक कोठरी से 'लिबरेटर' निकालकर सारे संसार के विचारों मे क्राति मचा दी। लोगों ने सोचा कि इसे जरूर दबाना चाहिए। करोलिना को 'विजीलेन्स असोसियेशन ने 'लिबरेटर' की प्रति बेचनेवाले को पकडने के लिए १५ सौ डालर का इनाम रखा। एक-दो रियासतों के गवर्नरों ने सम्पादक के सिर के लिए इनाम की घोषणा की। जोर्जिया की कानून-सभा ने ५ हजार डालर का इनाम उसे पकडने और अपराधी साबित करने के लिए रखा।

गरीसन और उसके साथियों को हर जगह से धमकी दी जाती थी। परन्तु वे अपने उद्देश्य पर डटे ही रहे। अंत मे सफलता मिली और सारे राष्ट्र ने उसका सम्मान किया।

लन्दन की एक घुड़साल मे माइकल फराडे नाम का एक लडका रहता था। वह अखबार बेचा करता था। सात वर्ष की उम्र मे वह एक जिल्दसाज को दूकान में काम करने लगा। इनसाइक्लोपीडिया नामक पुस्तक की जिल्द बाधते समय उसकी निगाह बिजली के एक लेख पर पडी। उसने उसे पढा। छोटी-मोटी चीजें इकट्ठी करके प्रयोग करने

शुरू किये। एक ग्राहक उस लड़के के उद्योग को देख बड़ा प्रसन्न हुआ और उसे सर हेम्फ्री डेवी का भाषण सुनने के लिए ले गया। माइकल ने भाषण पर नोट लिख लिये और फिर उन्हें डेवी के पास भेज दिया। इस महान व्यक्ति ने इसे अपने यहाँ यंत्रों को व्यवस्थित रूप से रखने के लिए नौकर रख लिया। बालक डेवी के प्रयोगों को बड़े ध्यान से देखा करता था। कुछ समय में यही भाग्यहीन बालक एक बड़ी भारी सभा में भाषण देने को निमंत्रित किया गया। बाद में वह वुलविच की रायल एकेडेमी का अध्यापक नियुक्त कर दिया गया और विज्ञान-संसार में चमत्कार करने लगा।

भाग्यहीन बालक डिसरेली ने कहा था—"जो बातें एक बार हो चुकी हैं वे ही फिरसे हो सकती हैं। मैं गुलाम नहीं हूँ, कैदी नहीं हूँ, और अपनी ताकत से बाधाओं को दूर कर सकता हूँ।" उसके खिलाफ सब कुछ था, उत्साह देने के लिए केवल हजारों वर्षों के उदाहरणमात्र थे। वह सोचता था कि जब जोसफ नाम का गरीब यहूदी ४ हजार वर्ष पहले परिश्रम से मिश्र का प्रधान मंत्री हो गया, तब क्या वह भी प्रधानमंत्री नहीं हो सकता? वह छोटे दरजेवालों के बीच से आगे बढ़ा, मध्यम दरजेवालों के बीच से आगे बढ़ा, ऊंचे दरजेवालों के बीच से ऊपर निकला, और राजनैतिक तथा सामाजिक शक्ति का मालिक बन बैठा। पार्लमेंट में लोगों ने उसकी हँसी उड़ाई, उसे घृणा की नजर से देखा, अपनी अनिच्छाओं को प्रदर्शित किया, परन्तु उसने केवल यही कहा—"समय आवेगा जब तुम मेरी बात सुनोगे।" और समय आया जब वह भाग्यहीन बालक इंग्लैण्ड का

प्रधानमंत्री हो गया। लगभग २५ वर्ष तक वह राज्य का भाग्य-विधाता बना रहा।

एक गरीब विधवा थी। उसके तीन बालक थे। परन्तु इन तीन के पास पहिनने को दो ही पायजामे थे। उसे बड़ी चिन्ता लगी रहती थी कि ये किसी तरह पढ जावें। इसलिए वह अपने हिसाब से उन्हे भेजती थी। शिक्षक को मालूम हो गया कि हरेक लडका तीन दिन मे केवल एक दिन स्कूल आता है। उस गरीब ने जैसा बन सका उनको शिक्षा दी। एक लडका प्रोफेसर, दूसरा डाक्टर और तीसरा लडका पादरी हो गया। "अवसर नहीं है," "भाग्यहीन हैं," इस तरह की पुकार मचाकर जीवन नष्ट करनेवालों के लिए यह कैसा सुन्दर उदाहरण है!

सफलता पाने के केवल कुछ रास्ते है, उन्हीं रास्तों से लोग विजयी हो सकते है। नवयुवक मे दृढ इच्छाशक्ति होनी चाहिए, उसे काम से घृणा नहीं करना चाहिए, कोई भी ईमानदारी से किया गया काम उसकी जात को नीचा नही करता। ऊचे कुल का लडका बढई का काम करने से बढई नहीं हो सकता। क्या तुम बाधाओं का सामना कर सकते हो? क्या तुम नाकामयाब होने पर भी नाकामयाबी के कारणों को ढूढकर फिर से आगे बढने के इच्छुक हो? क्या तुम अपने पैरों पर अपने को खड़ा करने की ताकत रखते हो? क्या तुम मनुष्य के महान भविष्य पर भरोसा करते हो? तो तुम्हारे मार्ग को गरीबी रोक नही सकती, भूख और प्यास तुम्हारी आकाक्षाओ को दबा नही सकती, धन और सहायता की कमी तुम्हारे उत्साह को हटा नही सकती, जनता की हंसी और मजाक से तुम अपने कार्यों को

नहीं छोड़ सकते। तुम्हारे स्वगत के लिए कहीं दूरी पर नकली बादलों की ओट मे छिपे हुए मन्दिर मे सफलतादेवी विराजमान है। केवल दृढता से उस ओर बढने ही की जरूरत है।

एक गरीब लडका था। उसे स्कूल की शिक्षा नहीं मिली थी। परन्तु अपने कार्यों से वह मानवजाति की प्रशंसा का पात्र हो सका। अमेरिका के युद्ध के समय वह वहा का सभापति था और उसने ४ लाख गुलामों को मुक्त कर दिया।

इस लम्बे कद के, दुबले-पतले, भद्दी सूरतवाले नवयुवक को झाड काटते हुए कल्पना कीजिए। सोचिए, उसके मकान का फर्श अच्छा नहीं है, खिडकिया नही है, वह साझ के समय आग के उजाले मे गणित और व्याकरण का अध्ययन कर रहा है। ब्लेकस्टोन के ग्रन्थ को पढने की इच्छा से वह चार मील की यात्रा करता है और उस अमूल्य पुस्तक को लाता है। रास्ते मे वह सौ पृष्ठ पढ लेता है। यही अब्राहम लिंकन अमेरिका का भाग्यविधाता हो गया।

ओहियो के जंगल की एक झोंपडी मे एक विधवा १८ मास के बालक को लेकर चिन्ता कर रही थी कि किस तरह से भेडिये से बालक की रक्षा हो सकेगी? थोड़े दिनो मे लडका बडा होता है। लकडी काटता, खेत जोतता और माता की मदद करता है। हरेक फुरसत के घन्टे को वह उधार ली हुई पुस्तकों के अध्ययन मे खर्च करता है। १६ वर्ष की उम्र में वह खच्चर हाकने का काम करता है। जल्दी वह एक पुस्तकालय मे झाड़ू लगाने और घंटी बजाने के काम के लिए दरख्वास्त देता है। वह मंजूर होती है और इससे उसका कुछ खर्च निकल जाता

है। दूसरी जगह वह कपड़े धोने और सामान लाने आदि के काम पर एक डालर प्रति सप्ताह के वेतन पर काम करने लगता है।

शीघ्र ही वह विलियम कालेज में जा पहुंचता है और दो साल मे सम्मान-सहित पास हो जाता है। २६ वर्ष की उम्र मे राज्य की सीनेट मे पहुंचता है और ३३ वर्ष की उम्र मे कांग्रेस मे प्रवेश करता है। इस तरह से हेरम कालेज मे घन्टे बजाने का काम करनेवाला लड़का जेम्स ए. गारफील्ड ४७ वर्ष मे संयुक्तराष्ट्र अमेरिका का राष्ट्र-पति हो जाता है।

नवयुवको! सबके लिए संसार मे स्थान है। सबके लिए प्रसिद्धि और ख्याति पाने के साधन है। गरीब होते हुए भी लोग जगत मे बड़े-बड़े लेखक हो गये, कवि हो गये, राष्ट्र-निर्माता हो गये, लक्ष्मीपति हो गये, चित्रकार हो गये। फिर तुम क्यों उदास बैठे भाग्य को कोसते हो? आगे बढ़ो और सफलता तुम्हारी राह देख रही है।

---

[३]

फुरसत की घड़ी

"क्या तुम्हे अपने जीवन मे प्रेम है ? तब समय को व्यर्थ नष्ट मत करो, क्योकि जीवन उसीसे बना है ।"

—फ्रैंकलिन।

"मैने समय को नष्ट किया और अब समय मुझे नष्ट कर रहा है ।

—शेक्सपियर

बड़ी देर तक बेंजमिन फ्रैंकलिन की दूकान के सामने घूमनेवाले एक आदमी ने अन्त मे पूछा :—

"इस किताब की क्या कीमत है ?"

क्लर्क ने उत्तर दिया—"एक डालर।"

"एक डालर ! क्या इससे कम नही ?"

"नहीं।"

खरीदनेवाले ने थोडी देर इधर-उधर देखने के बाद उससे पूछा—

"क्या मि० फ्रैंकलिन भीतर है ?

"हा, अभी काम मे लगे हुए है।"

"मैं जरा उनसे मिलना चाहता हूँ।"

मालिक बुलाये गये और खरीददार ने पूछा—"मि० फ्रैंकलिन, आप इस पुस्तक की कम से कम क्या क़ीमत लेंगे ?"

"सवा डालर।"

"सवा डालर! अभी तो आपका क्लर्क एक डालर कहता था।"

"ठीक है। लेकिन अपना काम छोडकर आने मे मेरा समय भी तो खर्च हुआ न ?"

खरीदार आश्चर्य मे पड गया और अपनी बातचीत को खत्म करने के विचार से उसने फिर पूछा—"अच्छा, अब इसकी कमसे कम कीमत बता दीजिए तो मैं लेलूं।"

"डेढ़ डालर।"

"डेढ डालर! वाह! अभी तो तुम सवा डालर ही कह रहे थे।"

"हा, मैंने वह कीमत उस समय कही थी। पर अब तो डेढ डालर होगा, और ज्यों-ज्यों आप देर करते जायेंगे किताब की कीमत बढती जायगी।"

ग्राहक ने जेब से पैसे निकालकर दे दिये और किताब लेकर घर का रास्ता लिया। उसे आज समय को धन अथवा विद्वत्ता मे परिवर्त्तित कर देनेवाले स्वामी से एक उत्तम शिक्षा मिल गई।

एल्ड हबरिट कहता है—"ये सब बातें जो मैंने करके दिखा दी है

अथवा जिन्हें कर दिखाने का मैं अभिलाषी हूँ, वे सब धीरे-धीरे धैर्य से और चिउंटी के समान सतत कार्य-दृढ़ता के द्वारा पूरी की गई है, अथवा की जावेगी। मैं एक घटना के बाद दूसरी घटना, एक विचार के बाद दूसरे विचार, के बल पर आगे बढ़ा हूं और यदि मैं कभी भी महत्वाकांक्षा से प्रेरित हो उठता हूं तो इसी आशा से कि अपने देश के नवयुवको के सामने एक ऐसे उदाहरण को उपस्थित करूं जिसके द्वारा वे समय के अमूल्य टुकड़ों को—जिन्हे क्षण कहते है—काम मे लाना सीखे।"

जो लोग संसार मे बढ़े है उन्होंने समय के मूल्य को समझा है। जब मनुष्य सोते थे तब एल हुबरिट काम करते थे, जब दूसरे ऐश-आराम मे मग्न थे तब वे सिर झुकाये अपने कार्य मे लगे रहते थे। पार्लमेन्ट मे बर्क का चकित करदेनेवाला भाषण सुनकर उसके भाई ने कहा था—"बड़े आश्चर्य की बात है कि 'नेड' ने कुटुम्ब की सारी प्रतिभा पर अपना ही अधिकार जमा लिया है। परन्तु मुझे याद आता है कि जब हमलोग खेला करते थे तब वह काम करता रहता था।"

दिन मित्रों के वेश मे हमारे सामने आते है और कुदरत की अमूल्य भेंट लाते है। अगर हम उनका उपयोग नहीं करेंगे तो वे चुपचाप चले जावेंगे।

प्रत्येक सुन्दर प्रभात सुन्दर चीजे लेकर उपस्थित होता है। पर यदि हमने कल के तथा परसों के प्रभात की कृपा से लाभ नहीं उठाया तो आज के प्रभात से लाभ उठाने की शक्ति क्षीण होती चली

जायगी। यदि यही रफ्तार जारी रही तो फिर हम इस शक्ति को बिलकुल ही खो बैठेंगे। किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है कि खोई हुई सम्पत्ति कमखर्ची और परिश्रम से प्राप्त की जा सकती है, भूला हुआ ज्ञान अध्ययन से प्राप्त हो सकता है, नष्ट किया हुआ स्वास्थ्य दवा और संयम से लौटाया जा सकता है, परन्तु नष्ट किया हुआ समय चला जाता है—हमेशा के लिए चला जाता है—वह स्मृति की एक चीज हो जाता है—अतीत की एक छायामात्र रह जाता है।

"अरे! अब भोजन करने मे दस-पाच ही मिनट रह गये हैं। भाई, अब कोई काम नहीं हो सकता।"—यह बात घर-घर मे सुनी जाती है। लोग यह कभी नही सोचते कि इन्हीं क्षणों के द्वारा, इन्ही पलों के द्वारा, भाग्यहीन कहलानेवाले बालकों ने दुनिया मे बड़े-बड़े काम किये है। अब भी यदि हम इन घण्टों को उपयोग मे ला सकें तो निश्चय ही सफलता हमारी होगी।

हेरेट वीचरस्टोव ने अपनी सर्वोत्तम रचना "टाम काका की कुटिया" को घर-गृहस्थी के झंझटों के बीच ही मे लिखा था। भोजन का इन्तजार करने मे जो समय बीत जाता था उसी समय में वीचर ने फ्राउड की रचना 'इंगलैंड' को पढ़ा था। जितने समय तक काफी उबलती थी उतने समय का प्रतिदिन उपयोग करके लाग-फेलो ने 'इनफरनो' नामक ग्रन्थ का अनुवाद कर डाला था।

कवि बर्न्स ने खेतों पर काम करते समय अपनी अमर कीर्ति से साहित्य को अलंकृत किया। 'पेरेडाइज लास्ट' का लेखक महाकवि मिल्टन अंग्रेजी "कामन वेल्थ" और "प्रोटेक्टरेट" का मंत्री था। उसने

अपने कामकाज के समय के क्षणों का उपयोग करके इस अमर महा-काव्य की रचना की। जान स्टुअर्ट मिल ने अपना सर्वोत्तम ग्रंथ ईस्ट-इन्डिया हाउस के क्लर्क के जीवन मे लिखा था। गेलीलियो डाक्टरी करता था परन्तु उसके बचे हुये क्षणों के उपयोग के आविष्कारों से संसार ने कितना लाभ उठाया ? ग्लेडस्टन सरीखा प्रतिभाशाली व्यक्ति अपनी जेब मे एक छोटी-सी पुस्तक हमेशा लेकर निकलता था। उसे चिन्ता रहती थी कि कहीं कोई घड़ी व्यर्थ न चली जाय। तब हम-जैसे साधारण अवस्था के मनुष्यों को अपने अमूल्य समय को नष्ट होने से बचाने के लिए क्या न करना चाहिए ? एक-एक क्षण संचित करनेवाले इन लोगों का जीवन हम हजारों नवयुवकों और नवयुवतियों के जीवन का कितना उपहास कर रहा है ! बड़े-बड़े पुरुष समय के छोटे-छोटे टुकड़ो को बचाकर महान हो जाते है और अपनी असफलता पर आश्चर्य करनेवाले उन्हे योंही उड जाने देते है। उन्हे जीवन भर मे कभी भी समय का मूल्य मालूम नहीं होता।

माइकिल फेरेडे किताबों की जिल्द बाधा करता था। साथ ही अपने बचत के समय को वैज्ञानिक प्रयोग करने मे लगाया करता था। एक समय उसने अपने एक मित्र को लिखा--"मुझे समय की आवश्यकता है। क्या ही अच्छा होता यदि मैं किसी सस्ते भाव पर वर्तमान महाशयों को बचत के घन्टे—नहीं, दिनों को खरीद सकता।"

प्रतिदिन एक घन्टे काम सीखने से अज्ञान व्यक्ति होशियार हो सकता है। एक घन्टा प्रतिदिन पैसा कमाने से मनुष्य दो दैनिक, दो साप्ताहिक, दो मासिक और लगभग एक दर्जन पुस्तकों के खरीदने

लायक धन पैदा कर सकता है। एक घन्टे मे प्रतिदिन २० पृष्ठ पढ़नेवाला लड़का एक वर्ष मे कई हजार पृष्ठ तथा लगभग १८ ग्रन्थों को पढ़ सकता है। एक घन्टे रोज के उपयोग से साधारण आदमी महान हो सकते है। इस प्रकार दिन का एक घण्टा एक अप्रसिद्ध व्यक्ति को प्रसिद्ध और एक निरुपयोगी पुरुष को अपने देश और जाति का परमोपयोगी आदमी बना डालता है। जब एक घण्टे की इतनी विशेषता है, जब एक घण्टे में जीवन के उलट-फेर करने की इतनी प्रधान शक्ति है, तब दो-चार-छै घण्टे प्रतिदिन खो देनेवाले नवयुवक और नवयुवतियो के जीवन संसार मे क्या करके न दिखा देंगे, यदि वे व्यर्थ जानेवाले समय की रक्षा कर उसका सदुपयोग करें ?

हरेक नवयुवक को अपने फुरसत के समय को किसी अच्छे काम मे लगाना चाहिए। उसे आनन्द मे परिवर्त्तित कर देना चाहिए। यह काम भले ही उनके प्रधान काम से सम्बन्ध न रखता हो—उन्हे चाहिए कि वे अपने हृदय को केवल उसीमे लगादें।

कुछ लड़के समय के इधर-उधर के टुकड़ों को बचाकर अच्छी शिक्षा प्राप्त कर लेते है, दूसरे उन्हे खोकर हाथ मींजा करते है। ऐसा कौन नवयुवक है, जो आत्म-सुधार के लिए प्रतिदिन एक घण्टा भी निकाल नहीं सकता ? चार्ल्स फ्रास्ट नामक चमार एक घण्टे रोज अध्ययन करके संयुक्तराष्ट्र का सबसे प्रधान गणित का आचार्य हो गया। जान हन्टर और नेपोलियन केवल चार घण्टे सोते थे। थामस एडीसन केवल तीन घण्टे सोता था।

हण्टर की इकट्ठी की हुई सामग्री को व्यवस्थित रूप मे लाने के

लिए प्रोफेसर ओवन को १० बरस लगे। वह २० घण्टे रोज काम करते थे। हन्टर ने अपने उद्योग से हजारो नमूने इकट्ठे किये थे। भला इससे अधिक उद्योगी उदाहरण किसके जीवन मे मिल सकता है ?

जान एडम्स का समय जब कोई नष्ट करता था तो उसे बडा बुरा लगता था। इटली के एक विद्वान ने अपने कमरे के द्वार पर लिख रखा था—"जो व्यक्ति यहाँ रुकना चाहता है, वह मेरे काम मे मदद देवे।"

महान आदमी हमेशा ही समय के कंजूस होते है। सिसेरो कहता था—"जिस समय को अन्य व्यक्ति जनता के दिखावे तथा मानसिक और शारीरिक आराम के लिए खर्च कर देते है उसे ही मै तत्त्वज्ञान के अध्ययन मे लगाता हूँ।" चान्सलर का काम करने के बाद के समय का उपयोग करके लार्ड बेकन ने कीर्त्ति प्राप्त की। एक बड़े राजनीतिज्ञ से भेट करते समय महाकवि गेटे को अकस्मात एक विचार सूझा। उन्होंने थोडी देर की क्षमा मागी और बगल के कमरे मे जाकर उसे लिख डाला। सर हेम्फ्री डेवी ने अपने समय को काम मे लाकर बड़े-बड़े आविष्कार कर दिखाये। पोप हमेशा रात्रि को उठता था और अपने उन विचारों को लिख लेता था जो उसके कामकाज मे लगे हुए दिवस के जीवन मे नही आ पाते थे। ग्रोट ने अपनी 'ग्रीस का इतिहास' नामक अद्वितीय रचना अपने बचे हुए समय मे लिखी थी।

जार्ज स्टीफनसन फुरसत के समय को सुवर्ण समझता था। उसे वह व्यर्थ नहीं जाने देता था। माजार्ट प्रत्येक मिनट मे कुछ न कुछ

आत्म-सुधार अवश्य करता था। वह इतनी देर तक काम करता रहता था कि सोना भी भूल जाता था। कभी अपने कार्य को समाप्त करने के लिए दो-दो दिन और रात लिखता रहता था। उसने अपनी मृत्यु-शैया पर अपनी प्रसिद्ध रचना 'रेक्यूयम' को लिखा था।

सीजर कहा करता था—"भयंकर दुश्मनों के बीच में भी मुझे अपने तम्बू के नीचे अन्य कई बातों को सोचने का अवसर मिल जाता था।" एक बार उसका जहाज डूब गया। वह अपने साथ एक पुस्तक की हस्तलिखित प्रति ले गया था। जब जहाज डूब रहा था तब वह अपना ग्रन्थ देखने में लगा हुआ था।

डाक्टर मारसन गुड लन्दन में एक रोगी को देखने आ रहे थे। रास्ते में उन्होंने ल्यूक्रेशियस का अनुवाद कर डाला। डाक्टर डरबन ने अपनी बहुत-सी रचनाओं को कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों पर लिखा था। वह अपने विचारों को उसी समय लिख लेता था। हेनरी किरक ह्वाइट ने ग्रीक भाषा को दफ्तर से आने-जाने के समय में पढ़ा था। डाक्टर बरने ने इटालियन और फ्रेंच भाषा को घोड़े की पीठ पर सीखा था।

वर्तमान काल एक कच्ची सामग्री है, जिसके द्वारा हम अपनी इच्छित वस्तुओं को बना सकते हैं। भूलकर भी भूतकाल और भविष्य की बातों का स्वप्न देखना अच्छा नहीं। अपने सामने की घड़ियों को पकड़ लो और उनमें कुछ न कुछ पाठ अवश्य ही सीख लो। सच पूछा जावे तो किसी घण्टे के मूल्य को समझनेवाला और उसका उपयोग अच्छी तरह से करनेवाला अभी तक संसार में पैदा नहीं

हुआ है। किसीने कहा है—"ईश्वर एक बार एक ही क्षण को देता है और दूसरे क्षण को देने के पहले पहलेवाले क्षण को छीन लेता है।"

प्रेसीडेण्ट क्वीनसे हमेशा सोने को जाने के पहिले दूसरे दिन के कार्यों को सूची बना लेता था। इस तरह से समय-विभाग कर लेने से समय नष्ट होने नहीं पाता और हृदय को भी बड़ी शान्ति रहती है, संध्या को अपने किये हुए कार्य को देखकर बड़ा हर्ष होता है। यह प्रणाली विद्यार्थी, लेखक, नेता सभी के बड़े काम की है।

काम में लगे नवयुवक के लिए कोई भी चिन्तित नहीं रहता। वह कुछ न कुछ कर ही दिखावेगा। परन्तु वह किस स्थान पर अपने दोपहर का भोजन करता है? अपने निवासस्थान को छोड़कर वह रात को कहाँ जाता है? ब्याल् करने के बाद वह क्या करता है? रविवार और छुट्टी के दिन वह कहाँ व्यतीत करता है? अपने फुरसत के समय को जिस तरह वह बिताता है उसीसे उसका आचरण प्रकट होजाता है। अधिकांश नवयुवक ब्यालू के बाद के समय को सोने में लगाकर अपने जीवन का नाश कर डालते हैं। ख्याति और कीर्त्ति पर चलनेवाले अपने संध्या के समय को अध्ययन करने और काम करने में व्यतीत करते हैं। वे सन्ध्या को ऐसे व्यक्तियों के संसर्ग में व्यतीत करते हैं जो उनके सुधार में सहायक हो सकें। प्रत्येक सन्ध्या एक नवयुवक के जीवन-मरण का प्रश्न है। व्हीटियर की इन लकीरों में बड़ा ही गूढ़ रहस्य छिपा हुआ है:—

"आज के दिन हम अपने भविष्य को बनाते हैं, अपने भाग्य के

जाले को बुनते है। आज के दिन, आगे के समस्त समय के लिए हम पवित्रता अथवा पाप को चुनते है।"

समय ही द्रव्य है। हमे एक मिनट व्यर्थ नष्ट न करना चाहिए। द्रव्य का खोदेना समय खोने की बराबरी नही कर सकता। समय के नष्ट करने का अर्थ है शक्ति का नाश, सामर्थ्य का नाश और अपने आचरण का पतन। इसका मतलब है अवसरों को सदा के लिए खो देना।

एडवर्ड एवेरेट ने लिखा है—हर एक के हाथ मे अपनेको उपयोगी, कीर्त्तिवान और सुखी बनाने के साधन है। बुद्धि-सुधार के द्वारा, गृद्धदृष्टि से सुधार के प्रत्येक अवसर की ताक मे रहकर, विकारों को तुच्छ समझकर, इन्द्रिय-जनित सुखों को घृणा की दृष्टि से देखकर, उपरोक्त बाते हो सकती है।

---

[४]

प्रतिकूल परिस्थिति

"जीवन का सबसे बड़ा पुरस्कार, जीवन की सबसे बड़ी दौलत, है—किसी एक बात की ओर प्रवृत्ति लेकर जन्म लेना। इसीकी पूर्ति करने मे मनुष्य को सुख मिलता है।"

—इमरसन

"मै एक आवाज सुन रहा हूँ, वह आप नही सुन सकते। वह मुझे कह रही है—'ठहरो मत।' मुझे कोई हाथ देकर बुला रहा है, परन्तु आप उस हाथ को नही देख सकते।"

—टिंकल

राबर्ट वाटर्स का कथन है कि एक न एक दिन ऐसा अवश्य ही आता है जब प्रतिभावान मनुष्य किसी एक जबरदस्त शक्ति के द्वारा विधाता के लिखे हुए कार्य की ओर खिच जाता है। चाहे

कठिनाइयों के बादल घिरे हों, और भविष्य कितना ही निराशा-जनक दीखता हो, वह तो आनन्द से और दिल लगाकर केवल उसी एक काम को करेगा। जब उसके प्रयत्न विफल होते है, वह गरीब हो जाता है, आवश्यकतायें उसकी ओर ताकती है, वह भूखों मरने लगता है, लोग उसे त्याग देते है, तब वह भले ही लम्बी सांस छोडते हुए कहने लगे—"बडी गलती हुई। मै फलॉं कार्य करता तो मेरी ऐसी हालत न होती।" परन्तु इस प्रकार के विचार क्षणिक रहा करते है। अन्त मे स्वाभाविक भावना की ही विजय होती है।

तुम मे पलने मे पड़े हुए उस छोटे-से खिलोने के भाग्य मे लिखे हुए विधाता के लेख को पढने की सामर्थ्य नही है। क्या तुम दिशा-सूचक यंत्र की सुई मे उत्तरीय ध्रुव को देख सकते हो ? ईश्वर ने उसके जीवन की सुई को इस तरह से बनाया है कि वह अपने भाग्य के तारे की तरफ देखती रहती है। तुम भले ही उसे कृत्रिम सलाह से अथवा जबरदस्ती की शिक्षा से कला, कानून डाक्टरी आदि अपने इच्छा के कार्यो के तारो की ओर झुकाने का प्रयत्न कर उसके अमूल्य वर्षों को नष्ट कर दो, परन्तु जब उसे स्वतंत्रता मिलेगी तब वह अपने स्थान पर लौट आवेगी और अपने भाग्य के तारे की ओर ही अपनी दृष्टि रखेगी।

सभ्यता उस समय अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुँच जावेगी जब प्रत्येक व्यक्ति अपने उचित काम को चुन लिया करेगा। जबतक मनुष्य को अपना सच्चा स्थान नहीं मिलता तबतक वह आदर्श रूप मे सफल नहीं हो सकता।

किसी पिता का अपने पुत्र को अपनासा ही बनाने का प्रयत्न करना एक बड़ा भारी स्वार्थ है। प्रकृति एक ही जैसे दो व्यक्ति कभी नहीं बनाती। प्रत्येक जन्म में वह अपने ढाचे को बदल डालती है। वही जादूमय मिश्रण दूसरी बार काम में नहीं लाया जाता।

फ्रेडरिक को गाली दी जाती थी, क्योंकि उसे कला और संगीत से बड़ा प्रेम था। वह सैनिक शिक्षा से घृणा करता था। उसके पिता इन बातों को पसन्द नहीं करते थे। कहते हैं कि एक बार उन्होंने अपने पुत्र को मार डालने तकका विचार किया, परन्तु स्वयं उनकी मृत्यु से फ्रेडरिक २८ बरस की उम्र में सिंहासन पर बैठ गया। इसी संगीत और कलाप्रेमी लड़के ने प्रशिया को यूरोप का सब से अधिक प्रतिभाशाली राष्ट्र बना दिया।

गेलीलियो का पिता उसे डाक्टर बनाना चाहता था और जब उसे शरीर-शास्त्र की पुस्तकें पढ़ने पर बाध्य करता था तब वह उनके नीचे गणित की पुस्तकें छिपाकर पढ़ता था और चोरी से कठिन-से-कठिन सवालों को हल किया करता था। आठरह बरस की उम्र में उसने गिरजाघर में पेण्डुलम के सिद्धान्त का आविष्कार किया। उसने दूरबीन और खुर्दबीन ढूंढकर मनुष्य-जाति के ज्ञान और शक्ति को कई गुना बढ़ा दिया।

माइकल इंजीलो के पिता ने घोषित कर दिया था कि मेरी किसी सन्तान को कला जैसा घृणित कार्य न सीखना चाहिए। उसने उसे दीवारों पर चित्र बनाने के लिए सजा भी दी, परन्तु उसके हृदय में जलनेवाली चित्रकला की ज्योति को उस महान चित्रकार ने प्रज्वलित

किया था और उसने उसे कभी सुख से नहीं सोने दिया, जबतक कि उसने सेण्टपीटर और सिसटाइन के गिरजे मे अपने अमर चित्रों को नहीं चित्रित कर लिया।

हेण्डल चाहता था कि उसका लडका वकील हो और इसी कारण वह उसे संगीत से दूर रखने का प्रयत्न करता था। परन्तु लड़के को कही से एक टूटा हुआ बाजा मिल गया, उसे ही लेकर वह घास के ढेर मे छिपकर बजाता था। एक दिन उसका पिता ड्यूक आफ वेसनफील्ड के यहाँ गया। लड़के ने बाजा बजाकर सबको चकित कर दिया और शीघ्र ही उसके बाजे को सुनने के लिए लोग इकट्ठे होने लगे। एक दिन ड्यूक भी सुननेवालो मे था, उसके आश्चर्य का ठिकाना नही था। लडका उसके सामने लाया गया। ड्यूक ने लडके को उत्साहित किया और पिता को लडके की प्रवृत्ति मे बाधा न डालने का निवेदन किया।

डेनियल डेफो व्यापारी रहा, सेक्रेटरी रहा, एक फैक्टरी का मैनेजर रहा, कमिश्नर अकाउण्टेण्ट रहा तथा कई छोटी-मोटी पुस्तकों का रचयिता रहा, तब कहीं अन्त मे उसने अपनी संसार-प्रसिद्ध 'राबिन्सन क्रूसो' नामक रचना की थी।

इरस्कीन ने समुद्री बेड़े के कार्य मे चार वर्ष व्यतीत किये और उन्नति की आशा से सेना मे भरती हो गया। इस काम को भी वह दो वर्ष तक करता रहा। एक दिन वह यो ही न्यायालय मे पहुचा। न्यायाधीश इसकी जान-पहिचान का था। उसने इसे अपने पास बिठलाया और कहा—"देखो, ये इंग्लैण्ड के बडे-बड़े कानूनदाँ लोग है।"

इरस्कीन के हृदय की स्वाभाविक चिनगारी भडक उठी। वह वहाँ बैठे-बैठे हर एक के व्याख्यान को सुनता रहा। अन्त मे निर्णय निकला कि 'मैं इन सबसे आगे निकल सकता हूं।' बस उसी दिन से उसने कानून के अध्ययन मे अपना मन लगाया और उस क्षेत्र मे वह अपने देश का एक प्रकाड विद्वान तथा वक्ता हो गया।

वह युवक सुखी है जो अपने मधुर स्वप्नों के कार्य को पा जाता है। यदि उससे वह काम भी अच्छी तरह नहीं करते बनता तो फिर वह कोई कार्य न कर सकेगा। प्रकृति मनुष्य के पीछे पडी ही रहती है, जबतक कि वह अपने विधाता के लिखे कार्य मे नही लग जाता। वह उसको आगे धकेलती है, प्रेरणा करती है, कष्ट देती और अन्त मे उसे ठिकाने पर पहुचा देती है। लोग भले ही कोशिश करें कि दिशा-सूचक यंत्र की सुई गुरु अथवा शुक्र के तारे की ओर देखने लगे, परन्तु ऐसा होना असम्भव है। उन्हे परीक्षा कर लेनी चाहिए तब कही अपने पुत्र को अपनी इच्छाओं की कठोर धार पर लिटाने का साहस करना चाहिए।

यदि किसी गाडी खीचनेवाले घोडे को घुडदौड मे शामिल करो तो कैसा मजाक होगा? इससे कहीं ज्यादा हास्यास्पद बात हमारे दिमागों के विचार है। हम समझते है कि कानून, डाक्टरी और प्रोफेसरी ये हो तीन बातें हमारे युवकों के जीवन के लिए निर्दिष्ट की गई है। और क्या दूसरे धन्धे नहीं है? किसी देश के ८० प्रतिशत ग्रेजुएटों का कानून सीखने के लिए भरती होना कितनी हंसी की बात है? कितने नवयुवक माता-पिता के धन्धे के बुरे नक्काल बनते है, कितने बुरे डाक्टर और वकील

होते हैं ? देश भर मे ऐसे नवयुवक भरे पड़े है. जो निराश है, नष्ट हो रहे है, बेकारी मे फँसे है, गरीब हो रहे है, भीख मागने पर भी भूखों मर रहे है, साहसहीन हो रहे है, तड़प रहे है, अगणित दुखों को भोग रहे है और ईश्वर से जीवन-मुक्ति की प्रार्थना कर रहे है। यह सब क्यों हो रहा है ? क्योंकि वे अपने सच्चे कार्य को नहीं जानते। केवल नौकरी ही उनका लक्ष्य हो रहा है।

दस वर्ष की आयु तक बहुत कम लड़कों मे प्रतिभा अथवा किसी एक कार्य की प्रवृत्ति ज्ञात होती है। बहुतसे लड़के ज्ञान विस्तृत हो जाने पर और थोड़ी-बहुत शिक्षा पा लेने पर भी अपने भाग्य की लिखावट का बीस वर्ष की आयु तक निर्णय नहीं कर पाते। प्रत्येक व्यक्ति अपने दिमाग के दरवाजे पर ठोकर लगाता है और अपने काम को जानना चाहता है, परन्तु उत्तर नहीं मिलता। इतने पर भी यह कोई कारण नही दीखता कि अपने हाथ के काम को ठीक रीति से न किया जावे। सेमुअल स्माइल्स एक ऐसे धन्धे मे शिक्षित किया गया था जो उसकी रुचि के प्रतिकूल था, परन्तु फिर भी वह उसमे बड़ी धीरता और योग्यता से भिड़ा रहा। इससे उसके लेखन-कला के कार्य में बड़ी सफलता मिली।

अपने प्रतिदिन के कार्य के साथ सचाई तथा ईमानदारी और स्वयं अपने तथा अपने माता-पिता, स्वामी एवं ईश्वर के साथ उत्तरदायित्व पूर्ण व्यवहार करते रहने से एक न एक दिन मुख्य कार्य मिल ही जावेगा।

गारफील्ड संयुक्तराष्ट्र का राष्ट्रपति कभी न हुआ होता, यदि वह एक अच्छा शिक्षक, जिम्मेदार सैनिक तथा कुशल राजनीतिज्ञ

न होता। इसी तरह न तो लिंकन और न ग्रान्ट ही बचपन से राजनीति के लिए प्रयत्न कर रहे थे। आदमी का काम है कि वह जिस परिस्थिति मे फेंक दिया गया है उसीमे अच्छी तरह से काम करे। अपनी सारी शक्ति लगा दे और मौका मिलते ही अपनी रुचि के मैदान की ओर दौड पड़े। कर्तव्य को अपना पथ-प्रदर्शक तारा बनाओ, तुम्हारी योग्यताओं और दृढता के अनुकूल सफलता तुम्हे अवश्य मिलेगी।

यदि हृदय और रुचि बढई के काम को पुकारते है तो बढई हो जाओ, यदि दवाई की ओर है तो डाक्टर हो जाओ। दृढ-निश्चय के साथ काम करने पर किसी भी नवयुवक के सामने सफलता के सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं है। यदि कोई रुचि ही नही मालूम पडती, तो अपने अवसरों और योग्यता के अनुकूल सावधानी से कार्य चुन लेना चाहिए। संसार मे सभी के लिए कुछ न कुछ कार्य है। सच्ची सफलता अपने काम को अच्छी तरह से करने मे ही है, और यदि शरीर मे उत्साह है तो भला इसे कौन नहीं कर सकता?

जो लोग पहले गधे, आलसी और मूर्ख कहलाते थे, वे ही जब सफल होगये तब संसार ने उनके साथ बडा ही दयापूर्ण व्यवहार किया। परन्तु जब वे निराशा और मिथ्या जंजालो के बीच मे खड़े होकर सिर उठाने के प्रयत्न कर रहे थे, तब संसार उनके मार्ग मे रोड़े अटकाता था, उनके सिर पर डंडा जमाकर सिर नीचे ही रखने को बाध्य करता था। प्रत्येक लड़के और लड़की को मौका दो उसे ठीक उत्साह दो, और उसकी भूलों के लिए उसका बिलकुल तिरस्कार करके

हृदय के नवअंकुर को जलाने का प्रयत्न मत करो। यदि तुम्हे उसमे उसकी मूर्खता दीखती है, बेवकूफी दीखती है, तो याद रखो कि बहुत से बकाम मूर्ख कहलानेवाले लड़के केवल अपने अनुकूल परिस्थिति मे नहीं है।

वेलिंगटन को उसकी माता मूर्ख कहती थी। वह ईटन स्कूल मे बड़ा ही आलसी और नासमझ विद्यार्थी था। उसने उस समय तक कोई प्रतिभायुक्त कार्य करके नहीं दिखाया और सेना मे काम करने के अयोग्य वह प्रतीत होता था। माता-पिता समझते थे कि जबतक पुत्र परिश्रम नही करेगा तबतक वह किसी तरह से असफलता से मुक्त नहीं हो सकता। परन्तु ४६ वर्ष की उम्र मे उसने ससार के उससे बड़े सेनापति को हरा दिया।

गोल्डस्मिथ शिक्षकों की हंसी-मजाक की सामग्री था। लोग उसे 'लकड़ी का चम्मच' कहकर चिढ़ाते थे। साहित्य की ओर उसकी रुचि थी। उससे डाक्टरी काम करते नही बनता था और यदि बन भी जाता तो फिर 'विकार आफ वेकफील्ड' अथवा 'डेजरटेड विलेज' की रचना किसने की होती? डाक्टर जानसन ने देखा कि यह युवक बड़ी विपत्ति मे है और कर्ज अधिक हो जाने के कारण कैदकर लिया जानेवाला है तो ऐसे समय मे उसने 'विकार आफ वेकफील्ड' की हस्तलिखित प्रति एक प्रकाशक को बिकवाकर उसका कर्ज चुका दिया। इस रचना ने गोल्डस्मिथ को प्रसिद्ध कर दिया। सर वालटर स्काट को शिक्षक 'मूढ़' कहा करते थे, परन्तु उस मूढ़ ने ही सैकड़ा शिक्षकों को शिक्षा देने और संसार के मनोरंजनार्थ अनेकों उपन्यास लिख डाले थे।

इन्हीं सब कारणों से कहा जाता है कि अपनी बुद्धि और प्रतिभा को समझनेवाला आदमी कभी भी दुनिया की हंसी-मजाक की सामग्री नहीं हो सकता और जो भले हैं वे अपनी प्रतिभा को समझने मे भूल भी नहीं कर सकते।

घबराने और व्यथित होने की आवश्यकता नहीं है। थोड़ी-सी विवेक-बुद्धि से काम लेकर संसार की यात्रा करना और अपने काय को ढूंढ निकालना कोई असम्भव काम नहीं है।

[५]

जीवन का उद्देश

"जो कुछ तुम्हारी वृत्ति है उसीमे लगे रहो, अपनी बुद्धि के मार्ग को मत छोडो। प्रकृति तुम्हे जो कुछ बनाना चाहती है वही बनो, तुम्हे विजय मिलेगी। इसके विपरीत यदि तुम और कुछ बनना चाहोगे तो कुछ भी न हो सकोगे।"

—सिडनी स्मिथ

"ससार का सचालन करने के लिए मै बधा हुआ नही हूँ, लेकिन ईश्वर ने मेरे लिए जो काम बनाया है उसे अपनी सारी ताकत लगाकर पूरा करने के लिए मै बधा हुआ हूँ।"

—जीन एन्जीलो

हरेक आदमी संसार मे कोई न कोई काम लेकर तो अवश्य ही पैदा होता है। जिस काम की ओर तुम्हारी रुचि हो वही काम तुम्हारा सच्चा काम है। तुम्हारे भाग्य का अधिकार तुम्हारे आचरण के

मार्ग से दिखाई देता है। यदि तुम्हे अपना उचित स्थान प्राप्त हो गय तो अपनी सारी मानसिक और शारीरिक ताकत उसको सफल बनाने मे लगादो, तुम्हे सफलता मिलेगी। क्या कारण है कि दो दूकान खोलनेवालों मे एक सफल होता है लेकिन दूसरा धन खोकर रह जाता है ? सफल होनेवाले की सच्ची प्रवृत्ति और योग्यता दूकान के कार्य की ओर थी लेकिन दूसरे ने केवल दूकान से होनेवाले लाभ को देखकर ही एक के दो रुपये बनाने की कोशिश की थी।

सम्भव हो सके तो ऐसा कार्य चुनना चाहिए जिसमे तुम अपने अनुभव और वृत्ति को सबसे अधिक परिमाण मे केन्द्रीभूत कर सको। ऐसा करने से न केवल तुम्हे अपने कार्य मे आनन्द ही आवेगा बल्कि उसमे तुम अपनी सब से अधिक योग्यता और बुद्धि लगा सकोगे- यही तुम्हारा सब से श्रेष्ठ मूलधन है।

अपनी रुचि की ओर ही बढ़ो। अपनी महत्वाकाक्षाओं के विरुद्ध तुम अधिक समय तक युद्ध नही कर सकते। माता-पिता, मित्रगण, दुर्भाग्य भले ही तुम्हारे हृदय की लालसा को रुचि-विरुद्ध कार्य करने या तुम्हे दबाने की कोशिश करे, परन्तु ज्वालामुखी के समान अन्दर की आग एक दिन भडक ही उठेगी। वह अपने इच्छित काम मे चमक उठेगी। जिस काम मे तुम्हारी रुचि नहीं है उसे तुम पूर्णता से नही कर सकते। प्रकृति अधूरे और भद्दे कामों को देखकर श्राप देती है, और उसका फल करनेवाले को भोगना पडता है।

फ्रेंकलिन का कहना है—"जिसके पास व्यवसाय है उसके पास एक रियासत है, जिसके पास धन्धा है उसके पास सम्मान और लाभ की

जगह है। अपने पैरों पर खड़े रहनेवाला घुटने टेकनेवाले से अच्छा है।" इस कथन मे कितनी सच्चाई है। अपनी हीनावस्था मे नौकरी के लिए ज्ञान देनेवालों को जानना चाहिए कि व्यवसाय नोकरी से कई दर्जे अच्छा है। उसके लिए क्षेत्र है। दिमाग की प्रवृत्ति और इच्छा यदि उस ओर हो तो जीवन सुखी हुए बिना नही रह सकता।

एक आदमी को बनाने के लिए दूसरी बातों की अपेक्षा उसका व्यवसाय अधिक उपयोगी है। इसमे उसके पुट्ठे कड़े होते है, शरीर मजबूत होता है, खून का प्रवाह तेज होता है, दिमाग शान्त हो जाता है, न्याय-बुद्धि शुद्ध हो जाती है, आविष्कारक प्रतिभा जागृत हो जाती है। उसकी आकाक्षा उठाती है, उसे मनुष्यत्व का ज्ञान होता है और वह उसे बतलाता है कि वह मनुष्य है, मनुष्य का कार्य उसे करना चाहिए और मनुष्य के भाग को ग्रहण करना चाहिए। मनुष्योचित व्यवसाय को न करनेवाला कभी नही समझ सकता कि वह मनुष्य है। बगैर काम का आदमी, आदमी नही है। काम करना मनुष्य-जीवन का उद्देश है। १५० पौंड हड्डी और मास मनुष्य नहीं है। हड्डी, मास और दिमाग अच्छी तरह जानते है कि मनुष्य का काम किस प्रकार किया जाता है? मनुष्योचित विचार कैसे सोचे जाते है?

कुछ लोग कहा करते है कि यदि कुछ काम न करना पडता तो जिन्दगी बड़े आराम से बीतती। लेकिन खाली पड़े रहना भले ही कुछ दिन अच्छा लगे परन्तु वह हमेशा आनन्द की बात नही हो सकती। पड़े रहने से दिमाग तो चुप नहीं बैठेगा, वह भले-बुरे विचारों का ताना-बाना बुनता ही रहेगा, कुछ न कुछ शैतानी चक्कर चलाता ही रहेगा।

वह एक ऐसी चक्की है जो चलती ही रहती है। यदि उसमें अनाज डाला गया तो वह उसे पीसकर आटा कर देगी और यदि कुछ न डाला जायगा तो खुद ही को पीस डालेगा। ऐसी हालत में धनी-गरीब छोटे-बड़े, सभी के जीवन की एक ही निश्चित धारा है, प्रकृति का एक ही नियम है—काम करना।

जीवन-संग्राम में विजय पाने की सबसे पहली विधि किसी काम को प्राप्त करना ही है। यदि कोई मुंह फलाये बैठा रहेगा तो आसमान से उसके मुह मे खाना टपक नहीं पड़ेगा। और फिर जो काम हाथ मे लिया है उसमे लगे रहना भी एक खास बात है। आज यहाँ और कल वहाँ करने से यहाँ और वहाँ दोनों ही से हाथ धो बैठना पड़ता है। साधारण अवस्थाओं मे, यदि किसी मनुष्य में पथ-प्रदर्शक क्रियात्मक विवेक-बुद्धि है तो इन दो बातों से उसे सफलता अवश्य मिल जावेगी।

कई लोग ऊंची जगह और बड़ी नौकरी की तलाश मे ही बैठे रहते है। छोटी से छोटी जगह से बढ़ना नहीं जानते। भाई, जिस जगह हो वहीं से बढ़ना सीखो। जो काम हाथ में लिया हो उसीको नवीनता से करो। उसमे ऐसी निपुणता ला दो जैसी पहले कोई न ला सका हो। अपने दूसरे साथी-कार्यकर्त्ताओं की अपेक्षा अधिक फुरतीले, साहसपूर्ण और नम्र बनो। अपने काम का खूब अध्ययन करलो, उसके करने की नई-नई विधियां निकाल लो। काम करने की कला का उद्देश केवल सन्तोष देना ही नहीं है, केवल अपनी जगह को भरना ही नहीं है, परन्तु आशा से अधिक अच्छा काम करके दिखा देना है, और इसका परिणाम अच्छा निकले बिना रह नहीं सकता।

कई युवक कहते हैं कि यदि हमे अमुक काम नहीं मिलेगा तो हम घर ही मे बैठे रहेंगे। भला यह भी कहीं की बुद्धिमानी है। घर बैठे-बैठे समय नष्ट करने से क्या लाभ? समय पैसा नहीं है, बल्कि वह तो जीवन है। शीघ्र से शीघ्र जो काम मिलता हो उसे ग्रहण कर लेना चाहिए। अपनी योग्यता और काम के दरजे पर ध्यान देना तो पतन का मार्ग है। यदि तुम उसी काम मे मनुष्यत्व को सच्चे ढंग से लगाओगे तो उस काम का भी मूल्य और महत्व बढ़ जायगा। एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति यदि बढ़ई के काम को करने लगे तो बढ़ई के धन्धे मे जीवन आ जायगा और नई-नई कल्पना की चीजें बनने लगेंगी।

ग्लैडस्टन कहा करते थे कि मनुष्य के शरीर अथवा दिमाग से काम लेने की भी सीमा है और वही आदमी बुद्धिमान है जो अपनी शक्तियों को ऐसे कामो मे खर्च नहीं करता जिनके लिए वह अयोग्य है।

इसी तरह कारलाइल ने भी लिखा है—"वह मनुष्य भाग्यशाली है जिसे अपना काम मिल गया है। किसी दूसरे सुख के लिए उसे अब इच्छा नहीं करनी चाहिए। जो उसे मिल गया है उसे ही वह करेगा।"

काम का चुनाव करते समय अपने हृदय से कभी मत पूछो कि कौन-सा व्यवसाय करके तुम प्रसिद्धि पा सकोगे या धन प्राप्त कर सकोगे। परन्तु उसी काम को चुनो जिसमे तुम अपनी सब मनुष्यता की शक्ति को लगा सकते हो और अपनेको ऊंचा बना सकते हो। तुम्हारे लिए न तो धन की आवश्यकता है, न प्रसिद्धि की और न कीर्त्ति की—तुम्हे केवल शक्ति की जरूरत है। मनुष्यत्व धन और कीर्ति से अच्छा होता है। आचरण किसी भी जीवन-व्यापार की

अपेक्षा अच्छा है। प्रत्येक इन्द्रिय को शिक्षित करना चाहिए, नहीं तो तुम्हारे कामों में कमी दिखाई देगी। हाथ को सुन्दर, मिहनती और मजबूत होने की, आखों को बारीक और सावधान निरीक्षण करने की, हृदय को कोमल, सच्चे और सहानुभूति पूर्ण होने को, स्मरण-शक्ति को शुद्ध, स्मृतिपूर्ण, समझने की योग्यता प्राप्त करने की शिक्षा देनी चाहिए। संसार नहीं चाहता कि तुम वकील, मन्त्री, डाक्टर, किसान, वैज्ञानिक अथवा व्यापारी हो जाओ। वह तुम्हारे काम को निर्धारित नहीं करता। वह तो केवल यही चाहता है कि जिस किसी काम मे तुम हाथ लगाओ उसपर तुम्हारा पूर्ण अधिकार रहे और उसमे तुम प्रवीणता प्राप्त करलो। यदि तुम अपने काम मे सफल हो जाओगे तो संसार तुम्हारी प्रशंसा करेगा और तुम्हारे लिए सब दरवाजे खुल जावेंगे। लेकिन याद रखो, ससार असफलता और अपूर्णता को बहुत बुरी नजर से देखता है।

फ्रान्स के प्रसिद्ध पुरुष रूसो ने कहा है कि "जो मनुष्य अपने कर्त्तव्य को अच्छी तरह से करने की शिक्षा पाचुका है वह मनुष्य से सम्बन्ध रखनेवाले सभी कामों को भली प्रकार करेगा। मुझे इसकी कोई फिक्र नहीं है कि मेरे शिष्य सेना, धर्म अथवा न्यायालय के लिए बनाये गये है। समाज से सम्बन्ध रखनेवाले किसी कार्य के पहले प्रकृति ने हमे तो मानव-जीवन से संबन्ध रखनेवाले कार्य करने के लिए बनाया है। यही मैं अपने शिष्य को सिखाऊंगा। जब उसे यह शिक्षा मिल चुकेगी तब वह न सिपाही होगा न पादरी और न वकील ही। वह पहले मनुष्य होगा, बाद मे और कुछ।"

जिस उद्देश्य के बारे में तुम्हे जरासा भी सन्देह है, जिसके न्याययुक्त और भले होने मे तुम्हे जरासा भी शक है, उसे एकदम छोड देना चाहिए। आजकल भूलों को सजाकर सुन्दर दिखाने की कला का बडी तेजी से प्रचार होरहा है। बड़े आश्चर्य की बात है कि तर्क के दबाव के द्वारा मनुष्य की भली और शुद्ध भावनायें दबा दी जाती है। एक बडे प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने कहा है कि मनुष्य अगर कुछ परिश्रम करे तो वह ऐसे-ऐसे तर्क निकाल सकता है कि जिसके द्वारा वह मनुष्य की सुशीलता और लज्जा को आसानी से भगा दे। अतएव जब किसीके सामने सन्देहजनक परन्तु आकर्षक भविष्य रखा जाता है तो बुरी-से-बुरी बातों को तर्क के द्वारा भली दिखाने का लालच होने की सम्भावना है। परन्तु इसमे कोई सन्देह नही कि जिस उद्देश मे दुराचार का जरासा भी कीटाणु है वह अवश्य विफल होगा।

इसमे कोई सन्देह नही कि प्रत्येक मनुष्य को जीवन मे किसी एक विशेष कार्य की ओर रुचि रहती है। उनमे से कुछ को हम प्रतिभावान् व्यक्ति कहते है—इसके चिन्ह उनके बचपन मे भी दिखाई देते है।

उसीको तुम अपना सच्चा स्थान कह सकते हो जिसके स्मरण-मात्र से तुम्हारी सब शक्तिया जागृत हो उठे, जिसे तुम्हारी प्रवृत्ति सहर्ष स्वीकार करती हो, जिसे छूने से तुम उत्साहित हो उठते हो। यदि दुर्भाग्य से अरुचिकर कार्य मे तुम फस गये हो, तो जितने शीघ्र हो सके उससे छुटकारा पाने की कोशिश करो।

यदि तुम्हारा व्यवसाय या कार्य निम्न श्रेणी का है, तो दूसरे

व्यक्तियों की अपेक्षा उससे अधिक मनुष्यत्व का उपयोग करके उसे ऊंचा उठालो। उसमे दिमाग, हृदय, शक्ति और मितव्ययता का समावेश करो। नवीनता से उसका विस्तार करो, परिश्रम और उद्योग से उसे बड़ा कर दो, उसका अध्ययन करो, उसकी बारीकियां को सीखलो, अपनी योग्यता को उसपर केन्द्रित करदो। याद रखो महान विजय उन्हीं लोगों के लिए सुरक्षित है जो एक उद्देश से काय करते है, जिनकी आत्मा का राज्य अभिन्न है। दूसरे का स्थान छीनने की अभिलाषा करने की अपेक्षा अपने स्थान को ही सुशोभित करना अच्छा है।

ऊंची-से-ऊंची चोटी पर और ऊंचे-से-ऊंचे शिखर पर पहुंचना हो तो अपने उद्योग की नीची-से-नीची सतह से ही काम शुरू करो। अपने काम से जिस बात का सबन्ध हो ऐसी किसी भी बात को व्यर्थ और निरुपयोगी मत समझो। उनका पूरा ज्ञान प्राप्त करो।

जिस तरह विवाहित जीवन को सुखी बनाने के लिए, उसे जीवन की कठोरताओं और आपत्तियों से लेजाने के लिए निर्मल अटूट प्रेम की आवश्यकता है, उसी तरह किसी व्यवसाय मे सफल होने के लिए उसके प्रेमी हुए बिना मार्ग में आनेवाली कठिनाइयों का वीरता से सामना नहीं हो सकता। जिस वस्तु से तुम्हे प्रेम हो जावेगा उसके लिए तुम आसानी से अपने प्राणों को निछावर करने को हमेशा तैयार रहोगे। जब प्राणों को तुच्छ समझकर तुम काम करोगे तो निःसन्देह बाधाओं पर विजयी हो जाओगे और अपने कार्य मे सफलता प्राप्त करोगे।

इस युग में मित्र और सिफारिशहीन युवकों को जीवन में सफल होने का मार्ग बतलाते हुए श्री० रसेल लिखते हैं कि सबसे पहला काम है एक काम को प्राप्त करना, दूसरा है अपना मुह बन्द रखना, तीसरा है अवलोकन करना, चौथा है विश्वासपात्र होना, पाचवा है मालिक को यह बतला देना कि हमारे विना तुम्हारा काम नही चल सकता, और छठा है नम्र होना। इन बातों पर ध्यान देने से किसी भी क्षेत्र में निराश नहीं होना पड़ेगा।

[६]

एकाग्रता

"यदि जीवन मे बुद्धिमानी की कोई बात है तो वह एकाग्रता है, और यदि कोई खराब बात तो वह है अपनी शक्तियो को बिखेर देना। बहुचिन्तता कैसी भी हो, इसमे क्या? वही चीज अच्छी है जो हमारे खिलवाड और भ्रम की चीजो को दूर कर देती है और हमे हृदय मे अपने काम को करने के लिए भेजती है।"

—इमरसन

"जो व्यक्ति जीवन मे केवल एक बात ढूढना है वह आशा कर सकता है कि जीवन समाप्त होने के पहिले उसे वह प्राप्त हो जावेगी।"

—थोएन मेरेडिथ

मन की दृढ इच्छा-शक्ति को किसी एक काम मे केन्द्रित कर देने को एकाग्रता कहते है। एकाग्रता पैदा होने पर संसार मे ऐसा कोई काम नहीं जो न हो सकता हो।

सफल और असफल मनुष्यों मे क्या अन्तर है ? क्या एक ने कम काम किया और दूसरे ने ज्यादा ? क्या यही दोनों के परिश्रमों के परिणामों का कारण है ? नहीं, बात कुछ और ही है। सफल व्यक्ति ने अपना कार्य बुद्धिमत्ता से किया, एकाग्रता से किया, उसमें अपने दिमाग को लगाया था। असफल व्यक्ति ने बोझा ढोया था। ऐसे लोग काम तो बहुत करते है, परिश्रम भी करते है, लेकिन उसमें अपनी बुद्धि का उपयोग नही करते हैं। उनके काम और परिणाम को देखकर दया आती है। वे परिस्थितियो को पकडकर अवसरों का रूप नहीं देना जानते। उनमें असफलता को प्रशंसनीय सफलता में रूपान्तर करने की योग्यता नही रहती।

ऐसे व्यक्तियों से पूछो कि 'तुम्हारे जीवन का उद्देश्य क्या है ?' तो वे कह उठेंगे—"हमें नही मालूम। हम यह भी नही जानते कि हममे कौन-सा काम करने की योग्यता है। हम कठिन परिश्रम पर विश्वास करते है और हमने जीवन भर परिश्रम करने का ही तय किया है। हम जानते है कि कुछ-न-कुछ अवश्य हाथ लगेगा।" लेकिन इस प्रकार कुछ भी हाथ नहीं लग सकता। क्या कोई आदमी सोना और चादी की तह पाने भर के लिए सारे महाद्वीप को खोदना पसन्द करेगा ? किसी खास बात की खोज मे एकाग्र हुए बिना कुछ हाथ नही लगता। मिलेगा वही जैसा प्रयत्न होगा।

स्पष्ट उद्देशो की शक्ति का असर जीवन पर बडा गहरा होता है। जब कोई व्यक्ति बुद्धिवाद द्वारा अपनी जीवन-यात्रा शुरू करता है तब उसकी आवाज़, पोशाक, दृष्टि और गति उसीके अनुकूल हो जाती है।

जब कोई स्वावलम्बी पुरुष किसी भी हेतु से अपना कोई काम शुरू करते है तो उनके कपड़ों से और उनकी बोली से उनके कार्य की गति-विधि का पता चल जाता है। वे अपने पैरों पर खड़े रहते हैं आत्मसम्मान और आत्मसंतोष की चाल से चलते है। फटे कपड़े उन्हें छिपा नहीं सकते, रेशम की साड़ियाँ उनकी सुन्दरता को नहीं बढ़ा सकतीं, और न बीमारी और थकावट ही उन गुणों को खींच-कर फेंक सकती है।

एक कहावत है, जो नाविक अपनी यात्रा के अन्तिम बन्दरगाह को नहीं जानता उसके अनुकूल हवा कभी नहीं बहती।

कारलाइल कहता है कि सबसे कमजोर प्राणी अपनी शक्तियों को एक चीज पर एकाग्र करके कुछ-न-कुछ कर सकता है। इसके विपरीत सबसे शक्तिशाली उन शक्तियों को बहुतसी बातों मे फैलाकर, हरेक काम मे असफल हो सकता है। लगातार गिरनेवाली बूंद से कठोर से कठोर चट्टान मे छेद हो जाता है परन्तु शीघ्रगामी पानी का प्रवाह भयंकर आवाज करता हुआ निकल जाता है, उसका कोई चिन्ह भी पीछे नहीं रह जाता।

एक बुद्धिमान शिक्षक कहता है कि युवावस्था में मैं सोचा करता था कि बादलों की गरज मृत्यु का कारण होती होगी, परन्तु बड़ा होने पर मुझे पता चला कि मृत्यु का कारण बादलों का गरजना नहीं पर बिजली है। बस उसी दिन से मैंने गरजना कम कर दिया और चमकना शुरू कर दिया।

सब शक्तियों को किसी एक काम मे लगा देने से समय बीतते

दूर नहीं मालूम पड़ती। सिडनी स्मिथ कहते है कि सबसे मूल्यवान अध्ययन तो वही कहलाता है कि पढने में इतने निमग्न हो जाओ कि भोजन करने का समय निश्चित समय से दो घंटे पहले आ जाय। अपने पाठ्य ग्रन्थ के आगे संसार की सब बातों को भूल जाना ही एकाग्रता है।

पुस्तक पढते समय तुम्हारी आँखों के सामने सारा चित्र खिंच जाने दो। तल्लीनता और एकाग्रता तुम्हे वर्तमान बाह्य आकर्षणों से दूर कर देगी और यदि तुम्हारा मित्र भी एक बार तुम्हारे पास खड़ा रहे तो भी तुम्हे उसकी उपस्थिति का ज्ञान न होगा।

प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक चार्ल्स डिकिन्स कहा करता था कि ध्यान एक उपयोगी, सुरक्षित, निश्चित लाभदायी और प्राप्त करने-योग्य गुण है। मै तुम्हे सचमुच विश्वास दिलाता हूं कि मेरे आविष्कारों या कल्पनाओं ने मेरी ऐसी मदद कभी न की होती यदि मुझमे साधारण, नम्र, दृढ रूप से ध्यान देने की आदत न होती। हमेशा पूर्ण आदमी बनने की कोशिश करनी चाहिए। चाहे सुलेखक बनकर देश की विचारधारा मे क्रान्ति उत्पन्न कर दीजिए, चाहे अच्छे खिलाडी होकर प्रतिद्वन्द्वियों को हरा दीजिए, चाहे गायक होकर संसार को मोह लीजिए। कुछ भी कीजिए, परन्तु उसमे अपने शरीर और मन को मिला दीजिए। आप और वह एक हो जाइए। अपने उद्देश के साथ खिलवाड मत कीजिए।

चार्ल्स किंगस्ले ने कहा भी है—"जब मैं किसी काम मे लगता हू तो उस समय संसार की और कोई बात मेरे सामने नहीं रहती।

यही उद्योगी पुरुषों की कुंजी है, परन्तु इसे लोग अपने मनोरंजन के समय मे भी साथ नहीं रख सकते ।"

"मेरा कर्ममय जीवन देखकर बहुत-से आदमी मुझसे पूछते—'आप इतनी किताबों को लिखने का समय कब पाते है ? संसार का इतना काम आपसे कैसे होता है ?' मेरे जवाब को सुनकर वे आश्चर्य मे पड गये । मैने कहा—'मैं कभी कोई काम बहुतसा नहीं करता, इसीलिए इतना कर पाता हूं । यदि मनुष्य कोई काम करना चाहता है तो उसे थकावट से बचना चाहिए । यदि वह आज बहुत काम करेगा तो कल वह बहुत कम काम कर पायगा । कालेज छोड़ने के बाद जब मैंने सच्चे दिल से अध्ययन करना शुरू किया तब-से आजतक मैंने बहुतसे ग्रन्थों को पढ डाला, बहुत यात्रा की, और बहुत-कुछ देखा । राजनीति मे भाग लिया और जीवन की अन्य बातो मे भी भाग लिया । इस सबके अतिरिक्त मैंने ६० ग्रन्थों की रचना की । कुछ के लिए विशेष अध्ययन करना पड़ा । क्या तुम बतला सकते हो कि लिखने और पढ़ने मे मैंने कितना समय लगाया होगा ? तीन घंटे से अधिक मैंने कभी इसमे ख़र्च नहीं किये, और जब पार्लमेन्ट का अधिवेशन रहता था उस समय तो ये तीन घन्टे भी नहीं मिलते थे, परन्तु इन तीन घन्टों मे मेरा सारा ध्यान मेरे सामने के काम मे रहता था ।" यह थी एडवर्ड बुलवर लिटन के जीवन की महत्ता ।

एस० डी० कालरिज के दिमाग मे विचित्र शक्ति थीं, परन्तु उसके सामने निश्चित उद्देश नहीं था । वह बहुचित्तता के वायु-मंडल मे रहता था । इसी वायुमंडल ने उसकी शक्ति को खा लिया,

उसे चूस डाला और उसके जीवन को दुःखमय और असफलतामय बना दिया। सपनों में उसका जीवन बीतता था और कल्पनाओं ने उसकी मृत्यु-शय्या तैयार की। रात-दिन उसके नये-नये मसविदे बना करते थे, रोज ही नया निश्चय आकर खड़ा होजाता था। बहुत दिन-तक यही हाल रहा। वह कुछ-न-कुछ करना चाहता था,परन्तु उसने कुछ नहीं किया। एक दिन वह इस संसार से बिदा होगया। उसके कमरे के कागज-पत्रों की खोज करने से पता चला कि दर्शन और मनोविज्ञान पर लगभग ४० हजार निबंध उसने लिखे थे, लेकिन सब अधूरे रखे थे। उसने एक को भी पूरा नहीं किया। एक को शुरू करता कि कुछ समय बाद दूसरे विषय पर लिखने की उसकी इच्छा होती थी। इसी डावाडोल स्थिति में उसने एकाग्रता की शक्ति के मूल्य को न समझ पाया और संसार उसके ज्ञान से लाभ उठाने से वंचित रह गया।

एडम्स कहा करते थे कि लार्ड ब्रोम केनिंग के समान ही बहुत प्रतिभावान व्यक्ति थे। यद्यपि उन्होंने कानून के पेशे में लार्ड चान्सलरशिप प्राप्त करली थी, वैज्ञानिक खोजों के कारण प्रशंसा प्राप्त की थी, फिर भी उनका जीवन असफल था। वे सब-कुछ थे परन्तु कभी एक कार्य में न टिक सके। इतनी योग्यता होने पर भी इतिहास अथवा साहित्य में उनका कोई चिरस्थायी स्थान न रह सका। उनकी कीर्ति उन्हींके जीवन में समाप्त होने लगी थी।

मिस मारटिनो उनके जीवन की एक घटना का वर्णन करती है—"एक दिन हमलोग उनके घर पर थे। एक चित्रकार ने सब लोगों के साथ उनके महल का चित्र लेना चाहा। लार्ड महोदय से

निवेदन किया कि आप पाच सेकन्ड तक बिना हिले-डुले बैठे रहिएगा। उन्होंने स्वीकार तो कर लिया परन्तु वे हिल गये। फलतः चित्र मे धब्बा पड गया।"

इसमे एक बड़े महत्व की बात है। अपनी शताब्दी मे वह बड़े भारी व्यक्ति होगये होते परन्तु उनमे स्थिरता नही थी। जहाँ जाते वहाँ धब्बा पड़ा ही करता था। ऐसे कितने ही जीवन है जिनपर एकाग्रता और स्थिरता की कमी के कारण धब्बे पड जाया करते है।

नौकरी की तलाश मे घूमनेवाले नवयुवकों से पाश्चात्य देशों मे यह नहीं पूछा जाता कि 'तुमने किन-किन स्कूलों व कालेजों मे शिक्षा पाई है ? तुम्हारे बाप-दादा कौन थे ?' उनसे केवल एक प्रश्न पूछा जाता है, कि तुम क्या कर सकते हो ?

वैज्ञानिक लोगों का कहना है कि एक एकड भूमि की घास मे इतनी शक्ति फैली हुई होती है कि उसके द्वारा ससार की सारी मोटरों और चक्कियों का संचालन किया जा सकता है। केवल उस शक्ति को एक भाफ के इंजन के पिस्टन रॉड पर एकाग्र करने की आवश्यकता है। परन्तु वह आराम से छिन्न-भिन्न अवस्था मे पडी हुई है। अत. विज्ञान और उपयोगिता की दृष्टि से वह किसी काम की नही है। इसी तरह ऐसे हजारों मनुष्य है जो ज्ञानी है, उनमे शक्ति भरी हुई है, परन्तु वे उसे एकत्र करके किसी निश्चित स्थान पर लाने मे असमर्थ है, इसी कारण उन्हे हमेशा विफल होना पडता है। शक्तियों को बखेर देने से शक्ति का अपव्यय ही नही होता बल्कि शीघ्र कार्य करने का उत्साह भी नष्ट हो जाता है।

केवल कल्पना और धुन पर ही कार्य करना कभी अच्छा नहीं होता। जो-कुछ करना हो उसका मसविदा तैयार कर लेना चाहिए। फिर उसीके अनुसार अपने कदमों को साहस और स्थिरता से बढ़ाते जाना चाहिए। हमारे विद्यार्थी आखिर करते क्या है ? उनका जीवन रोते हुए क्यों जाता है ? इसलिए कि उनका कोई उद्देश नहीं रहता। वे ऐसी पुस्तकों को पढते हैं जो उनके वर्तमान कार्य से सम्बन्ध नहीं रखतीं, पर ऊपर से घमण्ड करते है कि आगे चलकर काम आवेगी। जो हो रहा है उसपर ध्यान न देकर भविष्य की किसी मधुर आशा पर वर्तमान को कंटकमय बना लेना बड़ी भूल है।

नवयुवकों को हमेशा सिखाया जाता है कि अपने उद्देश्यों को खूब ऊचा रखो, परन्तु उन्हे यह कोई नही बतलाता कि जिस निशाने को मार सकते हो उसीको उद्देश्य बनाओ। आकाश की ओर मुह करके इस आशा से तीर छोड़ना कि वह वृक्ष की चोटी को पार कर जायगा केवल पागलों का ही काम है। धनुष मे छूटा हुआ बाण वायुमंडल मे यहाँ-वहाँ नहीं घूमता, वह अपने चारों ओर नही देखता फिरता। वह सीधा उठता है, उसका लक्ष्य एक ही रहता है, उसीको जाकर वह छेदता है। कुतुबनुमा की सुई की नोक आकाश मे चमकनेवाले सभी तारो की ओर नहीं झुकती। वह केवल एक प्रकाश की ओर ही ताकती है। उसे कौन अपनी तरफ खींचने की कोशिश नहीं करता ? सूर्य उसे चकाचौंध करता है, पुच्छल-तारे उसे मार्ग दिखाते है, छोटे-छोटे तारागण उसकी तरफ देखकर झिलमिल-झिलमिल चमकते हे और उसकी प्रीति के भागी होना चाहते है। परन्तु

अपने उद्देश्य की प्यारी, अपनी वृत्ति की सच्ची, सुई भूलकर भी दूसरे की ओर नहीं देखती। सूर्य का प्रकाश होता है, तूफान उठते हैं—सब कुछ होता है, परन्तु उसका मुँह तो ध्रुवतारे की ओर ही रहता है। इसी तरह हमारे जीवन के मार्ग मे दूसरे सकड़ों प्रकाश हमे अपने रास्ते से भटका देने के लिए चमकेंगे—हमे अपने कर्त्तव्य और सत्य से डिगा देने का प्रयत्न करेंगे, परन्तु अपने उद्देश्य की सुई को आशा के ध्रुवतारे की ओर से कभी न हटने दो।

---

[७]

समय की पाबन्दी

"दौड़ना व्यर्थ है। मुख्य बात तो समय पर निकलना है।"

—लाफ़ॉन्टेन

"हमेशा हमारे भाग्य के धागों को कौन देख सकते हैं? क्षणभर के लिए हितकारी अवसर आता है, हम उसे खोदेते हैं और महीनों तथा वर्षों का नाश हो जाता है।

"'धीरे-धीरे' के रास्ते पर चलकर मनुष्य 'कभी नहीं' के मुकाम पर पहुँचता है।"

—कारलाइल

'आज का दिन घूमने में खोदो—कल भी यही हालत होगी, और फिर अधिक सुस्ती आवेगी।

—शेक्सपियर

पुराने समय में जब रेल-तार आदि नहीं थे उस समय चिट्ठी-पत्री, सरकारी डाक आदि ले जाने के लिए डाकिये रहा करते थे। उनको बतला दिया जाता था कि तुम यदि रास्ते में ठहरोगे और देरी

से पत्र पहुंचाओगे तो मृत्यु-दण्ड पाओगे। इस प्रकार उनको समय नष्ट करने का परिणाम भोगना पड़ता था।

जिस कार्य को करने में पुराने समय मे बहुत समय लग जाता था, रास्ते की भयंकर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, वेही अब कुछ घन्टों मे हो जाता है। जो बात आज हम एक घन्टे मे कर सकते है उसे हमारे पूर्वज २० दिन मे भी नहीं कर पाते थे। परन्तु इतना होने पर भी हम अपने पूर्वजों से गये-बीते है। हमने इस वैज्ञानिक सभ्यता से क्या लाभ उठाया ? कंजूस को दस रुपये मिले तो भी कुछ लाभ नहीं, और हजार मिले तो भी वैसा ही है। वह उन्हे सन्दूक मे बन्द कर नष्ट किये बिना नहीं रहेगा यही हालत हमारी है। अब समय अधिक मिलने लगा तो उसका व्यर्थ का प्रयोग भी कमा ही बढ गया।

देरी करने का भयकर परिणाम होता है। सीजर ने राजसभा मे जाकर एक खबर पढने मे देरी की और अपनी जान खो बैठा। कर्नल राहल ताश खेल रहा था। एक नौकर ने वाशिंगटन की सेना के रवाना होने का सूचना-पत्र उसे लाकर दिया। बिना पढे ही उसने उसे जेब मे रख लिया और ताश खेलने मे लगा रहा। खेल समाप्त होने पर उसने अपने आदमियों को सामना करने के लिए तैयार किया। लेकिन वे कैद कर लिये गये और तलवार के घाट उतार दिये गये। केवल कुछ मिनटों की देरी मे वह अपनी इज्जत, स्वतंत्रता और जीवन खो बैठा।

प्रत्येक के जीवन मे कुछ ऐसी घडिया आती है जिनपर भाग्य

ः बनना और बिगडना निर्भर रहता है। यदि मन जरा भी हिच-किचाया या डरा तो सब-कुछ चला जाता है।

जब मनुष्य का एक काम समाप्त हो जावे तो उसके बाद उसे दूसरे मे लग जाना चाहिए। प्रायः देखा जाता है कि एक काम समाप्त होने पर लोग विश्राम करने लगते है। वह विश्राम क्या है? आलस्य-भरी शराब का प्याला है। उस विश्राम मे अपने पूर्वसंचित समय के मूल्य को वे खो बठते हैं। उस विश्राम मे उन्हे फिर वर्तमान और भविष्य का धुधला प्रकाश भी नहीं दीखता। अतएव प्राकृतिक विश्राम के सिवा मनुष्य-जीवन मे विश्राम के द्वारा समय नष्ट करने की आवश्यकता नहीं है।

रस्किन का कहना है कि जवानी का सारा जीवन एक प्रकार की रचना, एक प्रकार के सुधार और शिक्षण का है। एक भी घन्टा ऐसा नहीं है जो भाग्य के विधान के लिए उपयोगी न हो। ऐसी एक भी घडी नहीं जाती जिसका निश्चित किया हुआ कार्य फिर से किया जा सकता हो। क्या लोहा ठण्डा हो जाने पर घन पटकने मे लाभ हो सकता है?

नेपोलियन सर्वोत्कृष्ट अनुकूल समय पर बडा ही ध्यान देता था। उसे अपने हाथ से न जाने देकर वह बडी-बडी शत्रु-सेनाओं पर विजय प्राप्त कर लेता था। उसका कहना है कि पाच मिनटों का मूल्य न समझने के कारण ही आस्ट्रलियन हार गये। इसी तरह उसके पतन और वाटरलू की हार का प्रधान कारण कुछ घडियों की देरी ही थी। ग्राउच समय पर नहीं आया और उसके लिए नेपोलियन को

ठहरना पड़ा। बस इतनी-सी घटना नेपोलियन को सेन्ट हेलेना के टापू पर भेजने के लिए काफी थी, उसे कैदी बनाने के लिए शक्तिमान थी।

जो काम कभी भी हो सकता है वह कभी नहीं हो सकता। जो काम अभी होगा वही होगा। जो शक्ति आज के काम को कल पर टालने मे खर्च हो जाती है उसी शक्ति के द्वारा आज का कार्य आज ही किया जासकता है। इसके अतिरिक्त जो काम कल पर टाल दिया जाता है उसे कल करने मे भी कितनी कठिनाई पडती है? मन कितनी गडबड़ी मचाता है, तबियत कैसी घबराती है कि वह कार्य भाररूप मालूम पडने लगता है। जो बात आज बडे आनन्द और सुख के साथ की जा सकती है, वह कल हमे दुःख पहुचानेवाली और जीवन का काटा हो जाती है। पत्रों का उत्तर जितनी उत्तमता से तत्काल दिया जा सकता है उतनी खूबी से वह कल नहीं दिया जा सकता। बडी-बड़ी दूकानों और कारखानेवाले अपने पत्रों के उत्तर को कभी कल पर नही टालते।

फुरती आलस्य और भार को भगा देती है। टाल देने का मतलब प्रायः छोड देना रहता है और "करने ही वाला हू" का अन्त "नहीं ही करनेवाला हूँ" पर रहता है। एक कहावत है "असाढ का चूका किसान और डाल का चूका बन्दर कहीं का नहीं रहता।" "कार्य करना" भी तो एक तरह का बीज बोना है। यदि वह ठीक समय पर नहीं बोया जायगा, यदि वह ठीक ऋतु मे खेत के गर्भ मे नहीं पहुंचेगा, तो ग्रीष्म ऋतु उसे बढाने और फलों को पकाने मे समर्थ नहीं हो सकती।

मेरिया एजवर्थ का कहना है कि वर्तमान के समान कोई घड़ी नहीं है, कोई ताकत और कोई शक्ति नहीं है। कोई व्यक्ति तुरंत के निश्चयों को पूरा नहीं करता है तो बाद मे उनके पूरे होने को कोई आशा नहीं है। वे छिन्न-भिन्न हो जावेंगे, संसार के कोलाहल में विलीन हो जावेंगे, अथवा आलस्य के कीचड मे फंस जावेंगे।

काबेट लिखता है कि मेरी विजय मेरी स्वाभाविक योग्यताओं की अपेक्षा हमेशा तत्पर रहने के कारण हुई है। इसी गुण के कारण सेना मे मेरी उन्नति हुई। यदि मुझे दस बजे जाना होता था तो मैं नौ बजे से ही तैयार रहता था। किसी आदमी को कभी भी मेरे लिए नही ठहरना पडा।

सर वाल्टर स्कॉट से एक व्यक्ति ने पूछा—"आप इतना अधिक काम इतने कम समय मे कैसे कर डालते हैं ?"

उत्तर मिला—"मुझे जो कुछ करना होता है उसे मैं उसी समय जाकर कर डालता हू।"

जो व्यक्ति तत्काल ही काम करके दिखाता है वह उस काम मे भूले कर बैठता है तो भी अच्छा निर्णय करनेवाले भविष्यवक्ता की अपेक्षा फायदे ही मे रहेगा और उसे विजय प्राप्त हो ही जावेगी।

एक फरासीसी राजनीतिज्ञ से पूछा गया कि "तुम कैसे इतना काम करते हो और साथ ही समाज के अन्य कार्यों में भी भाग लेते हो ?"

उसने उत्तर दिया—"मै आज का काम आज ही कर डालता हूं।"

कई लोग आज के काम को कल पर डालकर संसार मे पीछे ही पडे रहे। केवल ५ मिनट पीछे रहने के कारण वे प्रतिद्वन्द्विता मे हरा दिये

गये। उनके सम्बन्धियों ने, उनके मित्रों ने तथा उनके साथियों ने उन स्थानों पर अपना अधिकार जमा लिया जो कि पाच मिनट की देरी न करने से उनके होते। समय निकल जाने पर मिलता क्या है--निराशा, शोक और पतन। क्या दौड के मैदान में पाच मिनट की देरी करने से कोई भी प्रतिद्वन्द्वी जीतने की आशा कर सकता है? और जीवन की दौड तो और भी कठिन है।

एक विद्यार्थी निश्चय करता है कि वह आज शाम से कम-से-कम १० बजे रात तक पढा करूंगा। देखने मे बात बिलकुल साधारण है। शाम होती है, चारों ओर अधेरा फैलता है, दीपक अपनी ज्योति से घर को प्रकाशित करने लगता है। वह भोजन करता है, धीरे-धीरे आलस्य उसपर धावा करता है, उसके निर्णय की दीवाल हिलने लगती है, नये-नये तर्क उसके सामने आते है, वह सोचता है—"अभी तो परीक्षा के कई दिन बाकी है। इतनी जल्दी करने की क्या जरूरत है। अब कल से शुरू करूंगा।" बस तर्क-कुतर्क कर वह अपना काम छोड़ देता है। यही घडी उसकी विजय की घडी है, इसे ही अवसर कहते है, उसके जीवन पर सफलता अथवा असफलता की छाप लगाने के लिए यही पाच मिनट का समय मिलता है। विद्यार्थी फिर कभी इस गये हुए मौके को न पा सकेगा। विद्यार्थी ही क्या, प्रत्येक व्यक्ति कुछ-न-कुछ करना चाहता है। उसकेनिश्चय के प्रतिकूल आलस्य अपनी सारी सेनाओ को लेकर खड़ा हो जाता है। इनके भयंकर दल को जीतकर जो अपना झण्डा जीवन के मैदान मे गाड सकता है, वह गली का भिखारी होनेपर भी सम्राटों से कहीं अच्छा है।

'कल' शैतान का दूत है। इतिहास के पृष्ठों पर इस कल की धार पर कितने प्रतिभावानों का गला कट गया? कितनों की स्कीमे अधूरी रह गई? कितनों के निश्चय मौखिक ही रह गये? कितने 'हाय कुछ न कर पाया' कहते हाथ मींजते रह गये? कल असमर्थता और आलस्य का द्योतक है।

उस आलस्य का कब मनुष्य के शरीर पर आक्रमण होता है— इसका पता लगाना कठिन है क्योंकि आदत पड़ जाने से और प्रेम की बात हो जाने से उसके आने के समय एक ऐसा वायुमंडल तैयार हो जाता है कि शीघ्र ही ज्ञान-शून्यता का आभास होने लगता है। कुछ मनुष्यों को वह दोपहर भोजन के समय आ घेरता है, कुछ के सिर पर ब्याल़ू के बाद आ खड़ा होता है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन मे एक बड़ा ही कठिन समय दिन मे एक बार आता है, यदि समय का कुछ भी प्रेम है तो उसे जाने न देना चाहिए। प्रात:काल की घड़िया ही जीवन-विजय की सूचक रहा करती है।

एक व्यक्ति मेन के साहस और कौशल की प्रशसा हेनरी के सामने कर रहा था। थोड़ी देर मे हेनरी ने शान्त-भाव से कहा – "तुम्हारा कहना ठीक है, वह एक अच्छा सेनानायक है, परन्तु मै हमेशा ही उससे ६ घन्टे आगे रहता हू।' अर्थात् हेनरी चार बजे उठता था और मेन करीब दस बजे। यही उन दोनों का अन्तर था। इसी अन्तर मे सारी प्रतिष्ठा और सम्मान छिपा हुआ था। अनिश्चितता एक बीमारी होजाती है और भविष्यवक्ता बनने की आदत उसकी अगुआ रहती है। अनिश्चय के शिकारों के लिए एक दवाई है, वह है तत्काल

निर्णय करना। अन्यथा यह बीमारी सफलता की जानी दुश्मन रहती है। जो जरासा 'हाँ' और 'ना' के बीच मे पड जाता है वह डूब जाता है।

प्रातःकाल जल्दी उठने की आदत की ना सभी लेखकों और उपदेशकों ने बड़ी प्रशसा की है। वास्तव में ससार के महान व्यक्ति प्रातःकाल ही उठा करते थे। रूस का महान बादशाह 'पीटर दि ग्रेट' प्रकाश होने के पूर्व उठता था। वह कहा करता था कि मैं अपने जीवन को जहाँतक हो सके बढ़ाना चाहता हू, इसलिए कम सोता हूं। 'अलफ्रेड दि ग्रेट' सवेरे उठते थे। प्रातःकाल के घन्टों मे ही कोलम्बस ने अमेरिका की यात्रा की स्कीम तैयार की थी। नेपोलियन की बड़ी-बड़ी विजयों की तैयारी प्रात.काल ही हुई थी। कोपरनिकस तथा ज्योतिष-ज्ञान के अधिकाश पंडित गोधूलि के पहले उठनेवाले है। अमेरिका का धुरंधर विद्वान वेब्स्टर कलेवा करने के पहले २० से ३० पत्रों का उत्तर लिख डालता था।

इंगलेण्ड का महान उपन्यासकार सर वाल्टर स्काट बड़ा ही नियमानुकूल कार्य करनेवाला व्यक्ति था। यही उसके विशाल कार्यों की कुंजी थी। वह पाच बजे उठता था। कलेवा करने के पूर्व ही उसके दिन के कार्य का अधिकांश भाग समाप्त हो जाता था। एक युवक को सलाह देते समय उसने लिखा था—"समय पर ठीक रीति से काम न करने की आदत का खयाल रक्खो। जो कुछ करना हो शीघ्र ही कर डालो, और काम कर लेने के बाद आराम करो, आराम पाने की कोशिश मत करो।"

हैमिल्टन लिखते है—"एक विचित्र दुर्भाग्य हमारे कुछ मित्रों पर आ पड़ा है। जब ईश्वर ने उन्हे अस्तित्व दिया तभी उन्हे काम भी सौंपा और उपयुक्त समय भी दिया। उसने यह सब इस हिसाब से किया कि यदि वे उसे उचित समय पर शुरू करे, उसमें अपनी योग्य शक्तियों को लगा देवे, तो उनका समय और काम दोनों ही एकसाथ समाप्त हो जावे। परन्तु कुछ वर्ष पूर्व एक आपत्ति आपड़ी। दिये हुए समय का कुछ हिस्सा उन्होंने खो दिया। वे स्वयं नहीं बतला सकते कि उस समय का क्या हुआ ? पर इसमे तो कोई सन्देह ही नहीं है कि वह कहां रह गया। समय और काम दो समानान्तर लकीरो के समान है। परन्तु उक्त घटना के कारण एक लकीर दूसरी की अपेक्षा कुछ इंच छोटी हो गई। अब काम समय की रेखा मे दस मिनट आगे रहने लगा। अब वे समानान्तर नहीं रहे। उनके पत्र उस समय डिब्बे मे डाले जाते जब कि डाक चली जाती। वे बन्दरगाह पर पहुंचते है तो देखते है कि जहाज अभी ही छूटा है, वे स्टेशन पर पहुंचते है तो उन्हे दरवाजे बन्द होते दीखते है। वे किसी भी प्रतिज्ञा को नहीं तोड़ते और न किसी कर्त्तव्य से मुख ही मोड़ते है, परन्तु वे नियमित रूप से देर मे ही पहुंचते है और हमेशा उसी भयकर प्राण लेनेवाली घड़ी की ही उन्हे देर हो जाती है।" इन वचनों मे बड़ा ही गूढ़ रहस्य छिपा हुआ है। एक-एक वाक्य मानव-जीवन की विजय के लिए गूढ़ कुंजी है।

विवाह के सम्बन्ध के समान हो प्रतिज्ञा की पवित्रता की रक्षा करना मनुष्य का कर्त्तव्य है। एक व्यक्ति जो अपनी प्रतिज्ञा को तोड़

देता है तथा उसे तोड़ने के जबरदस्त कारण नहीं दे सकता, वह झूठा है और संसार भी उसे इसी दृष्टि से देखता है।

होरेस ग्रीले का कहना है कि यदि किसी व्यक्ति को दूसरे के समय की परवाह नहीं है तो उसे उनके द्रव्य की क्यों परवाह होगी ? एक व्यक्ति के एक घन्टे को छीन लेने में और उसके पाँच डालर छीन लेने मे क्या अन्तर है ? ससार मे ऐसे अनेक व्यक्ति पड़े हुए है जिनके एक घन्टे का मूल्य इससे भी अधिक होता है।

राष्ट्रपति वाशिंगटन चार बजे भोजन करते थे। उन्होंने कांग्रेस के नवीन सदस्यों को एक भोज मे सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया। वे थोडी देर मे पहुचे तो उन्होंने राष्ट्रपति को भोजन करते देखा। उन्हे बड़ा सन्ताप हुआ। यह देख वाशिंगटन महोदय ने कहा—"मेरा रसोइया मुझसे कभी नहीं पूछा करता कि महमान आये या नही, वह केवल यही पूछता है कि भोजन का समय हुआ या नहीं ?"

एकबार उनके सेक्रेटरी ने देर होने की क्षमा मागी और अपनी देरी के लिए घडी की सुस्ती का कारण उपस्थित किया। इसपर वाशिंगटन ने कहा—"जनाब ! या तो आप दूसरी घडी लीजिए, या मुझे दूसरा सेक्रेटरी बुलाना पड़ेगा।"

जो व्यक्ति काम न करके माफी मागने के लिए आगे बढ़ता है वह किसी काम का नहीं। वह गड्ढे मे गिरकर पैर को टूटने से बचाने की कोशिश करता है। नेपोलियन ने अपने सेनानायक को भोजन करने के लिए बुलाया। नियुक्त समय मे आने मे उन्हे कुछ देर हो गई। नेपोलियन भोजन करने लगा। वह खाना समाप्त करके उठ ही रहा था

कि वे आ गये। उन्हे देखकर नेपोलियन ने कहा—"भोजन का समय हो चुका, आइए अब अपना काम शुरू करें।"

जान क्विन्सि एडम्स समय के बड़े पाबन्द थे। एक सभा मे कुछ मेम्बरों ने समय हो जाने पर कार्यारम्भ करने की बात पर जोर दिया, तब एक सदस्य ने कहा—"नहीं, अभी मि० एडम्स नहीं आये है।" थोडी देर मे एडम्स आ गये। पता लगाने पर मालूम हुआ कि उस स्थान की घडी तीन मिनट तेज थी। एडम्स महोदय समय पर उपस्थित हुए थे।

नियमपूर्वक तथा समय पर कार्य करने से हृदय को बडा ही सन्तोष रहता है, किसी प्रकार की व्यग्रता नहीं रहती। एक समय का काम उसी समय करने से वह अच्छी तरह हो जाता है। दूसरे समय करने से दो समयों के कामो का भार आ पडता है, अतएव अड़चने भी दूनी हो जाती है, और इस गड़बड मे अपने आसपास के काम बिगड जाते है। कामकाजी और व्यापारी आदमी तो थोड़े दिनों मे नियमितता पर ध्यान न देने से मिट्टी मे मिल जाता है। जरा-सी देर होने से दिवाला निकल जाता है। लाखों रुपयों का नुकसान हो जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति को समय पर काम करने की आदत डालना चाहिए। एक ठीक समय बतलानेवाली घडी जरूर ही रखना चाहिए। जो घड़ी करीब-करीब ठीक है वह बुरे रास्ते पर ले जानेवाली है।

फुरती से काम करने से विश्वास पदा होता है। यह इस बात की गारंटी है कि हमारे सारे काम ठीक तरह से चल रहे है और व्यवस्थित

है। इससे काम करने की हमारी शक्ति का लोगों को विश्वास होता है। जो आदमी नियमित है वह हमेशा अपने दिये हुए वचन का पालन करेगा और उसपर भरोसा किया जायगा।

एक रेल चलानेवाले की घड़ी जरा सुस्त हो जाती है और दो गाड़ियाँ लड़ जाती हैं। बहुत-से अमूल्य जीवन नष्ट हो जाते हैं और हजारों का नुकसान हो जाता है। एक एजेन्ट समय पर रुपये भेजने मे देरी करता है और एक व्यापारी का दिवाला निकल जाता है। एक दूत पत्र समय पर पहुंचाने मे देरी कर देता है और एक निरपराध व्यक्ति सूली पर चढ़ा दिया जाता है। एक आदमी एक गप्प अथवा कहानी सुनने लगता है, एक दो मिनट की देर हो जाती है तब भागता है, स्टेशन पर पहुंचकर देखता है तो गाडी भकभक करती जाती हुई नजर आती है।

कुछ मिनटों की देरी ने कितनी आशा-लतायें नहीं सुखादी? कुछ मिनटों की देरी ने कितने हँसतो को रुला नहीं दिया? कुछ मिनटों की देरी ने कितनों के जीवन को दुःखी नहीं बना दिया? कुछ मिनटों की देरी ने कितने राष्ट्रों को गुलामी मे नही डाल दिया? फिर भी क्या कुछ मिनटों के मूल्य को तुम नही समझे?

———

[८]

शिष्टाचार

"शिष्टाचार के द्वारा कोई भी मनुष्य ससार मे अपनी उन्नति कर सकता है।"

—एक कहावत

"तुझे क्या चाहिए ? तुझे जो कुछ चाहिए उसे अपनी मुस्कराहट से प्राप्त कर, न कि तलवार के जोर से।"

—शेक्सपियर

"जीवन का तीन-चौथाई आधार, अच्छा चाल-चलन है।"

—मैथ्यू अर्नाल्ड

"क्या तुम मेरे समान शक्ति नहीं चाहती ?" कहकर 'आँधी' अपनी छोटी बहन 'मन्दवायु' की ओर देखने लगी। कुछ उत्तर न पा वह फिर कहने लगी—"देखो! जिस समय मैं उठती हूँ

उस समय दूर-दूर तक लोग तूफ़ान के चिन्हों से मेरे आने का सम्वाद चारों ओर फैला देते है। बड़े-बड़े जहाजों के मस्तूलों को मैं तिनके के समान तोडकर फैंक देती हूँ। समुद्र के जल के साथ ऐसा किल्लोल करती हूँ कि पानी की लहरों को पर्वत के समान ऊपर उछाल देती हूँ। सारे समुद्र के किनारे को जहाजों के टुकडों से पूर देती हूँ। मुझे देखकर मनुष्य अपने घरों में घुस जाते है, पशु-पक्षी अपनी जान लेकर भागते फिरते है, कमज़ोर मकानों के छप्परों को भी उठाकर फैंक देती हूँ, मजबूत मकानों को पकडकर हिला देती हूँ। मेरी साँस से राष्ट्र के राष्ट्र धूल मे मिल जाते है। क्या तुम नहीं चाहतीं कि तुममे भी मेरे समान शक्ति आ आवे ?"

यह सुनकर वसन्त की मन्दवायु ने कुछ उत्तर न दिया परन्तु वह अपनी यात्रा को चल पडी। उसको आते देखकर नदियाँ, ताल, जंगल, खेत, सभी मुस्कराने लगे, बगीचों मे तरह-तरह के फूल खिल उठे, रंग-बिरंगे फूलों के गलीचे बिछ गये, सुगन्ध से चारों ओर का वातावरण भर गया। भौंरे अपना सुरीला राग छेडने लगे। पक्षीगण कुजों मे आकर विहार करने लगे। चारों ओर चैन और आनन्द की वंशी बजने लगी—चारों ओर आनन्द छा गया। सभीका जीवन सुखदाई हो गया। इस तरह से अपने कार्यों द्वारा वसन्तु-वायु ने अपनी शक्ति का परिचय आँधी को करा दिया।

नम्रता बडा उत्तम गुण है। जो कार्य स्त्री का सौन्दर्य करके दिखा सकता है वही नम्रता करके दिखाती है। उसका तत्काल ही दूसरों पर प्रभाव पड़ता है।

जो व्यक्ति हंसमुख है, प्रसन्नचित्त है और दूसरों के साथ शिष्टाचार से व्यवहार करना जानता है, वह संसार मे कहीं भी जा सकता है। जिस छप्पर की छाया मे वह ठहरेगा, वहीं आनन्द की लहरें उठने लगेंगी। जिस समाज में वह प्रवेश करेगा, वहीं का वह रत्न हो जायगा। जिस देश मे वह अपने कदम रखेगा, वही देश अपनेको भाग्यवान समझने लगेगा। इस दुःख और व्याधिग्रस्त संसार में जो दूसरों को क्षणभर के लिए भी स्वर्गीय आनन्द का मजा चखा सकेगा, भला उसका आदर और स्वागत कौन न करना चाहेगा?

कहा जाता है कि जब प्रसिद्ध उपन्यासकार चार्ल्स डिकिन्स कमरे मे प्रवेश करता था तो ऐसा मालूम होता था कि कहीं अचानक आग जल उठी है। इसी तरह जब जर्मनी का महाकवि गेटे किसी होटल मे प्रवेश करता था तो सब लोग खाना छोड हर्ष में उसकी ओर देखने लगते थे।

जूलियन राल्फ काम करने के बाद लगभग दो बजे रात को लौटा और किवाड भडभडाने लगा। थोडी देर मे देखता है कि अमेरिका के राष्ट्रपति ने आकर किवाड खोले और पूछा--"कहो, सब ठीक है?" जूलियन ने क्षमा मागी। इसपर राष्ट्रपति ने कहा—"यदि मैं न आता तो तुम्हें रात भर बाहर ही पड़े रहना पडता। मेरे सिवा मकान मे यहाँ कोई नहीं है। हाँ, मैं अपने नौकर को भेज सकता था पर वह सो रहा था। उस को जगाना मैंने ठीक नहीं समझा।"

सौभाग्य की बात थी कि नैपोलियन ने जोसेफाइन से शादी करली थी। यह स्त्री बडी ही हृदयहारी और आश्चर्यजनक शक्तिवाली

थी। नेपोलियन के एक दर्जन स्वामीभक्त नौकर जो काम नहीं कर सकते थे उसे वह अपनी मुसकराहट से कर देती थी। जिस तरह नेपोलियन युद्ध-क्षेत्र मे वीर रहता था उसी तरह से वह समाज में वीरांगना रहती थी।

शिष्टाचार शारीरिक अवयवों की कमी पूरी कर देता है। वही व्यक्ति सर्व-सुन्दर है जो अपने शिष्टाचार से दूसरों पर विजय प्राप्त कर लेता है। सौन्दर्य का बिना शिष्टाचार के कोई मूल्य नही। उसके बिना जीवन सुखी होना दुर्लभ है। यदि सौन्दर्य मे शिष्टाचार, प्रेम, दया, सन्तोष और सहृदयता नहीं है तो ऐसे सौन्दर्य को दूर ही से नमस्कार है। वह केवल देखने की वस्तु है, मनुष्य के व्यवहार-की नहीं।

मिराबो एक बडा ही कुरूप पुरुष था, परन्तु उसका शिष्टाचार सर्वश्रेष्ठ था। लोगों को उससे बातचीत करते समय उसकी कुरूपता का कभी आभास मात्र भी न हो पाता था।

चरित्र और जीवन मे एक प्रकार का सौन्दर्य रहता है। हम दूसरों की भलाई करते है, परन्तु उसके करने का ढंग ज्ञात न होने के कारण उसके स्वर्गीय सुख को प्राप्त नहीं कर सकते।

एक कुत्ते को हड्डी का टुकडा फेंक दीजिए, वह उठाकर चला जायगा। तुम्हारी ओर एक दृष्टि भी नहीं डालेगा। इसके विपरीत अगर तुम कुत्ते को अपने पास बुलाओ, उसके सिर पर हाथ फेरो और उसे रोटी का एक टुकडा दो, तो वह बड़े प्रेम से पूछ हिलावेगा और तुम्हारे कार्य के लिए कृतज्ञता प्रगट करेगा। एक पशु भी मनुष्य के

शिष्टाचार तथा व्यवहार को समझता है। यदि तुम अपने भले कृत्यों को योंही फेंक दोगे, तो उनसे लाभ उठानेवाले कोई धन्यवाद-सूचक एक मुस्कराहट भी न प्रगट करेंगे। उनके हृदय विशेष हर्ष से भी प्रदीप्त न होंगे।

सुशीलता स्वयं ही एक सम्पदा है। सदाचरण और शिष्टाचार-वाले बिना धन के ही संसार-यात्रा करते है। उनके लिए सब दरवाजे खुले रहते है। वे बिना खरीदे सब वस्तुओं का आनन्द लूटते है। सूर्य के उजाले के समान प्रत्येक घर उनके स्वागत के लिए तैयार रहता है। भला रहे भी क्यो न ? आखिर वे सब जगह प्रकाश, आनन्द और उजेला लेकर ही जाते हैं। वे सबकी भलाई चाहते है और इस तरह ईर्ष्या और द्वेष का समूल नाश कर देते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि शहद में पुते हुए मनुष्य को मधुमक्खिया नहीं काटतीं ?

सभ्य पुरुष कभी भी अपने हृदय मे ऐसे दुर्गुणों को स्थान नही देते जिनसे दूसरो के विकास और सुख मे बाधा पहुंचे। वे ईर्ष्या, द्वेष, बदला लेने की प्रवृत्ति आदि दुर्गुणों को दूर ही से नमस्कार करते है। शिष्टाचार को समझनेवाले व्यक्ति में हृदय की उदारता, दूसरो को हित-चिन्तना आदि की बडी ही आवश्यकता रहती है।

परन्तु कई व्यक्ति बड़े ही विचित्र रहा करते है। वे अपने कुटुम्ब के लोगो और नौकरो को बात-बात पर झिडका करते है। घर-गृहस्थी के छोटे-छोटे कार्य मे पत्नी को डाँटा करते है। वे बड़े चिड़चिड़े होते है। परन्तु अकस्मात कोई मिलने आता है, तब सीधे-सादे बनकर मिलने को आगे बढ़ते है। क्षणभर पहले का गुस्सा न जाने कहाँ चला

जाता है। वे बड़ी नम्रता से पेश आते है, बड़ी उदारता दरसाते है, परन्तु उस आगान्तुक के बिदा हो जाने पर फिर वही पहले की उदासीनता, रुष्टता और दुर्व्यवहार वापस आजाता है।

एक भोज मे एक दिन गोल्डस्मिथ जानसन के पास ही बैठे थे। गोल्डस्मिथ ने जानसन से अमेरिकन इंडियन के बारे मे कुछ पूछा। इसपर आपने उत्तर दिया—"सारे उत्तरीय अमेरिका मे कोई भी ऐसा महामूर्ख नहीं है जो ऐसा प्रश्न पूछे।"

इसपर गोल्डस्मिथ को बहुत बुरा लगा। फिर भी, नम्रता से उस विद्वान ने कहा—"महाशय। एक भले आदमी मे इस तरह बात-चीत करनेवाला दूसरा कोई भी गंवार अमेरिका मे नहीं है।"

अरस्तू ने लगभग दो हजार वर्ष पहले भद्र पुरुष की परिभाषा लिखी थी। वह लिख गया है कि—"वह गहरे मन का आदमी भले और बुरे दिनों मे हमेशा ही सादगी से बर्त्ताव करता है। वह न तो अपनी बहुत बड़ाई ही कराना चाहता है और न अपनेको नीच कहलाना चाहता है। उसे न तो सफलता से आनन्द होता है और न विफलता उसे दुखित करती है। वह न तो भयंकर बातों को चुनता और न उनकी खोज में रहता है। वह कभी स्वयं अथवा दूसरों के विषय मे बात नहीं करता। न तो उसे इस बात की परवाह रहती है कि दूसरे उसकी प्रशंसा करें और न वह चाहता है कि दूसरों को दोषी ठहराया जावे।"

एक सभ्य व्यक्ति सभ्य ही रहता है। इस बात में कोई कमी नहीं रहती। वह तो चमकता हुआ हीरा रहता है। भीतर-बाहर

सब दूर एक-सा ही रहता है। वह हमेशा नम्र, दयालु और सभ्य रहता है। दूसरों की दुष्ट बातें उसे बुरी नहीं लगतीं। वह कभी भी दूसरे के मन को दुखानेवाली बात नहीं कहता। अनिष्ट का अनुमान लगाने मे वह धीर होता है। क्योंकि वह उसका विचार भी नहीं करता। अपनी रुचियों को वह अंकुश मे रखता है और संस्कारी बनाता है, अपनी भावनाओं को दबाता है अपनी वाणी अपने काबू मे रखता है; और दूसरे व्यक्तियों को अपने समान ही भद्र और भला समझता है।

जब चौदहवाँ क्लेमेन्ट पोप हुआ तो बहुत-से प्रतिनिधियों ने उसका अभिवादन किया। उत्तर मे पोप ने भी अभिवादन किया। इसपर कार्य-संचालक ने कहा—"आपको उनके अभिवादन का उत्तर नही देना चाहिए था।"

पोप ने कहा—"क्षमा कीजिए, मुझे अभी पोप हुए इतना समय नहीं हुआ कि मै अपने शिष्टाचार को भी भूल जाऊँ।"

कोई व्यक्ति शिष्टाचार से होनेवाले भारी लाभ का अनुमान नहीं कर सकता। शिष्टाचार ही हमे प्रसन्न करता अथवा नाराज करता है, ऊपर उठाता अथवा गिराता है, हमे जंगली अथवा सभ्य बनाता है। वायुमंडल की हवा के समान ही उसका हमारे तथा हमारे पड़ोसियों के ऊपर प्रभाव पड़ता है। शक्ति जिस काम को कराने मे असमर्थ होती दीखती है शिष्टाचार उसे हसते-हसते करा लेता है। समाज की सुन्दर श्रृंखला को व्यवस्थित रूप मे रखने के लिए शिष्टाचार का मुस्कराता हुआ शासक चाहिए। वह सब कलह दूर ही कर देता है और सब एक-दूसरे को अपना समझने लगते है।

मगून का कथन है कि —"शिष्टाचार के जैसी तो कोई दूसरी नीति नहीं है। क्योंकि जहाँ बढ़िया-बढ़िया बातें कोई मदद नहीं करतीं वहाँ सुन्दर शिष्टाचार की विजय हो जाती है।" लोगों को खुश करने की कला ही दुनिया में आगे बढ़ने की कुंजी है।

एक समय सम्राट नेपोलियन सेन्ट हेलेना में अपने साथी के साथ कहीं जा रहे थे। सामने से एक मजदूर बोझा लेकर आरहा था। नेपोलियन का साथी रास्ता नहीं छोड़ना चाहता था। यह देखकर भूतपूर्व साम्राट ने कहा—"बोझ का सम्मान कीजिए। रास्ते से एक ओर हट जाइए।"

नम्रता और शिष्टाचार से कभी-कभी अज्ञातरूप से जो प्रभाव पड़ता है उससे आर्थिक लाभ भी हुआ करता है। एक व्यापारी था। वह अपनी दूकान बन्द कर घर जारहा था। इतने में एक लड़की धागा लेने के लिए आई। वह लौटा और दूकान खोलकर उसे धागा दे दिया। इस छोटीसी घटना ने गाव भर में उसका नाम प्रसिद्ध कर दिया और उसकी खूब बिक्री होने लगी। कुछ दिनों में वह धनवान हो गया।

एक गरीब पादरी ने देखा कि कुछ लड़के दो वृद्ध स्त्रियों के पुराने ढंग के कपड़ों को देखकर उनकी हंसी उड़ा रहे हैं। स्त्रियों ने इस डर से कि गिरजाघर में भी यही हालत होगी, भीतर जाना ठीक न समझा। यह देख वह पादरी आगे बढ़ा और बड़ी नम्रता से उन्हें अपने साथ अन्दर ले गया तथा अच्छे स्थान पर बिठला दिया। यद्यपि देवियों से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था परन्तु उसके बर्ताव से वे बहुत खुश हुईं और उसकी बहुत प्रकार से सहायता की।

दो व्यापारी व्यापार करते है। दोनों ही अपने कार्य में तकलीफ़ सहन कर परिश्रमपूर्वक कार्य करते है। एक बडी नम्रता और भलमनसाहत से ग्राहकों के साथ पेश आता है, दूसरा ज़रा-जरा मे गुस्सा हो बैठता है। परिणाम यह होता है कि नम्रता से व्यवहार करनेवाला व्यापार में उन्नति कर लेता है और दूसरा हाथ मलता रह जाता है।

अभद्र व्यवहार से प्रामाणिकता, उद्योग और बडी-से-बडी शक्तियाँ भी व्यर्थ चली जाती हैं। इसके विपरीत शिष्टाचार से तो दूसरी कमियाँ होते हुए भी उसका आदर होता है और उसको काम मिलता है।

एक गरीब लड़की ने थोड़ा-सा सामान खरीदा। दूकान के मालिक ने कहा—"बेटी। धन्यवाद है, कृपया आती जाती रहना।" इस जरा-सी बात ने भिखारिन लड़की पर बडा प्रभाव डाला और वह सबसे कहती फिरती थी कि अमुक दूकानदार बडा भला है। थोड़े दिनों मे दूकानदार की खूब बिक्री होने लगी।

लेकिन बहुत-से आदमी अगर लड़ने में बहादुर होते हैं। या खतरे का सामना बहादुरी से करते है, तो उनमें यह भी कमजोरी होती है कि वे सभा मे डरपोक या झेंपू रह जाते हैं। वहाँ उनकी जबान नहीं खुलती। वे सभा-चतुर नही होते। अपना मन नहीं प्रदर्शित कर सकते। उनमें योग्यता तो होती है, लेकिन अपनी योग्यता का भान उनको नहीं होता। यह शिष्टाचार की अशिक्षा है। इसको दूर करने का उपाय तो यह है कि बालक को बचपन मे सामाजिक जीवन

की सब बातों की, बोलने-चालने, उठने-बैठने, लोगों के सम्पर्क में आने आदि की शिक्षा देनी चाहिए। इसका ख़याल रखने से उनकी झेंप मिटेगी। ऐसे लोगों को अपने कपड़े-लत्ते का भी जरा ख़याल रखना चाहिए। वे बहुत तड़क-भड़कवाले नहीं लेकिन फिर भी साफ़-सुथरे हों, सादे हों, और ढंग के हों। इसका भी लोगों पर असर पड़ता है। हमारे चरित्र के समान हमारे आचार-व्यवहार की भी हमेशा जाच-पड़ताल होती रहती है। अगर हम किसी जन-समुदाय मे जाते है तो सैकड़ों-हजारों आखों की तराजुओं पर हमारा आचार-व्यवहार चढ़ जाता है। वे आँखे नापती है कि यह अपने व्यवहारों मे कितना घटा और कितना बढ़ा। वे तुलना करके देखते है कि सर्वांश मे यह आदमी कितना खरा है। इसलिए हमको अपने आचार-व्यवहार आदि के बारे मे अपने साथियों के क्या विचार है, वे हमारी क्या कीमत आकते है, इसकी भी जानकारी रखनी चाहिए। यह ध्यान मे रखना चाहिए कि कोई बहुत समय तक लोगों को धोखे मे नहीं डाल सकता है। क्योंकि न्याय की तराजू तो चौबीसों घण्टे उसके अन्तःकरण मे भी मौजूद रहती है। वह अन्तर्यामी हमारी हलचलों को, हमारे व्यवहारों को, देखता रहता है। इसलिए अन्तःकरण की सत्यता शिष्टाचार का ऊंचे-से-ऊँचा गुण है।

---

[९]

उत्साह

"जिस परिश्रम मे हमे आनन्द प्राप्त होता है वह हमारी व्याधियो के लिए अमृत-तुल्य है, वेदना का निवारण है।"

—शेक्सपियर

"मनुष्य की सचाई का एकमात्र निर्णयात्मक प्रमाण यह है कि अपने सिद्धान्त के लिए वह अपना सब-कुछ स्वाहा कर देने के लिए तैयार रहता है।"

—लॉवेल

उत्साह कार्य का प्राण होता है। उत्साह हीनता से कोई काम नहीं किया जा सकता। उत्साह न रहने से समस्त मानसिक शक्तियाँ कार्य मे भाग नहीं लेतीं। मन कहीं काम करता है तो हाथ कहीं जाते हैं। थोडी देर तक इस तरह स्वयं ही शरीर के भागों मे युद्ध होता

रहता है और घण्टे भर का काम कई घण्टों मे होता है। सो भी बुरी तरह से। उत्साह एक अग्नि है जो हमारे कार्यों को चलाने के लिए भाप तैयार करती है।

हेनरी का कहना है—"जब मैं किसी प्रधान विषय पर बातचीत करता हूं तो मुझे बाहरी दुनिया की बिलकुल याद नही रहती। अपने सामने के विषय मे मग्न होकर मैं समय और स्थान के ज्ञान को भी भूल जाता हू।"

संसार के प्रत्येक बालक के हृदय मे कोई-न-कोई अच्छे काम को कर दिखाने की शक्ति होती है—भले ही लडका होशियार हो या मूर्ख हो। जो होशियार है उनके विषय मे तो कुछ कहना ही नही है, परन्तु जो सुस्त और अल्हड दीखते है यदि उनके मन मे भले कार्य की इच्छाशक्ति जागृत करदी जावे तो धीरे-धीरे ससार से आलस्य बिदा हो जावेगा और एक सद्शक्ति का प्रकाश उनके हृदय को भर देगा।

उत्साह से प्रभावित हुए नेपोलियन ने दो सप्ताह मे वह काम कर दिखाया था जिसे करने मे दूसरों को एक वर्ष से कम न लगता। आश्चर्य मे पड़े हुए आस्ट्रियन कहा करते थे—"ये फ्रांसीसी मनुष्य नहीं है, ये तो उड़ते है।"

नेपोलियन ने अपने इटली के पहले धावे मे ६ विजय प्राप्त करलीं, २६ झण्डो को छीन लिया, ५५ तोपो को हस्तगत किया, १५ हज़ार कैदियों को पकड लिया और पेडमॉट पर अधिकार जमा लिया।

इस अचानक आक्रमण को देखकर एक आस्ट्रियन जनरल ने कहा था—"यह नवयुवक सेनानायक युद्ध-कला के विषय मे कुछ नहीं

जानना। वह निरा मूर्ख है। इससे कोई सम्बन्ध न रखना चाहिए।" परन्तु उस छोटे-से सेनानायक का उसकी सेना इतने उत्साह से साथ देती थी कि उसे कभी असफलता नहीं मिलती थी।

वाइड कहता है—"कई प्रधान-प्रधान बातें ऐसी रहती हैं जिनमें अर्द्ध-हृदय और पूर्ण-हृदय से काम करने में क्रमानुसार उतना ही अन्तर रहता है जितना अन्तर पूरी हार और सुन्दर विजय में रहा करता है।"

सीधी अबोध आरलेन्स की कन्या जोन की पवित्र तलवार, उसके पूज्य झण्डे तथा एक बड़े कार्य करने के विश्वास से फरासीसियों की सेना में उत्साह भर गया था। इतना उत्साह कोई राजनीतिज्ञ और राजा भी भरने की ताकत नहीं रखता था। उत्साह ने उसे प्रतिभा के शिखर पर चढ़ा दिया। यदि प्रत्येक व्यक्ति समझ ले कि उसमें कितनी शक्ति है, तो वह गजब के काम करके दिखला सकता है। परन्तु अड़ियल घोड़े के समान मनुष्य अपनी शक्ति को पहचानता नहीं है।

वेस्टमिनिस्टर के गिरजे में एक कब्र के ऊपर लिखा हुआ है—"इसके नीचे इस गिरजे और नगर को बनानेवाला क्रिस्टोफर रेन सो रहा है। वह ९० वर्ष तक जनता की भलाई के लिए जीवित रहा। यदि तुम उसका स्मारक चाहते हो तो चारों तरफ देखो।" जहा कहीं तुम लन्दन में देखोगे वहीं तुम्हें रेन की कला का नमूना मिलेगा। उसने किसीसे शिक्षा नहीं पाई थी। ५५ गिरजाघर और ३६ बड़े-बड़े हाल उसने तैयार किये थे। उसका कौशल हम्पटन केंसिंग्टन के महलों

में, टेम्पिलबार, ड्रेरलेन, नाटकघर, रायल एक्चेज मे स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। उसने ३५ वर्ष परिश्रम करके सेन्ट पाल के गिरजे को तैयार किया। यह उसकी सर्वश्रेष्ठ रचना है। उत्साह ही उसके शरीर को शक्ति प्रदान किया करता था। यही उसका चिरसाथी था।

बेपरवाही कभी विजय प्राप्त करनेवाली सेनाओं का संचालन नहीं करती, कभी ऐसी मूर्तियों को नहीं बनाती जिनमें से जीवन विकसित होता हुआ दिखाई देता हो, कभी प्रकृति की शक्तियों पर अधिकार नहीं जमा सकती, और न ससार को सार्वभौम उदारता के कृत्यों से प्रभावित कर सकती है। उत्साह ने सुई को दिशासूचक यंत्र की धुरी पर रखा, उसीने पहले पहल छापेखाने की मशीन को चलाया, उसीने गेलीलियो के दूरबीन की नलियों को बनाया जिन्होंने एक के बाद एक नवीन दुनिया के दर्शन कराये, उसीने उन पालों को ताना जिन्होंने तूफानों का सामना करके कोलम्बस को बहामा पहुंचा दिया, उसीने हाथों मे तलवार लेकर स्वतंत्रता का युद्ध किया, खून की नदिया बहाई, उसीने कुल्हाडी लेकर विकराल जंगलों को धाराशायी कर सभ्यता का विस्तार किया, और उसीने उन विचित्र छायायादी पत्रोंको पलटा जिनपर शेक्सपियर और मिल्टन ने हृदय मे चिनगारिया उत्पन्न कर देनेवाले विचारों को लिपिबद्ध किया। उत्साह ने ही विक्टर ह्यूगो को अपने कपड़े-लत्तों की भी परवाह न करने के लिए मजबूर किया था ताकि वह 'नाट्रोडेम' नामक अपने उपन्यास को पूरा कर सके। उत्साह से प्रफुल्लित व्यक्ति एक बार झूठी बात को इस तरह से कहता है कि लोगों को उसकी बात पर विश्वास होने

लगता है; परन्तु सच्ची बात को रोनी सूरत लिये प्रकट करनेवाला अपने परिश्रम को व्यर्थ ही जाता हुआ देखता है। जो वक्ता अपनी बातों को पूरे जोश और उत्साह के साथ जनता के सामने रखता है, वही विजयी है। उसके वचनों को सुनकर रोम-रोम खड़े हो जाते है; उसके हृदय से निकली हुई आवाज से सुननेवालों का दिल हिल उठता है।

माइकेल एनजिलो ने १२ वर्ष तक चीरफाड-विद्या (सर्जरी) का अध्ययन किया था। इससे उसका स्वास्थ्य खराब हो गया था। परन्तु इस कार्य ने उसकी शैली, उसके अभ्यास और उसकी प्रतिभा को निश्चित कर दिया था। वह अपने चित्रों के खाके को बनाता था, फिर उनपर मांस पुट्ठे और चमडा चढ़ाता था। अपने काम मे आनेवाले सब औजारों को उसने खुद ही बना लिया था। चित्र रंगने के सब रंगों को वह अपने ही हाथ से मिलाकर तैयार करता था, किसी विद्यार्थी अथवा नौकर को हाथ नहीं लगाने देता था।

फ्रान्सिस पार्कमैन ने जिस उत्साह और उद्योग से अपनेको कार्य मे लगा दिया वह प्रशंसनीय है और संसार में मुश्किल से दिखाई देता है। जब वह हारवर्ड मे विद्यार्थी था तब उसने उत्तरीय अमेरिका के फरासीसियों और अंग्रेजों का इतिहास लिखने का निर्णय किया। उसने अपना तन, मन, धन सब-कुछ इसी एक काम मे लगा दिया। इतिहास की सामग्री एकत्र करते-करते अपने स्वास्थ्य को नष्ट कर दिया था। उसकी आँखें खराब हो गई थीं। वह एक बार में अपनी आखों को पाच मिनट से अधिक समय तक काम में नहीं ला सकता

था। फिर भी उसने अपने युवावस्था के किये हुए निर्णय को नहीं छोड़ा और इतिहास का एक सर्वोत्तम ग्रन्थ संसार को लिखकर देगया।

लिंकन ६ मील चलकर एक व्याकरण की पुस्तक मांगकर लाया और फिर रात को घर जाकर एक मोमबत्ती के बाद दूसरी जलाते हुए अपनी अमूल्य पुस्तक का अध्ययन करता रहा।

युवक-जीवन में क्या है? जवानी मे कौनसी ज्योति, कौनसी महत्ता है? युवक उत्साह की वारुणी मे मस्त रहते है। उन्हे अपने सामने अन्धकार नहीं दीखता—अपने सामने बाधायें नहीं दीखतीं—अपने सामने असफलता नहीं दीखती। वे समझते है कि जाति का उद्धार करने के लिए, संसार को अच्छे रास्ते पर ले जाने के लिए ही उनका जन्म हुआ है। उनकी ये सुन्दर आशायें, ईश्वर करे, कभी नष्ट न हों। इन्हींके प्रकाश को अपने नेत्रों के सामने रखकर वे आगे बढते चले जावें।

उत्साह से प्रेरित युवक सूर्य का सामना कर सकता है। युवा-काल ही हृदय पर, दिमाग पर और मनुष्यत्व पर शासन कर सकता है। सिकन्दर युवक ही था। उसने यूरोपियन सभ्यता को नष्ट कर देनेवाले एशियाई दलों की धज्जिया उडा दी थीं। नेपोलियन ने २५ वर्षो की आयु में इटली पर विजय प्राप्त कर ली थी। रोम्यूलस ने २० वर्ष की आयु मे ही रोम की स्थापना की थी। न्यूटन ने २१ वर्ष की आयु के पूर्व ही अपने सबसे बड़े आविष्कार किये थे। लूथर २५ वर्ष की आयु में महान सुधारक हो गया था। २१ वर्ष के चेस्टरटन की बराबरी कोई अन्य अंग्रेजी कवि नहीं कर सकता था। विक्टर ह्यगो ने एक

दुःखान्त नाटक की रचना १५ वर्ष की आयु में की थी, तीन पुरस्कार प्राप्त कर लिये थे और २० वर्ष की आयु में एम० ए० तक का ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

संसार के अधिकाश प्रतिभाशाली व्यक्ति ४० वर्ष तक भी नहीं पहुच पाये थे। वर्तमान ससार मे नवयुवकों को जितने अवसर है उतने पहलेवालों को नहीं थे। आज उत्साह से प्रेरित होकर वे संसार को हिला सकते है। यह युवकों और युवतियों का जमाना है। यही उनका मुकुट है, यही उनकी कीर्त्ति है और उनकी सम्पदा तथा वैभव है।

जिस तरह से उत्साह युवा-काल मे अपने सामने के काटों को ठोकरो से धूल मे मिला देता है उसी तरह यदि वह बुढापे तक उसी तरह जाग्रत अवस्था मे रहे तो आश्चर्यजनक काम कर सकता है। ८० वर्ष के ग्लैडस्टन मे कार्य करने की जितनी शक्ति थी उतनी २५ वर्ष के आजके युवक मे पाई जाना कठिन है। आयु का गौरव उसके उत्साह मे रहना है और सफेद बालों को दिया हुआ सम्मान वास्तव मे उत्साह-पूरित हृदय को दिया हुआ सम्मान है।

८० वर्ष की आयु मे वेलिंगटन ने किलेबन्दी की सब स्कीमों का निरीक्षण किया था। बेकन और हम्बोल्ट मृत्युशैया तक बड़े परिश्रमी विद्यार्थी रहे थे।

डाक्टर जानसन ने अपनी सर्वोत्तम रचना "कवियों का जीवनचरित्र" ७८ वर्ष की आयु मे लिखी थी। 'राबिन्सन क्रूसो' प्रकाशित कराते समय डेनियल डेफो ५८ वर्ष का था। न्यूटन ने अपनी पुस्तक 'प्रिंसिपिया' के नये संक्षिप्त वर्णन ८३ वर्ष की आयु मे लिखे

थे। ८१ वर्ष की आयु मे लिखते हुए प्लेटो की मृत्यु हुई थी। टाम स्काट ने हिब्रू भाषा का अध्ययन ८६ वर्ष की आयु में शुरू किया था। 'गति के नियम' की रचना करते समय गेलीलियो की आयु लगभग ७० वर्ष की थी। जेम्सवाट ने ८५ वर्ष की आयु में जरमन भाषा सीखी। हम्बोल्ट ने अपने 'कासमाम' को ९० वर्ष की आयु में समाप्त किया। ३५ वर्ष की आयु में ही बर्क ने पार्लमेन्ट में जगह प्राप्त कर ली थी और संसार को अपने चरित्र की महिमा प्रकट कर दी थी। ४० वर्ष तक अज्ञात में रहनेवाला ग्रान्ट ४२ वर्ष की आयु में एक प्रसिद्ध सेनापति हो गया। एलिबिट ने कालेज मे भरती होने का इरादा किया, तब वह २३ वर्ष का था, ३० वर्ष की आयु मे वह ग्रेजुएट हो गया, और अन्त में उसके कपास के कारखाने ने दक्षिणीय रियासतों के एक उज्ज्वल भविष्य को खोल दिया। जर्मनी के भाग्य-विधाता ८० वर्ष के बिसमार्क में क्या गजब की शक्ति थी? महाकवि लागफेलो, टेनीसन, व्हीटियर आदि की कुछ उत्तमोत्तम रचनायें ७० वर्ष की आयु मे हुई थीं।

उत्साह को कभी मन्द न होने दो और उसके प्रकाश मे अपने जीवन के कार्यों को करते जाओ। कभी थकावट नहीं मालूम होगी, कभी असफलता दुखदाई प्रतीत न होगी।

ईश्वर करे हम उत्साह को ही अपना जीवन-संगी बनावे।

---

[१०]

व्यवहार-कुशलता

"साधारण योग्यता को बुद्धिमानी से काम में लाने से ही प्रशंसा प्राप्त होती है। उससे इतनी ख्याति होती है जितनी वास्तविक चमक से नहीं होती।"

—रोचेफोकाल्ड

एक गोरे अफसर को एक हबशी ने पकड़ लिया। इसपर उसने कहा—"मैं काले आदमी को कभी आत्म-समर्पण नहीं करूंगा।" परन्तु काला आदमी डरनेवाला नहीं था। उसने चट अपनी बन्दूक उसकी ओर की और कहा—"महाशय! मुझे बड़ा अफसोस है, हम आपको पकड़ने के लिए सफ़ेद आदमी नहीं ला सकते। यदि आप सीधे मेरे साथ नहीं चलेंगे तो मुझे गोली चलानी पड़ेगी।" तब गोरे आदमी को बात माननी पड़ी।

इस युग मे चातुरी के आगे बुद्धि की एक भी नहीं चलती। हमे केवल बुद्धि की विफलता चारों ओर दीखती है। निपुणता के द्वारा एक बुद्धि से इतना काम लिया जा सकता है जितना बिना चतुरता के दस बुद्धियों से नहीं हो पाता। बुद्धि दोपहर तक सोती रहती है, चतुराई छः बजे ही सोकर उठ बैठती है। बुद्धि शक्ति है, चतुराई कौशल। बुद्धि करने योग्य काम जानती है, चतुराई उसका करना जानती है।

बुद्धि कुछ है, चतुरता सब-कुछ है। उसे छठवी इन्द्रिय तो नही कह सकते, परन्तु वह सब इन्द्रियों का जीवन है। वह खुली आँख है, शीघ्र सुननेवाला कान है, जाचनेवाला स्वाद है और सुन्दर स्पर्श है, वह सब पहेलियों को हल करनेवाली है। सब कठिनाइयों पर विजय पाती है और सब बाधाओं को दूर करती है।

ससार मे क्रियात्मक कार्यों से दूर रहनेवाले व्यक्ति भरे पड़े है। ये प्राय. दो प्रकार के रहते है। एक तो वे है जिन्होंने अपनी सारी योग्यताओं को एक कोटि मे रखकर केवल किसी एक योग्यता का राक्षसी विकास कर लिया है। उनकी दूसरी योग्यताओं का प्रायः नाश हो चुका है। ऐसे एक-योग्यतावालों को संसार प्रतिभावान व्यक्ति कहकर पूजता है और उनकी अन्य कार्यों की आयोग्यताओं को भूल जाता है, क्योंकि वह अपनी आँखों द्वारा उनके ऐसे कार्यों को देखता है जिन्हे संसार का दूसरा कोई मनुष्य नहीं कर सकता। एक व्यापारी यदि अपने कमरे मे मूर्खता से भी पेश आता है पर व्यापार मे महान् व्यापारी का कार्य कर दिखावे तो लोग उसकी गलती को भूल

जाते है। उसकी चकाचौंध कर देनेवाली प्रतिभा के सामने उसकी सब कमियाँ ढंक जाती है। एडम्स स्मिथ ने संसार को अपनी "राष्ट्रों की सम्पत्ति" नामक ग्रन्थ के द्वारा मितव्ययता का पाठ पढ़ाया है, परन्तु वह अपने गृह-कार्यों में मितव्ययी न हो सके।

ससार के महान पुरुषों के जीवन-चरित्रों को पढने से यह बात स्पष्ट रूप से दीखती है कि बड़े-बड़े पुरुष अपने गृह-कार्यों मे बहुत निपुण न थे। सर आइजक न्यूटन विश्व के रहस्य को समझ सका, परन्तु काम करते समय बिल्ली की आवाज से घबराया करता था। वीथवन संसार-प्रसिद्ध संगीताचार्य था, परन्तु छः कमीजों और आधे दर्जन रूमालों के लिए उसने दरजी को ३००) रुपये दे दिये और आगे के काम के लिए भी दरजी को एक बडी रकम पेशगी दे दी। यह सब तो ठीक, पर कई बार इनको एक बिस्कुट और एक गिलास-भर पानी पर ही दिन बिताना पडा था। डीन स्विफ्ट सरीखा प्रतिभावान लेखक भूखों मरता था और वहीं उससे कम योग्यतावाले हलुआ-पूरी उड़ाते थे। नेपोलियन का एक सेनापति युद्ध-कला को अपने स्वामी ही के सामन जानता था, परन्तु वह उसके समान मनुष्यों का ज्ञान नहीं रखता था। उसमे विवेक-बुद्धि नहीं थी।

संसार के अद्वितीय कानूनदा डेनियल को अपने एक मुकदमे की फीस मे एक हजार डालर के नोट मिले। उस समय वह पुस्तकालय मे बैठा हुआ पुस्तकें पढ रहा था। दूसरे दिन उसे कुछ रुपयो की जरूरत पडी, परन्तु उसे नोट नहीं मिले। बहुत दिनों बाद उसने अपनी एक किताब के पन्ने पलटते समय एक नोट रखा हुआ पाया। कुछ

पन्ने उलटने पर दूसरा मिला। इस तरह से उसका खोया हुआ सारा धन मिल गया। वह पढ़ने की धुन में निशान लगाने के लिए रद्दी कागज के टुकड़े की जगह अपने नोट रखता चला गया था!

कई व्यक्ति कभी-कभी इतने ध्यानशून्य हो जाते है कि ऐसा मालूम होता है कि उनमे विवेक-बुद्धि बिलकुल है ही नहीं। विचार-मग्न प्रोफेसर लेसिग अपने घर गये और दरवाजे को खटखटाने लगे। ऊपर से नौकर ने इनकी ओर देखा परन्तु अन्धेरे मे वह इन्हे पहचान न सका। अतएव इन्हे दूसरा कोई व्यक्ति समझकर उसने कह दिया—"प्रोफेसर साहब घर नहीं है।" "अच्छा।" कहकर लेसिग महाशय वहा से चले गये।

वेन्डल फिलिप्स ने कहा है कि विवेक-बुद्धि आवश्यक बातो के सामने झुक जाती है और उनका उपयोग करती है।

ब्रिटिश भूमि पर पदार्पण करते समय सीजर को ठोकर लग गई और वह गिरने ही वाला था कि उसने झुककर किनारे की बालू मुट्ठियों मे उठाकर कहा—"देखो, यह हमारे विजय की सूचना है।"

इसी तरह नेपोलियन भी विवेक-बुद्धि और व्यवहार-बुद्धि का गजब का पंडित था। एल्बा टापू से भागकर जब वह फ्रान्स पर पुनः अधिकार करने के लिए आया तब एक सेना उसे रोकने और पकड़ने के लिए भेजी गई। नेपोलियन सिह के समान साहसी वीर था। अपने कोट के बटनों को खोलकर सिपाहियों के सामने जा खड़ा हुआ और जोर से बोला—"सैनिको। क्या तुम अपने सम्राट पर गोली चलाओगे?

नो लो, मेरा सीना तुम्हारे सामने है।" सिपाहियों का दिल फिर गया और वे नेपोलियन के पक्ष मे होगये।

शेक्सपियर और कवि गेटे की किसीने तुलना की। उसपर विचार करते हुए गेटे ने लिखा है कि शेक्सपियर हमेशा ठीक निशाना लगाता है परन्तु मुझे तो ठहरना पड़ता है, सोचना पड़ता है, उपयुक्त चुनाव करना पड़ता है, तब कहीं मेरा आघात होता है।

विवेक-बुद्धि से संचारित किये हुए छोटे छोटे पत्थर के टुकड़े भयंकर तीरो और तोपों की चतुरता-हीन अग्निवर्षा से कहीं अधिक उपयोगी और कृतकार्य होते है।

थारलोवीड ने सबसे पहला पैसा एक सन्दूक को ठीक करके पैदा किया था। उसे संसार मे बढ़ने के मौके नहीं थे, सुविधायें नहीं थीं, परन्तु उसमे व्यवहार-कुशलता और निपुणता थी। वह खुली पुस्तक के समान मनुष्यों को पढ़ा सकता था और उन्हे अपनी इच्छा के अनुसार घुमा-फिरा लेता था। वह नि.स्वार्थी था। उसकी निपुणता के कारण उसे बड़े-बड़े कार्य सौंपे गये थे।

नेपोलियन एक सेना सहित एक नदी के किनारे पहुंचा। नदी पर पुल नहीं था। उसने अपने प्रधान इंजीनियर से पूछा, "इस नदी की चौड़ाई क्या है?"

"साहब, मैं नहीं कह सकता। मेरे यंत्र सेना के साथ हैं और हम लोग दस मील आगे आ गये है।"

"इस नदी की चौड़ाई को जल्दी से नापो।"

"सरकार विचार से काम लीजिए।"

"नदी की चौड़ाई अभी बतलाओ, नहीं तो तुम्हें नौकरी से अलग करता हूं।"

अब इंजीनियर को अक्ल आई। उसने अपने हेमलेट (ऊँचे टोप) के सहारे गणित के एक प्रसिद्ध नियम का उपयोग करके बताया कि इसकी चौड़ाई लगभग इतनी होगी। नेपोलियन ने उसकी पदोन्नति कर दी।

कार्य-कुशलता न रहने से हमेशा बने-बनाये काम बिगड जाते हैं और मनुष्य हँसी की सामग्री हो जाता है।

विवेकबुद्धि-युक्त व्यक्ति हरएक बात को अपने ही कार्यानुकूल ढाल लिया करता है। यही उसके उत्थान और उसकी श्रेष्ठता का कारण होता है।

जिस कठिनाई को देखकर एक आदमी मार्ग-रहित हो जाता है वह कठिनाई विवेक-बुद्धिवाले के सामने एक खेल उपस्थित करती है और वह हंसते-हंसते विजय पा लेता है।

किसी आदमी को ठीक तरह से देखने के लिए यह अत्यन्त जरूरी है कि तुम ठीक स्थान से उसे देख लो। उसे अच्छे प्रकाश में रखो। उसके गुण और दोष अच्छी दृष्टि को पाकर सामने ही प्रगट हो जाते हैं।

महाकवि शेक्सपियर मे आश्चर्यजनक चतुरता थी, वह प्रत्येक चीज को नाटक मे परिवर्तन कर देता था। वह राजा और आश्रित को, मूर्ख और छैलो को, कुमार और किसान को, काले और सफेद को, गहरी कामनाओं और आचरण को, कीर्त्ति और अपकीर्त्ति को

मिलाना जानता था। और इसके जरिये ऐसा चित्र तैयार करता था कि देखनेवाले दंग हो जाते थे।

कई व्यक्ति जरा-जरा-सी बातों पर क्रोध दिखलाकर अपनी विवेक-शून्यता का परिचय देते है। कई लोग गधे से न जीतकर गधैया के पीछे पड़ जाते है। कई महापुरुष इतने आगे बढ़ जाते हैं कि किसीकी बात को पूर्ण रूप से सुने बिना ही उसका उत्तर देने की कोशिश करते है। परन्तु विवेक-बुद्धिवाले व्यक्ति मिथ्या आरोपों पर बिलकुल ध्यान ही नही देते।

[११]

आत्मसम्मान और आत्मविश्वास

"आत्मसम्मान मनुष्य के दुर्गुणो को वश मे रखने की पहली लगाम है।"

—बेकन

"आत्मविश्वास की कमी ही हमारी बहुतसी असफलताओ का कारण रहती है। शक्ति की निश्चयता ही मे शक्ति है। वे सबसे कमजोर है, चाहे वे कितने ही शक्तिशाली क्यो न हो, जिन्हे अपना तथा अपनी शक्तियो का विश्वास नही।"

—बोवी

एक गरीब स्काच जुलाहा हमेशा अपने विषय मे प्रार्थना किया करता था कि उसके विचार अच्छे हो जावें। क्योंकि जबतक मनुष्य अपने आचरण द्वारा लोगों को अपना अच्छापन न दिखा देगा

तबतक वह लोगों से अपने लिए अच्छेपन की आशा कैसे रख सकता है ?

जब तुम दूसरे का सम्मान नहीं करते, तो तुम्हारा सम्मान करने की दूसरों को क्या परवाह ? वे क्यों तुम्हारा सम्मान करें ? आत्म-सम्मान तो उन्हीं सिद्धान्तों पर निर्भर है जिनपर कि दूसरों का आदर करना निर्भर करता है।

लिंकन महोदय का कथन है कि तुम सब मनुष्यों को भले ही कुछ समय के लिए धोखा देदो, भले ही कुछ मनुष्यों को सब समय के लिए धोखा देदो, परन्तु सब मनुष्यों को सब काल के लिए धोखा नहीं दे सकते। हम स्वयं ही अपनेको कभी धोखा नहीं दे सकते। यदि हम सम्मान चाहते हैं, तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारे कार्य यह बतला देवे कि हम उसके योग्य हैं। एक खोटे सोने की मुहर कब-तक सच्चे सोने की कहलाकर पूजी जा सकती है ?

कालोना के स्टीफ़न को जब उसके शत्रुओं ने कैद कर लिया, तब उससे पूछा—"बताओ, तुम्हारा किला कहाँ है ?" हृदय पर हाथ रखते हुए उसने उत्तर दिया—"यहाँ।"

वाशिंगटन इरविंग का कथन है कि अच्छी तरह से तैयार की गई और अच्छी तरह से सुशिक्षित की हुई बुद्धि को हमेशा ही स्थान मिल जाता है, परन्तु उसे अपने घर मे छिपी न रहना चाहिए। वह यह आशा न करे कि दूसरे उसे ढूँढ लेंगे। आगे बढ़नेवाले और ढीठ मनुष्यों की सफलता के बारे मे बहुतसी गलत बातें फैली हुई है। अच्छी योग्यतावाले एक कोने मे पड़े रह जाते हैं। सच बात

यह है कि आगे बढ़नेवाले मनुष्यों के पास कार्य करने की विधि के वे गुण मौजूद है जिनके बिना केवल योग्यता किसी काम की नहीं होती। लोग कहा भी तो करते है कि भोंकनेवाला कुत्ता सोये हुए शेर से अधिक उपयोगी है।

जान कालहम को दिन-रात अध्ययन में लगे देखकर कालेज के एक विद्यार्थी ने हँसी की। उसे सुनकर कालहन ने कहा—"मुझे अपने समय को इस तरह से काम मे लाने की आवश्यकता है, क्योंकि मेरी इच्छा है कि मैं काग्रेस मे अच्छी तरह से कार्य कर सकूं।" उसकी इस बात का स्वागत हँसी ने किया। तब उसने जरा जोर देकर कहा कि, "क्या तुम अविश्वास करते हो ? मै तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ कि यदि मुझे यह विश्वास न होता कि तीन वर्षो के भीतर राजधानी की ओर से काग्रेस में चुना जाऊगा तो मैं इसी समय कालेज को छोड़ देता।"

किसी व्यक्ति को इस तरह की बाते कहते सुनकर हम उसे अहंकारी कहे बिना नहीं रह सकते। यह केवल विवेक-शून्यता की बात है। निस्सन्देह अधिकाश मनुष्य अहंकारो ही रहते है, परन्तु आगे चलकर महान् होनेवाले व्यक्तियों के ऐसे शब्द उनकी शक्तियों के विश्वास के आधार पर कहे जाते है। बड़े आदमी हमेशा ही अपनी योग्यताओं के मूल्य को समझकर उसीके अनुसार आत्म-विश्वास करना जानते है। कवि वर्ड्सवर्थ जानता था कि इतिहास मे उसका कौन-सा स्थान होगा और वह हमेशा ही इस बात को कहा करता था। जर्मनी के महाकवि ने अपने भविष्य को स्वयं ही बतला दिया था। तूफ़ान से नौका

को डगमगाती देखकर नाव का स्वामी घबराने लगा तब सीजर ने कहा था—"घबराओ मत; तुम्हारी नौका मे सीजर और उसका भाग्य है।"

नैतिक दृष्टि से उसी आदमी पर विश्वास करना सुरक्षित है जो स्वयं अपने ऊपर विश्वास करता है। परन्तु जब कोई व्यक्ति अपनी ईमानदारी पर स्वय ही विश्वास नहीं करता, तो भला दूसरे क्यों करेंगे ? सच है, नैतिक पतन का आरम्भ घर से ही होता है।

आजकल दुनिया के पास इतना समय नहीं कि किसी कोने में पड़ी हुई विद्वत्ता को खोज निकाले। मनुष्य का चुनाव उसके मुंह से बतलाई हुई योग्यता ही पर किया जाता है। यदि भविष्य में वह इस योग्यता को प्रदर्शित न कर सका तो इसमे उसीकी हानि है। संसार साहस और मनुष्यत्व की प्रशंसा करता है और ऐसे व्यक्ति को घृणा की दृष्टि से देखता है जो संसार मे पैदा होने के अक्षम्य अपराध के लिए हमेशा क्षमा-प्रार्थी की सूरत बनाये घूमता है।

सेंचलिंग ने क्या ही सत्य कहा है, कि जो मनुष्य इस बात को जानता है कि वह क्या है वह शीघ्र ही जान लेगा कि उसे क्या होना चाहिए। पहले-पहल यह जरूरी है कि उसके विचार में आत्मसम्मान अवश्य हो। फिर व्यवहार मे तो वह अपने-आप आ जायगा। दृढ़ता के साथ सामग्रियो को बार-बार अपने अधिकार मे घोषित करनेवाला वास्तव में उसका अधिकारी हो जाता है। कोसूथ का कथन है कि, "नम्रता बुद्धिमानी का एक हिस्सा है और मनुष्यों के लिए शोभनीय है। परन्तु किसीको भी आत्मविश्वास को कम नहीं करना चाहिए। वही, सब गुणों में, मनुष्य की मनुष्यता का सर्वश्रेष्ठ गुण है।" इसी

तरह फ्रायड का कहना है कि फल और फूल से एक पेड़ को पूर्ण करने के लिए उसकी जड को खूब नीचे तक जम जाना चाहिए। इसी बुनियाद पर मानसिक शिक्षण और सुधार की इमारत खड़ी की जा सकती है। एक नवयुवक को ऐसे आत्मसम्मान की आवश्यकता है जो उसे नीची कोटि से ऊपर उठाता है और उसे दूसरों के तिरस्कार से स्वाधीन कर देता है।

कारान ने एक मुकदमे की पैरवी करते हुए कहा—"मैंने अपनी सब कानून की पुस्तकों का अध्ययन कर लिया है और मुझे एक भी ऐसा मुकदमा नहीं मिला जहा विपक्षी के द्वारा घोषित किया हुआ हक़ ठीक बतलाया गया हो।"

जज राबिनसन ने बीच मे टोककर कहा—"महाशय! मुझे सन्देह है; मालूम होता है आपका पुस्तकालय छोटा है।"

नवयुवक कानूनदा ने शान्ति से जज महोदय के चेहरे की तरफ देखते हुए कहा—"श्रीमन्! यह ठीक है कि मैं गरीब हूं और परिस्थितियों ने मेरे पुस्तक-संग्रह को छोटा ही रखा है। मेरी किताबो की संख्या अधिक नहीं है। परन्तु वे चुनी हुई है और मुझे विश्वास है कि मैंने उन्हे अच्छी तरह से पढा है। मैंने अपनेको इस ऊंचे धन्धे के लिए थोड़ी-सी अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करके तैयार किया है। मैंने खराब पुस्तके नहीं पढ़ीं। मुझे अपने गरीब होने की कोई शर्म नहीं है, परन्तु यदि मैं खराब ढंग से द्रव्य पैदाकर धनवान हुआ होता तो बडी लज्जा आती। यदि मैं बडा आदमी नहीं हो सकूंगा तो कम से कम ईमानदार तो रहूंगा; और यदि इस मार्ग को त्यागकर

में बुरे रास्ते से ऊंचे पद को प्राप्त भी करलूं तो वह पद मुझे बहुत ही अधिक घृणा के योग्य बना देगा।" आत्माभिमान और आत्म-विश्वास से पूर्ण इन शब्दों को सुनकर जज महोदय ने फिर कभी भी नवयुवक बैरिस्टर की हंसी नहीं की।

माइकेल रेनाल्ड्स ने कहा है कि "आत्म-निर्भरता चरित्र का एक बड़ा ही बहुमूल्य तत्त्व है।"

आत्म-निर्भरता कोई हंसी-खेल की चीज तो है ही नहीं। उसके लिए कठिनाइयां झेलना पड़ती है। अपने तन, मन और धन को निछावर कर देना पड़ता है।

अतएव मनुष्य की उन्नति के लिए, उसे संसार के मनुष्यों मे उच्च बनाने के लिए, उसके कार्यों में सफलता और मनोहरता को लाने के लिए, आत्म-विश्वास एवं आत्म-सम्मान की अत्यन्त आवश्यकता है। आत्म-निर्भरता भी इन्हींके साथ रहनी चाहिए।

महाकवि शेक्सपियर ने एक जगह कहा है कि "जो कमजोर, आश्रित और आगापीछा करनेवाले हैं, वे आत्म-निर्भर रहनेवालों के उदार अहंकार को समझ नहीं सकते। आत्म-निर्भीक मनुष्य को इस बात की खुशी नहीं रहती कि उसे मुकुट मिल गया, बल्कि इस बात की खुशी रहनी है कि उसमे मुकुट प्राप्त करने की शक्ति है।" आगे चलकर वह कहता है—"यदि तुम अपने साथ ईमानदार रहोगे, तो जिस तरह रात के बाद दिन का होना निश्चित रहता है उसी प्रकार तुम किसी आदमी को धोखा न दोगे।"

---

[१२]

चरित्र-बल

"चरित्र एक शक्ति है, प्रभाव है। वह मित्र उत्पन्न करता है, सहायक और सरक्षक प्राप्त कराता है, और धन मान और सुख का निश्चित मार्ग खोल देता है।"

—जे. हावेज

"चरित्र हर एक चीज का पोषक और मददगार होना चाहिए—धर्म, उपदेश, कविता, चित्र, नाटक। विना चरित्र के किसी भी बात का रत्तीभर मूल्य नही होता।"

—जे. जी. हालैन्ड

"महान् बनो और अन्य मनुष्यो मे होनेवाली महानता तुम्हारी सहायता से मिलने के लिए उठ खडी होगी।'

—लावेल

सिसेरो को एक सरदार ने कहा—"तुम तो नीच कुल के हो। हमारी-तुम्हारी क्या बराबरी?" रोम के उस महान वक्ता ने नम्रता से जवाब दिया—"मेरे कुल की कुलीनता मुझसे शुरू होती है और आपकी कुलीनता का अंत आपसे होता है।"

स्पार्टा का राजा और एक आगन्तुक बातचीत कर रहे थे। किसी विशेष बात के कहने का अवसर आता देखकर आगन्तुक ने राजा की दस वर्ष की सुकुमारी बालिका की ओर हाथ उठाकर कहा—"इसे थोड़े समय के लिए बाहर भेज दीजिए।" राजा ने कहा—"नहीं, जो-कुछ आपको कहना है, इसीके सामने कहिए।"

लड़की पिता के पैरों के पास बैठ गई। आगन्तुक धन के बल पर बादशाह की मदद खरीद पड़ोस के देश का राजा होना चाहता था। कन्या इन बातों को नहीं समझती थी, परन्तु वह मुख की भावनाओं को समझती थी। पिता के चेहरे पर सद्-भावनाओं और कुरुचि के होनेवाले चिन्ह को वह समझती थी। पिता के चेहरे पर विचारों को देखकर वह समझ गई कि कुछ ऐसी बात है जो मेरे पिता नहीं करना चाहते अन्यथा पिताजी की मानसिक हालत यह न होती। उसने पिता का हाथ पकड़ते हुए कहा—"पिताजी! चलो यहां से चलें, यह आदमी न मालूम आपसे क्या करावेगा।" बालिका की बात को बादशाह न टाल सका। वह वहां से उठकर चला गया और स्वर्गदूत के हृदय में निवास करनेवाली पवित्रता ने एक देश को कलंक से बचा लिया।

नंगे पैर चिथड़े पहने हुए लड़के ने आगे बढ़कर एक रास्ते चलते हुए सज्जन से कहा—"महाशय! कुछ दियासलाई खरीद लीजिए।"

"नहीं, मुझे नहीं चाहिए।"

"ले लीजिए। कीमत एक पैसा ही तो है।" कहकर लड़का उनके मुंह की ओर देखने लगा। फिर भी इन महाशय ने कहा:—

"मुझे इनकी जरूरत नहीं है।"

"अच्छा तो, एक पैसे की दो डब्बियां ही ले लीजिए।"

किसी तरह से लड़के से पिंड छुड़ाने के लिए महाशय ने एक डब्बी ले ली, पर जब देखा कि पास मे पैसा नहीं है तो डब्बी वापस कर दी और कहा—"मैं कल खरीद लूगा।" लडके ने फिर नम्रता से कहा—"आज ले लीजिए, मैं पैसा भुनाकर लादूंगा।"

बालक की बात सुनकर उन्होंने उसे एक शिलिंग दे दिया। थोडी देर तक वह खड़े रहे, पर लडका नहीं आया। सोचा कि शायद अब बाकी का पैसा न मिलेगा, और थोडी देर राह देखकर वह अपने घर चले गये।

शाम को एक नौकर ने आकर खबर दी कि एक लड़का उनसे मिलना चाहता है। उत्सुकता से उन महाशय ने उसे अन्दर बुलाया। देखते ही वह समझ गये कि शायद यह उस लडके का छोटा भाई है। यह उसकी अपेक्षा और भो अधिक चीथडो से लिपटा हुआ था। उसके शरीर पर हड्डिया ही नजर आती थीं पर चेहरे पर एक प्रकार की तेजस्विता थी। थोडी देर चुप खड़े रहने के बाद उसने कहा—"क्या आपने ही मेरे भाई से दियासलाई की डब्बी खरीदी थी?"

"हा।"

"लीजिए इतने से पैसे बचे हैं। वह आ नहीं सकता। उसकी तबीयत

ठीक नहीं है। एक गाड़ी से वह टकरा गया और ऊपर से गाड़ी चली गई है। उसकी टोपी, डब्बियां और आपका शेष पैसा न मालूम कहां गया। उसके दोनों पैर टूट गये, वह अच्छा नहीं है। डाक्टर कहते हैं, वह नहीं बचेगा। उसने किसी तरह इतने पैसे भेजे हैं।" कहकर बालक रोने लगा। उन सज्जन का हृदय पिघल गया। वह उसे देखने गये।

जाकर देखते हैं कि बिना-बाप का बालक एक वृद्ध शराबी के घर में रहता है। लड़का फूस पर लेटा हुआ था। इन्हे देखते ही वह पहचान गया और लेटे-लेटे बोला—"मैंने पैसे भुना लिये थे, महाशय, और लौटकर आ रहा था। घोड़े के धक्के से मै गिर पड़ा। मेरे दोनों पैर टूट गये। प्यारे छोटे भाई! प्यारे! मेरी मृत्यु आ रही है। भय्या! तुम्हारा क्या होगा? तुम्हारी देखभाल कौन करेगा? मेरे जाने पर क्या होगा? हाय! तुम क्या करोगे?"

यह कहते हुए उसने अपने छोटे भाई को गले से लगा लिया। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

इन सज्जन ने दुखी बालक के हाथ को अपने हाथ मे लेकर कहा—"बेटा! तुम चिन्ता मत करो, मैं तुम्हारे भाई की रक्षा करूंगा।"

बालक समझ गया। उसकी शक्ति क्षीण हो रही थी, फिर भी शेष शक्ति के बलपर उसने इनकी ओर देखा। आँखों से धन्यवाद और कृतज्ञता के भाव साथ-साथ निकल रहे थे। हृदय कुछ कहना चाहता था, पर शब्द मुँह से नहीं निकलते थे। उसी समय उसकी आँखे बन्द हो गई और इस क्षणभंगुर शरीर को त्यागकर उसकी आत्मा जगत्पिता की गोद में जा पहुंची।

भगवान ने उस छोटे-से घायल और मरते हुए लड़के को बहुत बड़े सिद्धान्त सिखाये थे। बड़े-बड़े धनियों की अपेक्षा वह कहीं अधिक ईमानदारी, सत्य, महानता, सहृदयता के मूल्य को समझता था। ये ही सद्‌गुण मनुष्य को देवता बना देते है। इन्हींके कारण मनुष्य इस लोक में तथा परलोक मे पूजे जाते है।

पीले बुखार की महामारी के समय रोगियों की सेवा करनेवाले सेवकों की बड़ी जरूरत थी, परन्तु लोग मिलते न थे। रिलीफ कम्पनी हैरान थी। एक दिन एक असभ्य भद्दी शक्लवाले आदमी ने आकर कहा—"मैं इस काम को करना चाहता हूं।"

डाक्टर ने उसे नीचे से ऊपर तक सावधानी के साथ देखकर कहा—"तुम इस कार्य के योग्य नहीं हो।"

उसने निवेदन किया—"मैं इस काम को करना चाहता हूं। मुझे एक सप्ताह तक देख लीजिए। यदि आप मेरे काम से सन्तुष्ट न हों तो मुझे निकाल दीजिएगा, और यदि प्रसन्न हों तो मेरी मजदूरी दे दीजिएगा।"

"अच्छा तो, मैं तुम्हे रख लेता हू। पर सच्ची बात तो यह है कि मैं जरा हिचकता हूं।" इसके बाद मन ही मन डाक्टर ने सोचा—"इसपर गुप्त रूप से निगरानी रखना पड़ेगी।"

परन्तु कुछ दिन मे वह सबसे अधिक सेवा करने वाला सिद्ध हुआ। वह थकता ही नहीं था, उसे अपनी परवाह नहीं रहती थी। बीमारी के भयंकर से भयंकर स्थान मे वह वीर की तरह चला जाता था। मौत के मुंह पड़े हुए प्राणियों को जीवन-दान देने का प्रयत्न करता था।

उनकी सेवा में दत्तचित्त होकर काम करता था। अपने प्रेमी सम्बन्धियों से त्यागे हुए और बिना मददगार के कोनों में सड़नेवालों को वह स्वर्ग का दूत प्रतीत होता था। उसके चेहरे को देखकर बीमार एक-बार जी-से उठते थे।

लेकिन जिस दिन तनख्वाह मिलती थी उस दिन उसकी एक विचित्र हालत होती थी। वह सब लोगों की आँख बचाकर जाता और रोगियों की सहायता के लिए दान इकट्ठा करने की पेटी मे अपनी कमाई के पैसे को डाल आता था। कुछ दिनों मे वह बीमार हो गया और उसकी मृत्यु हो गई। उसके शरीर की अन्त्येष्टि-क्रिया करते समय देखा गया कि उसके शरीर पर एक बड़ा भारी निशान था, जिससे यह मालूम होता था कि किसी समय इसने भयकर दुष्कर्म मे जेलखाना भोगा था।

यह युग एक प्रकार से पैसे का युग है। चारों ओर धन की पुकार मची हुई है। परन्तु इतने पर भी एक गरीब लेखक, एक कला-विशारद तथा विद्वान व्यक्ति का करोड़पतियो से अधिक आदर होता है। धन हमेशा ही बुरी बातों को प्रोत्साहन दिये रहता है। पैसे की दुनिया मे एक आदमी की सफलता हजारों को दुःख और असफलता मे डाल देती है। बुद्धि की दुनिया मे, सफलता से समाज की उन्नति में सहायता मिलती है। धनी-गरीब दोनों ही चरित्र के अधिकारी है। समाज के लिए दोनों से सुन्दर चरित्र की आशा है। लेकिन धनी धन के घमण्ड में अपने चरित्र को खो बैठता है और दूसरा उसे ही अपना सब-कुछ समझकर अपनाता है। एक तरह से

दोनों ही भिन्न श्रेणी के व्यक्ति है। सच्चा व्यक्ति किसी को प्रसन्न करने के लिए अथवा किसी लाभ को प्राप्त करने के लिए अपने चरित्र को पवित्र नहीं रखता। वह तो चरित्र को ईश्वर का एक सन्देश समझता है, निःस्वार्थ-भाव से वह अपने कार्यों को करता है।

हम सब चरित्रवान् आदमियों मे भरोसा रखते है। एक महान पुरुष के नाम मे कैसी जादूभरी शक्ति होती है? थ्योडोर पार्कर कहा करते थे कि सुकरात की क़ीमत दक्षिण कारोलिना की रियासतों से बहुत ज्यादा है।

संसार मे विजय पाने के लिए चरित्र बडा मूल्यवान है। लार्ड केनिग ने लिखा है—"मैं चरित्र के मार्ग पर चलकर शक्ति प्राप्त करूंगा, मैं दूसरे मार्ग का अवलम्बन नहीं करूंगा, और मुझे विश्वास है कि यद्यपि यह मार्ग जल्दी से मुझे मेरे इच्छित उद्देश्य को प्राप्त नहीं करा सकता फिर भी वही बिलकुल निश्चित मार्ग है।"

हरएक इंजिन की शक्ति का बारीकी से हिसाब लगाया जा सकता है, परन्तु मनुष्य के अन्दर छिपे हुए चरित्र की शक्ति को कौन नाप सकता है? एक लडके अथवा लडकी पर स्कूल मे पडनेवाले संस्कार का कौन अंदाज लगा सकता है? एक-दो लडके अपने कार्यों के द्वारा परम्परा की बाते और चालों को बदल देते है। रूढियों को तोडने वाले इन वीरों के चरित्र को क्या कोई किसी यंत्र से नाप सकता है?

मास्को से एक सेना भाग रही थी। खून को जमा देनेवाली ठण्ड पड रही थी, बर्फ गिर रहा था। इस सेना का नायक एक जर्मन

राजकुमार था। उसके चारित्र्य के कारण सैनिक उसे अपने प्राणों से भी अधिक प्यारा समझते थे। एक ठण्डी रात को इस सेना की एक टुकडी राजकुमार सहित एक टूटी-फूटी झोपड़ी में आकर ठहरी। सब थके और भूखे थे। राजकुमार को नींद लग गई। सबेरे वह अपने ऊपर पड़े हुए गरम कपड़ों को अलग फेंककर उठा। बर्फ का तूफान चल रहा था। उसने अपने सिपाहियों को पुकारा, परन्तु कोई न बोला। हवा की झन्नाहट में उसकी आवज विलीन हो गई। उसने देखा तो मालूम हुआ कि उसके चारों ओर सारे सिपाही ठण्ड से अकड़े पड़े हैं। उनके शरीर पर कपड़े नहीं थे। उन्होंने राजकुमार को ठण्ड से बचाने के लिए अपने कपड़ों से ढक दिया था। अपने जीवन को देकर उन्होने प्यारे राजकुमार को बचाया।

वालटेयर उन्हीं आदमियों को महान समझता था जिन्होंने मानव-जाति का कुछ कल्याण किया हो, जिनके द्वारा किसी दुखिया का दु:ख कम हुआ हो, जिन्होंने अपने बाहुबल से अनाथ और अबलाओं के उत्थान मे मदद दी हो, जिन्होने नवीन बातों को ढूंढकर रोगग्रस्त मानव-जाति की सहायता की हो, जिन्होने सबको अपना भाई समझ-कर उनके आराम और सुख का प्रबन्ध किया हो, जिनका हृदय-आपत्तिग्रस्त को देखकर उसकी मदद को बढ़ जाता हो, जिन्होने किसी राष्ट्र के उद्धार के लिए अपना बलिदान कर दिया हो। वास्तव मे मनुष्य अपने कृत्यों से ही जाचा जाता है।

क्या तुम उस मोटी सूरतवाले आदमी को सफल कहते हो? क्या उसकी सूरत उसके धन-संचय की विधि को घोषित नहीं कर

रही है ? क्या तुम उस बड़ी तोंदवाले को सफल कहते हो ? क्या गरीबों को धोखा देकर धन पैदा करनेवाली उसकी विधि से तुम परिचित नहीं हो ? क्या तुम उसके चेहरे पर अनाथ बालकों और विधवाओं के दुःख का इतिहास नहीं पढ सकते ? क्या तुम उसे स्वयं-निर्मित मनुष्य कह सकते हो, जो दूसरों को मिटाकर बना है, जो दूसरे के घर को गिराकर अपना घर बनाता है ? क्या दूसरों को गरीब कर देनेवाला आदमी वास्तव मे धनवान है ? क्या वह कभी सुखी रह सकता है, जिसकी नस-नस मे लोभ भरा हुआ है ? संसार जिन्हे सफल कहता है उनमे से बहुत ही कम मनुष्यों के चेहरे सुन्दर, शान्त, मधुरतापूर्ण दीखते है। प्रकृति उनके चेहरे के ऊपर उनके हृदय पर शासन करनेवाली भावनाओं की छाप लगा देती है। हृदय की दुर्गन्ध चेहरे से निकल भागती है।

जीवन मे असफल हो जानेवाला व्यक्ति सम्मान पाने योग्य नही है, खाने-पीने और पैसा इकट्ठा करनेवाला व्यक्ति सचमुच सफल कभी नहीं कहा जा सकता। ससार को उसके रहने से क्या लाभ हुआ, जो उसने कभी दुखिया के आँसू नहीं पोंछे, कभी निराश दिल को उत्साहित नहीं किया ? उसका हृदय पत्थर-सा है और उसका देवता सुवर्ण है।

संसार को ऐसे व्यक्तियों की बडी जरूरत है जो धन के लिए अपनी राय बेचते न हों और जिनका रोम-रोम ईमानदार है, जिनकी अन्तरात्मा दिशासूचक यंत्र की सुई के समान एक शुभ तारे की ओर देखती है; जो स्वर्ग से गिर जाने पर भी अपने अधिकार से नहीं हटते;

जो सत्य को प्रकट करने मे राक्षस का सामना करने में भी नहीं डरते, जो कार्यों को देखकर हिचकते नहीं, जो अपने नाम की दुन्दुभी न बजाते हुए साहस-पूर्वक काम करते हैं, जो अपने काम को समझते है, उसमें दत्तचित्त रहना जानते है, जो कभी हृदय की भावनाओं को नहीं छिपाते और सच्ची अवस्था को निःसंकोच प्रकट करने मे नहीं डरते।

सर फिलिप सिडनी को बहुत बुरी चोट लग गई थी। रक्तस्राव के कारण प्यास बडी तेजी से सता रही थी। पानी उनके पास लाया गया। उसी समय एक घायल सिपाही को आदमी डोली पर लेजा रहे थे। उसकी दृष्टि पानी से भरी बोतल पर पड़ी। सिडनी ने उसकी आंखों मे पानी की प्यास देखी। पानी की बोतल उसे देते हुए उन्होंने कहा—"मेरी अपेक्षा तुझे पानी की जरूरत ज्यादा है।" और पानी उसे दे दिया। सिडनी मर गये, पर उनके इस कार्य ने उन्हे अमर बना दिया। समय, शक्ति और अपने जीवन को जो दूसरों के लिए—चाहे वह देश हो, जाति हो अथवा मनुष्य समाज हो, अर्पण कर देता है वह निश्चय ही महान है।

हरएक देश मे ऐसे पुरुष-स्त्री रहते है जो मुख से वचन निकलने के पहले ही लोगों को जीत लेते है। अपनी योग्यता से अधिक उनका प्रभाव होता है। हरएक कौम के लिए चरित्र पर विश्वास करना स्वाभाविक है, क्योंकि चरित्र मे ही शक्ति है। संगमर्मर के फर्श पर छुरे से घायल सीजर रोम के लोगों पर पहले की अपेक्षा अधिक प्रभाव जमा रहा था। प्रत्येक हृदय उसके लिए तड़प उठा था और लोग उसके लिए आंसू बहाते थे।

जनरल शेरीडन के बारे मे कहा जाता है कि यदि वह सिद्धान्त का पालन करनेवाला व्यक्ति होता तो उसने सारे संसार पर शासन किया होता। कितने कम नवयुवक जानते हैं कि उनकी सफलता उनके ज्ञान की अपेक्षा उनके चरित्र—उनके आचरण—पर अधिक निर्भर है। चरित्र के कारण ही लिंकन और वाशिंगटन संयुक्तराष्ट्र के प्रेसीडेन्ट चुने गये थे।

महान आदमियों के चरित्र मे एक विशेषता होती है। वे वज्र के समान दृढ रहते हैं। चारों ओर बवंडर उठते है, मूसलाधार वर्षा होती है, पत्थरों के प्रहार होते है, पर उनका एक कण भी विचलित नहीं होता।

टर्की ने जब कोसूथ को मुसलमान-धर्म ग्रहण करने की शर्तपर आश्रय देने की बात कही, तब उस वीर ने कहा—"मृत्यु और शर्म, इन दो के बीच मैं कभी नहीं पडा। एक दिन मैं विशाल कौम का स्वामी था; आज अपने पुत्रों के लिए मेरे पास कुछ नहीं है। ईश्वर के उद्देश्य की पूर्त्ति होने दो, मैं मरने को तैयार हूँ। मेरे ये हाथ खाली है, परन्तु इनपर कोई कालिमा नहीं लगी है।"

लिंकन कभी भी झूठे मुकदमे नहीं लेता था। एक दिन दो सौ डालर एक रमणी ने अपने मुकदमे की फीस के रूप मे दिये। मुकदमा देखने के बाद लिंकन ने कहा—"तुम्हारा मुकदमा टिक नहीं सकता, यह रुपया ले जाओ।

रमणी ने कहा—"यह मुकदमा देखने की आपकी फीस है।"

लिंकनः—"नहीं, यह ठीक नहीं। मैं अपने कर्त्तव्य-पालन की फीस नहीं ले सकता।"

मनुष्य के जीवन मे उसके धन्धे से—धन कमाने से—अच्छी भी कोई चीज होनी चाहिए। वह चीज़ प्रतिभा से अधिक बड़ी और कीर्ति से अधिक टिकनेवाली हो।

यदि संसार की कोई शक्ति है जो अपने प्रभाव का असर फैलाये बिना नहीं रह सकती,तो वह है चरित्र। चाहे मनुष्य मे शिक्षा न हो, चाहे उसमें बहुत ही थोड़ी योग्यता हो, चाहे वह धनहीन हो, चाहे समाज मे उसका कोई स्थान न हो, फिर भी यदि उसमे सच्चा महान् चरित्र है तो उसका प्रभाव पड़ेगा और उसे सम्मान प्राप्त होगा।

एक सच्ची घटना एक विश्व मे फैले हुए तार को हिलाती है, सारी नैतिक विद्वत्ता को छूती है, संसार के कोने-कोने मे पहुँचती है। उसकी गति ईश्वर के हृदय को भी गतिवान कर देती है।

चौदहवे लुई ने कालवर्ट से कहा—"हम इतने बड़े धनशाली और जनशाली राष्ट्र का शासन करते है, परन्तु एक छोटे-से हालैण्ड देश को नहीं जीत सके।"

मंत्री ने नम्रता से उत्तर दिया –"महाराज! किसी देश की महानता उस देश की लम्बाई-चौडाई पर निर्भर नहीं करती बल्कि वहा के मनुष्यों के चरित्र पर निर्भर करती है।"

महापुरुषों का आचरण राष्ट्र के लिए एक विरासत है। इंग्लैण्ड के एक अंग्रेज चमार ने, जिसकी चमडा कमाने की ख्याति बहुत हो गई थी, कहा कि अगर उसने कारलाइल के ग्रन्थों का अध्ययन नहीं किया होता तो वह यह काम इतना अच्छा नहीं कर सकता था। फ्रैंकलिन के

कारण लन्दन की सब दूकानों को अपने व्यवहार को बदल देना पड़ा। अरस्तू और टीटियन एक-दूसरे को स्फूर्ति दान करते थे।

एक विद्वान का कथन है कि "यदि तुम मुझे बतलाओ कि तुम किसकी सराहना करते हो, तो मैं बतला सकता हूं कि तुम कैसे हो ?" एक पुस्तक अथवा कोई कलापूर्ण वस्तु उसके निर्माण करने-वाले के विचारों मे हमे डुबो दिया करती है। क्या माइकेल एंजिलो मर गया ? प्राचीन रोम के खंडहरों को देखकर हजारों दर्शक दांतों-तले अंगुली दबाकर आश्चर्य में पड़ जाते है। क्या वाशिंगटन और अब्राहम लिंकन नहीं रहे ? क्या इससे भी अधिक अच्छी तरह वे जीवन मे रहे है ? कौन देश उनके चरित्रों को अपने घर मे आदर्श मान कर नहीं पूजता ?

यदि तुम कल्पना कर सकते हो तो बिना मूसा के मिस्र, डेनियल रहित बेबीलोन, डेमास्थनीज, फीडीयास, सुकरात या प्लेटो हीन एथेन्स की कल्पना करो। ईसा के दो सौ वर्ष पूर्व कारथेज क्या था ? बिना सीजर, सिसरो और मारकस आरेलियस के रोम क्या था ? ह्यूगो, हाईसिन्थ और नेपोलियन के बिना पेरिस क्या है ? बर्क. ग्लैडस्टन, पिट, मिल्टन और शेक्सपियर के बिना इंग्लैण्ड क्या है ?

इटली के पतन के काल की शताब्दियों में भी लोगों के मुंह से महाकवि दान्ते के शब्द निकलते थे। सिसरो और प्राची के वचन गुलामों के दिमागों में भी ज्योति उत्पन्न करते है। बायरन कहा करता था कि ये इटलीवाले ऐसे समय में इतनी अधिकता से दान्ते की बाते करते है, दान्ते के विषय मे लिखते हैं, और उसीका विचार करते है।

यह हास्यास्पद तो है, लेकिन दान्ते इन लोगों की इतनी सराहना का पात्र भी है। आज भी पतित ग्रीसवाले अपनी प्राचीन सार्वभौमिक प्रतिभा को भूलते नहीं है। हमारे दिमाग पर स्वर्गवासी और पृथिवी-वासी दोनों ही प्रकार के मनुष्यों का असर पड़ता है। इन्हींके प्रभाव से हमारा मन तैयार होता है। हमारे धर्म को महान बनाने मे हमारे धर्म पर बलिदान होनेवालों का प्रभाव पड़ता है, हमारे कार्य ऐसे होते है जो उसी पूर्वकालिक परिस्थितिवालों के करने योग्य सिद्ध होते।

हम तो कीडों के समान है। जिस रंग के पत्तों और पौधों पर वे निवास करते है उसी तरह का उनका भी रंग हो जाता है। उसी प्रकार जिन बातों से हमारे मन की भूख मिटाई जाती है उसी तरह के हम भी हो जाते है। हमारे जीवन का प्रत्येक कृत्य लोहे की कलम से हमारे ऊपर लिखा करता है। नष्ट किया हुआ अवसर, खोई हुई शक्तियाँ, बिताया हुआ समय, हमेशा ही हमे उलहना देने के लिए खड़े रहते है। उन्हे हम किसी तरह दबा नहीं सकते। जो जैसा बोता है वह वैसा ही पाता है। बबूल से आम नहीं फलेंगे।

भले आदमियों की संगति आदमी को भला बना देती है और दुष्टो की संगति बुरा बनाये बिना नहीं रहती। हम भले ही बुरे कृत्यो को गुप्त रूप से करें, अन्धकार मे दुष्टों से सम्बन्ध रखें, फिर भी समय आने पर ये सब बातें हमारे आचरण और चेहरे पर दिखाई देती है। हमारे हृदय की मूर्त्तिया हमारे नेत्रों से झाकती है, हमारे चालचलन मे दीखती है। चेहरों पर कुटिल हृदयों की छाया कुटिल ही पड़ती है और कोई शक्ति उसे दूर नहीं कर सकती। दुराचार-पूर्ण

जीवन के चेहरे के सामने कैसे चित्र आते हैं ? वहां तुम्हे घृणित दृश्य, विकारों की मांग और विजय के लिए होनेवाला युद्ध, अनिश्चय और कष्टकारी पराजय दीखेगी। इसके विपरीत जिसने विकारों पर विजय पाकर संयम-पूर्ण जीवन बिताया है, जो अपनी शक्तियों को सुसंगठित रखकर आत्मसुधार में लगा रहा है, उसके चेहरे से कैसी सुन्दर ज्योति निकलती है ?

मेरी दृष्टि मे वही सबसे बड़ा मनुष्य है, वही व्यक्ति महान है, जो मुझे मेरे आस-पास की बातों और प्रभावों के बन्धनों से मुक्त कर देता है; जो मेरी जिह्वा को स्वतंत्र कर देता है और मेरे लिए सम्भावनाओं के दरवाजों को खोल देता है।

क्रोध से क्रोध ही उत्पन्न होता है और ईर्ष्या ईर्ष्या ही उत्पन्न करती है। विकार छूत की बीमारी से किसी हालत में कम नहीं है।

इमरसन का कथन है कि "चरित्र हमेशा प्रगट हो जाता है। चोरी से कोई धनवान नहीं होता, दान से कभी कोई कंगाल नहीं होता। थोडीसी झूठ शीघ्र प्रगट होजाती है। यदि तुम सत्य बोलोगे तो सारी प्रकृति और सब जीव तुम्हारी सहायता अकस्मात आकर करेंगे।" चरित्र ही गरीब आदमी का मूलधन है।

किसी युग का इतिहास उस युग के राजाओं का इतिहास नहीं कहला सकता। उस युग के सेनापतियों की विजयें तोप-बन्दूकों का क़िस्सा नहीं हो सकता। सैकडों युद्धों से मानवजाति का कुछ लाभ नहीं होता। सच्चा इतिहास महान्‌पुरुषों के चरित्रों से पूर्ण रहता है। जिन्होंने भविष्य मे आनेवाली सन्तानों के लिए अच्छी-अच्छी चीजों

का निर्माण किया। जिन्होंने नहरें तैयार कीं, समुद्र से समुद्र को जोड़ दिया, सुन्दर चित्र तैयार किये, अच्छे-अच्छे ग्रन्थों की रचना की, सत्य को खोज निकाला, इत्यादि बातों का वर्णन राजाओं की सभा और रंगमहल के वर्णनों से हजार-गुना अच्छा है। वालटेयर महान आदमियों को पहला और वीरों को दूसरा स्थान देता था। उसकी परिभाषा मे महान आदमी संसार के लाभार्थ कार्य करते है और प्रान्तों को विजय करनेवाले वीर कहलाते है।

मिश्र के सतयुग के एक शासक ने कहा है—"मैंने किसी बालक को कष्ट नहीं दिया, किसी विधवा को नहीं सताया, किसी किसान के साथ बुरा बर्त्ताव नहीं किया। मेरे समय मे भिखारी नहीं थे। कोई भूखों नहीं मरता था। जब अकाल पड़ता था तब मैं अपने देश की सीमा तक की सब भूमि को जुतवा-बुवा डालता था और उसके निवासियों के भोजन का प्रबन्ध करता था। मेरे राज्य मे विधवा को कभी मालूम नहीं होने पाता था कि वह अनाथ हो गई है।" क्या कोई शासक इस बीसवीं शताब्दी के सभ्यता-मय समय मे इसके एक अंश को भी करने का दावा कर सकता है?

दुनिया मे ऐसे आदमी है जो प्रामाणिकता को अपना एकमात्र साथी बनाते हैं। अपने जीवन मे उसे वे ओतप्रोत कर डालते हैं। उनकी वाणी से, उनके कार्य से, उनके रहन-सहन से प्रामाणिकता टपकती है। उनके हाथ प्रामाणिकता से सच्चे होते है। वे उसे प्यार करते है। उससे वे सुन्दर, कुलीन, महान और बहादुर बन जाते हैं।

[१३]

यथार्थता

"यथार्थता और ईमानदारी दोनों सगी बहने है।"

—इमरसन

"अधूरे काम मै पसन्द नही करता। यदि वे ठीक है तो पूरे मन से करो, यदि वे अनुचित है तो उन्हे छोड दो।'

—गिलपिन

"यदि कोई व्यक्ति अपने पडोसी की अपेक्षा अधिक अच्छी किताब लिख सकता है, अच्छा भाषण दे सकता है अथवा अधिक अच्छी चीज बना सकता है, तो यदि वह जगल मे अपना मकान बनावेगा तो भी ससार उसके द्वार तक रास्ता बना लेगा।"

—इमरसन

"महोदय ! यह घडी मेरी बनाई हुई है। आप इसे चाहे जहाँ ले जाइए और सात वर्ष के बाद आप लौटकर आइए, यदि पाच मिनट का भी अन्तर पावे तो मै आपके दाम वापस कर

दूंगा।" कहते हुए मि० ग्राहम ने अपने ग्राहक को घड़ी दी। सात वर्ष के बाद वह भारतवर्ष से लौटे और कहा—"लीजिए, मैं आपकी घड़ी लाया हूँ।"

ग्राहम—"हाँ, मुझे अपनी शर्त याद है। कहिए क्या हाल है ?"

महा०—"मेरे पास यह सात वर्ष रही और मैंने पाँच मिनट से अधिक अन्तर पाया।"

ग्राहम—"अच्छा, तो मैं आपके दाम लौटा देता हूँ।"

महा०—"लेकिन मैं घड़ी तो आपको दूंगा नहीं, भले ही आप इसकी दसगुनी कीमत दे।"

"और मैं अपने वचन को तोड नहीं सकता।" यह कहकर ग्राहम ने घडी लेली, दाम वापस दे दिये और घड़ियों को दुरुस्त करने मे लग गया।

ग्राहम ने टामपियन से यह काम सीखा था। टामपियन बड़ा ही होशियार घड़ीसाज था। उसका नाम घडी की उत्तमता का प्रमाण-पत्र था। एक समय एक आदमी ने एक घडी उसे सुधारने के लिए दी। वह नकली थी और उसपर टामपियन का नाम लिखा था। देखते ही उसने हथोड़े से उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले और नई घडी देते हुए कहा—"लीजिए महाशय यह मेरी बनाई हुई घडी।"

ग्राहम ने कई चीजों का आविष्कार किया। ग्रीनविच की वेध-शाला मे उसकी बनाई घड़ी लगी है, जो दो सौ वर्षों से काम दे रही है, पन्द्रह महीनों के बाद एक बार उसे सुधारना पडता है। टामपियन और ग्राहम की मृत्यु पर वे वेस्टमिनिस्टर के गिरजे में दफनाये गये।

समुद्र में नौका छोड़ देने पर नाविक अपने मार्ग को बिना किसी यंत्र के निर्दिष्ट नहीं कर सकता। दूर-दूर की यात्रा करने की समस्या सामने आते ही लोगों को एक ऐसे यंत्र की जरूरत पड़ी जो कम-से-कम उन्हें इतना बता सके कि वे पेरिस, ग्रीनविच अथवा वाशिंगटन के किस ओर हैं। स्पेन की सरकार ने सोलहवीं शताब्दी में देशान्तर बतलानेवाले यंत्र बनानेवाले को एक हजार क्राउन* देने की घोषणा की। दो सौ वर्ष बाद इंग्लैण्ड की सरकार ने भी विज्ञापन दिया कि जो व्यक्ति एक ऐसे यंत्र को बनावेगा जिसके द्वारा घर से छः महीने पहले निकला हुआ जहाज अपने देशान्तर को ६० मील के घेरे मे बतला सके तो उसे ५ हजार पौंड इनाम दिया जावेगा; यदि ४० मील के घेरे में बतला सके तो ७५०० पौंड, और ३० मील के घेरे में बतलानेवाले को १० हजार तथा बिलकुल ठीक बतलानेवाले को २० हजार दिया जावेगा। संसार भर के घड़ी बनानेवालों ने इन इनामों को पाने के लिए बड़े प्रयत्न किये। सन् १७६१ तक किसीको कुछ न मिला। उसी वर्ष जान हेरीसन ने अपने क्रोनामीटर को परीक्षा के लिए उपस्थित किया। १४७ दिन की यात्रा मे इस यंत्र मे केवल दो मिनट का अन्तर पड़ा, १५६ दिन की यात्रा मे १५ सेकन्ड का अन्तर हुआ, और उसे २० हजार पौंड का पुरस्कार प्राप्त हो गया। इस व्यक्ति ने ४० वर्ष तक अपने यंत्र को बनाने का अभ्यास किया था और इसका हाथ तथा इन्द्रियाँ भी इसके यंत्रों के समान ही सूक्ष्म ज्ञान-सूचक हो गई थीं।

---

*एक क्राउन ५ शिलिंग अथवा ३ रुपया १२ आने के बराबर होता है।

एक बढ़ई ने एक लुहार से कहा—"मेरे लिए एक अच्छा हथौड़ा बनादो। हम लोग छः आदमी बाहर से काम करने आये हैं, मेरा हथौडा भूल से घर रह गया है।"

बढ़ई—"हाँ, पर मुझे चीज अच्छी चाहिए।"

कुछ दिन मे लुहार ने अच्छा हथौडा बनाकर उसे दिया। लोगों को इतना पसन्द आया कि दूसरे दिन और लोग भी हथौडा बनवाने के लिए आये। एक ठेकेदार ने भी कुछ हथौडों का हुक्म दिया—परन्तु साथ ही यह भी कह दिया कि जरा पहले बनाये हुए हथौडों से अच्छे बनाना।

यह बात सुनकर लुहार ने कहा—"मैं उससे अच्छे नहीं बना सकता हूं। जब मैं कोई चीज बनाता हूं तो उसमे कोई कमी नहीं रखता, चाहे कोई भी आकर बनवावे।" और शीघ्र ही लोग उसके यहाँ से हथौडा बनवाने लगे और उसका नाम चारों ओर फैल गया। वह चाहता तो कुछ दिनों मे धनवान हो जाता। परन्तु वह हमेशा अपनी बनाई हुई चीज़ों की उन्नति मे लगा रहता था। उसके नाम की चीज बिना किसी आनाकानी के बिक जाती थी।

यथार्थता एक शक्ति है और वह संसार मे मनुष्य का सर्वोत्तम विज्ञापन है।

एक बार एक बड़े भारी व्यापारी से एक ग्राहक ने कहा—"महाशय! आपके माल की क़ीमत दूसरी जगह की अपेक्षा अधिक रहती है।"

उत्तर मिला—"निस्सन्देह, हमारा उद्देश तो अच्छा माल देने का

रहता है। हम नहीं चाहते कि चाहे-जैसा माल तैयार करके जिस-तिस भाव पर लोगों के गले मढ दें। हमारी हार्दिक इच्छा रहती है कि हमारा माल सर्वोत्तम रहे और किसी ग्राहक को यह कहने का मौका न आवे कि अमुक व्यापारी का माल खराब था।"

एकबार एक चित्रकार ने ओलीवर क्रामवेल का चित्र बनाया। चित्रकार ने उसे प्रसन्न करने के लिए चहरे पर के एक मस्से को नहीं बनाया। यह देखकर उस वीर ने कहा—"जैसा मैं हूं वैसा ही बनाओ।"

हाउस आफ कामन्स के एक सदस्य ने, वादविवाद करते समय, अपने प्रतिद्वन्दी से रुष्ट होकर कहा—"मुझे याद है, एक समय तुम मेरे पिता के जूतों पर पालिश किया करते थे।" स्वावलम्बी वीर ने बड़े ही नम्रभाव से हजारों आदमियों के सामने कहा—"आपका कहना ठीक है, परन्तु बताइए, क्या मैं अच्छी तरह से पालिश नहीं करता था?"

एक ने कहा—"अच्छी और बुरी नील को पहचानना कठिन नहीं है। एक टुकड़ा लो और उसे पानी में डाल दो। यदि नील अच्छी होगी तो या तो तैरेगी या डूब जावेगी। मुझे यह ठीक से नहीं मालूम है। लेकिन कोई बात नहीं, तुम प्रयोग करके तो देखो।" वाह कैसी उमदा सलाह है।

विलिंगटन बहरेपन के कारण बड़े दुःखी थे। एक होशियार डाक्टर से सलाह ली। उसने एक बडी तेज दवा कानो मे डाल दी, जिससे विलिंगटन का जीवन भी खतरे में पड गया। डाक्टर बहुत

हुआ और उसने अपनी भूल का बड़ा पश्चात्ताप किया। साथ भी यह कहा—"यह भूल मेरे जीवन को नष्ट कर देगी।"

विलिंगटन ने कहा—"मैं कभी भी इस सम्बन्ध मे कुछ नहीं कहूंगा।"

डा०—"फिर आप मुझे अपने यहाँ रोज-रोज आने दीजिए, जिससे लोगों का विश्वास मुझपर से न उठे।"

इस बात को विलिंगटन ने स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा—"नहीं, यह झूठ बोलना कहलावेगा।"

एक लड़के ने कहा—"पिताजी, मैंने बहुतसे कुत्ते देखे। ५०० के लगभग होंगे—बिलकुल सच बात है—कल रातको—अपनी सड़क पर।"

पिताने कहा—"इतने कभी नही हो सकते।"

लड़का—"अच्छा, सौ तो जरूर होंगे।"

पिता—"झूठ है, हमारे गाव मे सौ कुत्ते तो है ही नहीं।"

लड़का—"दस से कम तो नही हो सकते।"

पिता—"मै तुम्हारी दस की बात पर भी विश्वास नहीं कर सकता, क्योंकि जितनी दृढ़ता से तुम ५०० की बात कह रहे थे उसी दृढ़ता से दस की बात कह रहे हो।"

लड़का—"पिताजी! मैंने अपने कुत्ते तथा एक दूसरे कुत्ते को तो अवश्य ही देखा था।"

इस तरह से अतिशयोक्तिपूर्ण बात कहने के लिए लड़के का हम तिरस्कार तो करते है, परन्तु क्या हम स्वयं ही नहीं कहा

करते—"ऐसा पानी कभी नहीं बरसा था"; "संसार मे ऐसी खिलौ है ही नहीं"; "सबसे अधिक भीषण गर्मी आज ही पड़ी है "? किसी भी चीज को सर्वोत्तम या बहुत बढ़ाकर कहदेना हमारे लिए मामूली बात हो रहा है। इस तरह हमारी नस-नस मे झूठ भिदी पडी है। इसे दूर करना ही सुखी और शान्त जीवन व्यतीत करने की प्रथम सीढ़ी है।

मानव जाति सीधे आडम्बर-शून्य सत्य को बड़े आदर की दृष्टि से देखती है। उससे चरित्र की दृढ़ता प्रकट होती है। दूसरे को अरुचिकर प्रतीत होने के डर से अच्छी बातें कहना, सत्य कहने की अपेक्षा आवश्यकतानुसार बात को घुमा-फिरा कर कहना, दो अर्थों को प्रकट करनेवाली शब्द-रचना करना, अतिशयोक्ति की शरण लेना, दिखाने के लिए दूसरे के विचारों से सहमत होने का भाव दर्शाना, आँखों से, मुस्कराहट से तथा हावभाव से हृदय की भावनाओं को छिपाना, किसी बात को न जानने पर भी जानकारी के चिन्हों को प्रकट करने की कोशिश करना--ये सब खोखलेपन और असत्य के भिन्न-भिन्न स्वरूप है और यथार्थता की कमी के सूचक मात्र है।

प्रकृति के कार्यों मे कभी कहीं भी भूल नहीं दीखती और यथार्थता का लोप नही दिखाई देता है। गुलाब उसी तरह से फूलते है, कण उसी तरह से बनता है, जिस तरह से वे सृष्टि के प्रारम्भकाल से बनते चले आये है। एक रानी के बाग को सुशोभित करनेवाला गुलाब अपने सौन्दर्य और सुगन्ध में एकान्त निर्जीव झाड़ी में उत्पन्न हुए

गुलाब की अपेक्षा क्या अधिक सुन्दर होता है ? पृथ्वी के गर्भ में बननेवाले कण उसी आकार के बनते है जिस आकार के वे पृथ्वी-तल पर तैयार होते है। एक बर्फ का छोटासा टुकडा, क्षण भर मे जल के अपार सागर मे विलीन हो जानेवाला सुन्दर टुकडा, कैसी सुन्दरता से तैयार किया जाता है ! उसकी निर्मल मनोहरता को देखकर हृदय सोचने लगता है कि क्या यह हीरे-सा टुकड़ा किसी प्रदर्शिनी की शाभा बढाने के लिए बना है ? नक्षत्र और तारे तूफान की गति से, विद्युत् के वेग से, आकाश मंडल मे घूमते है। हजारों मील प्रति सेकन्ड की गति से घूमनेवाले नक्षत्र कितनी बारीकी से जाते होगे, इसका क्या किसीको अनुमान है ? जरा-सी भूल हो जाने से एक तारा दूसरे से टक्कर खा जायगा, सारी सृष्टि मे खलबली मच जायगी और विश्व मे प्रलय का दृश्य रच जायगा, परन्तु प्रकृति की रचना मे कहीं भूल नहीं दीखती। ग्रहण समय पर पडते है, समय पर ही ऋतुयें आती है, दिन और रात ठीक घडी पर ही आते-जाते है। प्रकृति की ये सब घटनायें ईश्वर के कार्यो की यथार्थता को स्पष्ट रूप से बतलाती है।

जिन लोगों के आख और दिमाग बारीकी से देखने के आदी नहीं है, उनसे संसार का कोई विशेष कार्य नहीं होता। बड़े-बड़े दूरबीनो का अविष्कार हो जाने पर भी ज्योतिष की विशेष उन्नति उन्हींके हाथों से हुई है जिनके पास ऐसे यंत्र नहीं थे। उनके पास छोटे-छोटे यंत्र थे, परन्तु उन यंत्रों के पीछे बडी तीव्र एवं दक्ष आंखे थीं।

एक तीन फुट व्यास' के काच को तैय्यार करने मे ६० हजार डालर लग जाता है। उसका तैयार करना इतना कठिन है कि केवल मनुष्य का हाथ ही उसपर अन्तिम पालिश कर सकता है। एक बार से ज़रा भी अधिक हाथ फेरने से "लेन्स" बिगड जाता है। एलवन क्लार्क इस तरह के लेन्स तैयार करने मे बडा निपुण था। परीक्षा करते समय कुछ काम करनेवाले व्यक्तियो ने जरा उसको एक ओर को घुमा दिया। यह देखकर क्लार्क ने कहा—"ठहरो दूसरी परीक्षा करने के पहले उसे ठंडा हो जाने दो। वह इतना कोमल है कि तुम्हारे हाथों को गर्मी का असर उसपर पड जावेगा।"

इसी तरह को सूक्ष्मता और बारीकी के कारण क्लार्क का नाम आज संसार भर मे फैला हुआ है।

काग्रेस का अधिवेशन समाप्त होने के समय एक महाशय ने वेब्स्टर महोदय से एक प्रश्न पर बोलने के लिए कहा। उन्होने उत्तर दिया—"मैं इस समय अन्य कार्यो मे ऐसा फंसा हूं कि मुझे इस विषय पर तैयारी करने का समय नहीं है।"

"परन्तु महोदय! आप तो हरएक विषय पर बडी ही उत्तमता से बोलते है।"

"हाँ, यही तो कारण है कि मैं इस विषय पर नहीं बोल सकता। जबतक उस विषय पर अपना पूर्ण अधिकार नहीं कर लेता तबतक मैं नहीं बोलता और इस समय वैसा करने का मुझे अवकाश नहीं है। अतएव मैं आपकी बात स्वीकार नहीं कर सकता।"

एक प्रसिद्ध लेखक ने लिखा है—"जो-कुछ ठीक है उसे अपनी

पूरी सावधानी, ताक़त और विश्वास के साथ करना चाहिए। हमारे पास ऐसा कई तराजू नहीं है जिसके द्वारा हम अपने कर्त्तव्यों के प्रति की हुई विश्वासपात्रता को तौल सकें अथवा यह ईश्वर की दृष्टि में उनकी क्या पारस्पिरिक विशेषता है कि जो बात हमे मामूली दीखती है वही बडी महत्वपूर्ण हो सकती है और उसपर किसी के जीवन-मरण का प्रश्न निर्भर रह सकता है।"

दांते ने नरक का वर्णन इतनी सजीवता से किया था कि लोग देखकर कहा करते थे—"देखो, यह आदमी नरक मे हो आया है।"

केनन फेरर का कथन है कि जीवन मे एक ही वास्तविक असफलता है, और वह है मनुष्य जिस बात को जैसा भी जानता है उसमें उसका तल्लीन न रहना।

लिओनारडो अपने प्रसिद्ध चित्र 'लास्ट सपर' को तैयार करते समय एक-एक रंग देने के समय मिलन का एकाध चक्कर लगा आया करता था। पोप प्रत्येक पंक्ति को दोबार लिखता था। गिबन ने अपने 'संस्मरणों' को ६ बार लिखा और इतिहास के प्रथम अध्याय को १८ बार लिखा। मान्टेस्क्यू अपनी एक रचना के विषय में लिखते है कि "तुम उसे कुछ घन्टों मे पढ डालोगे,—परन्तु उसके लिखने मे मुझे इतना समय लगा है कि मेरे बाल पक गये।" उन्होंने उसे अपने दिन के अध्ययन का विषय और रात के स्वप्न की सामग्री बना लिया था, वही उनके उद्देश्य का आदि और अन्त था।

एक होशियार प्राणिशास्त्री ने सोचा कि थोडे समय तक अगासीज के पास अध्ययन करने से मैं अपने ज्ञान को पूर्ण कर लूँगा।

वह प्रोफेसर के पास आया। उन्होंने उसे एक मछली दी और कहा—"अपनी आंखों का उपयोग कीजिए।" दो घन्टों के बाद उन्होने अपने विद्यार्थी की परीक्षा ली और कहा—"तुमने सचमुच मछली को अभीतक नहीं देखा, फिर से प्रयत्न करना पड़ेगा।"

दूसरी परीक्षा करने पर उन्होंने कहा—"तुम्हारे कार्य से मालूम होता है कि तुम अपनी आँखों का उपयोग नहीं कर सकते।"

इस शब्दों को सुन विद्यार्थी की प्रयत्न करने की लालसा जागृत होगई और वह अपने कार्य में इतना मग्न हो गया कि फिर जब प्रोफेसर ने कमरे मे प्रवेश किया तो उसे उनकी उपस्थिति का भान भी न हुआ। यह देखकर अध्यापक ने कहा—"ठीक है। बस, अब मैं समझता हूं—कि तुम अपनी आँखो का उपयोग कर सकते हो।"

सन १८०५ ई० मे नेपोलियन ने ब्रिटिश चैनल के पास के कैम्प तोड़कर डेन्यूब की ओर बढ़ने की आज्ञा अपने विशाल दल को दी। उसके दिमाग में बडी-बडी स्कीमे चल रही थी। परन्तु वह आज्ञा देकर ही नहीं रह गया। उसने प्रत्येक कार्य की छोटो-छोटी बाते अपने लेफ्टिनेन्टों पर नहीं छोड़ीं। जिन बातों को उसके मातहत बिलकुल छोटी और ध्यान देने के अयोग्य समझकर परवाह नही करते थे उनका भी उसे हमेशा ध्यान बना रहता था। धावा करने का बिगुल बजने के पहले उसने प्रत्येक सेना के जाने का मार्ग नियुक्त कर दिया, किस सेना को कब किस स्थान पर पहुच जाना चाहिए यह भी तय हो गया। कितने बजे वे अपने ठहरने के स्थान को छोडे और कितने बजे अपने लक्ष्य पर जा डटें, इत्यादि बाते अक्षरशः पूर्ण

करने का उसका हुक्म था। इसका परिणाम यह हुआ कि उसने अस्टरलिज की विजय प्राप्त करके, यूरोप के भाग्य पर दस वर्ष के लिए मुहर लगादो।

सर वाल्टर स्काट जब किसी प्राचीन इमारत को देखने जाते थे तो अपनी नोटबुक में वहाँ पर पाये जानेवाली जंगली घासों के नाम लिख लेते थे, फूलों का वर्णन नोटकर लेते थे और कहा करते थे कि इसी तरह से कोई भी लेखक वनस्पतिशास्त्र का ज्ञाता हो सकता है।

प्रसिद्ध इतिहास-लेखक मेकाले अपने प्रत्येक वाक्य को सर्वोत्तम विधि तक लिखे बिना सन्तुष्ट नहीं होता था।

बारीकी से काम करनेवालों को सभी पसन्द करते है। मालिक हर बात मे अपने नौकर के पीछे कैसे लगा रहा सकता है? यदि उसे दिन भर नौकर को काम के विषय मे बतलाना पड़े तो स्वयं ही कर लेने मे उसे सुभीता होगा। ऐसे नौकर को रखना कोई पसन्द नहीं करता, परन्तु जो लोग हाथ मे आये हुए कार्य को करने मे अपनी समस्त शक्तियों को लगा देते है तथा दिमाग भी खर्च करते है, सूक्ष्मता से काम लेते है, उन्हे हर जगह काम मिल ही जाता है। एक मामूली चीज को उत्तमता से बनाने में जो सफलता और ख्याति होती है वह एक बड़ी चीज को अधूरी बनाने मे कभी प्राप्त नहीं होती।

फील्ड्स का कथन है—"कई स्त्रिया ऐसी है जिनके टाके कच्चे रहते है, जिनके सिये हुए बटन जरा-से झटके मे निकल पड़ते है। लेकिन कई ऐसी भी है जो उन्हीं सुई और धागो का उपयोग करके

बटनों को इतनी उत्तमता से सी देती है कि कपड़े फट जाते है पर बटन नहीं टूटते।"

जीवन मे असफल होनेवालों की कब्र पर 'असावधानी', 'लापरवाही', 'आलस्य' आदि शब्द लिखे जाते है। असावधानी और अयथार्थता से कितने ही कर्क, अध्यापक, डाक्टर आदि अपनी प्रतिष्ठा और अपना स्थान खो बैठते है।

जाना चिकरिन ने जिस दिन से प्यानो बनाना शुरू किया था उसी दिन से वह अपने परिश्रम और सावधानी के लिए प्रसिद्ध हो गया था। बाजा बनाने मे वह कोई भी बात मामूली नहीं समझता था। बारीकी और ज्ञान की तुलना मे समय और परिश्रम को वह कुछ न समझता था। शीघ्र ही उसने पियानो का एक कारखाना खोल दिया। उसने ऐसे बाजे बनाने का इरादा किया जो बहुत थोड़े परिश्रम मे मधुर राग निकाल सके, किसी आबहवा का उनपर असर न हो सके और उनमें से सदा एकसा सुर निकलता रहे। उसका प्रत्येक बाजा पहले बाजे से एक कदम आगे ही रहता था। जीवन के अन्तकाल तक वह अपने बाजे मे सुधार करता रहा। उसने अपने काम को किसी दूसरे के हाथ मे नहीं सौंपा। किसी बात मे अनियमितता को स्थान नहीं था। सारे प्रतिद्वन्द्वियों को उसने हरा दिया था। चारित्र्य, व्यापारिक और नैतिक, दोनों ही दृष्टि से मूल्य रखता है।

जोसफ टरनर के पिता की इच्छा थी कि वह नाई का काम करे, परन्तु चित्रकला की ओर उसकी प्रवृत्ति बहुत तीव्र थी इसलिए आनाकानी करते हुए उसे यह कार्य करने को अनुमति मिल गई। वह

शीघ्र ही इस कार्य मे कुशल हो गया। उसके पास साधन नहीं थे फिर भी वह पंचागों और 'गाइड' की पुस्तकों के लिए चित्र बनाया करता था। यद्यपि उसे बहुत कम काम मिलता था, तिसपर भी, उसके काम मे कोई असावधानी दृष्टिगोचर न होती थी। उसके काम का मूल्य मिलनेवाले महनताने से कई गुना अधिक रहता था। धीरे-धीरे कीमत बढने लगी और उसे ऊचे दरजे का काम मिलने लगा। अब उसके परिश्रम का भी ठिकाना नहीं रहा। वह बडी बारीकी से संसार के बाजार के लिए अपनी कला को तैयार करने लगा। उसके चित्रों से सजीवता फूट-फूटकर निकलती थी। उसके प्राकृतिक दृश्यों के चित्र बड़े-बड़े चित्रकारो को भी शर्मिन्दा करते। जो महत्व साहित्य मे शेक्सपियर को प्राप्त है वही टरनर को इस क्षेत्र मे प्राप्त है।

किसी भी काम के करने मे यथार्थता और सावधानी की आदत डाल लेनी चाहिए। यथार्थता का अर्थ चारित्र्य और चारित्र्य का अर्थ शक्ति होता है।

———

[१४]

अध्यवसाय

"प्रत्येक अच्छा कार्य पहले असम्भव रहता है।"

—कारलाइल

"हमेशा आगे बढते रहने से और विश्वास करने से कठिनाई दूर हो जाती है और दिखाई देनेवाली असम्भवता नष्ट हो जाती है।"

—जेरमी कोलियर

"पानी-जैसी चचलता से मनुष्य ऊँचा नही पहुँचता।"

—बर्क

शेरीडन के पार्लमेन्ट मे भाषण दे चुकने के बाद एक संवाददाता ने कटाक्ष करते हुए उनसे कहा—"मुझे कहते हुए अफसोस होता है कि यह कार्य आपकी शक्तियो के बाहर है।" शेरीडन थोडी देरतक सोचते रहे। फिर मुह ऊचा करके उन्होंने कहा- -"महाशय! यह काम

मेरी शक्ति के भीतर है और इसकी सचाई आप शीघ्र ही देखेंगे।"
इन्हीं शेरीडन के वारनहेस्टिंग्ज़ के विरुद्ध भाषणों को सुनकर प्रसिद्ध वक्ता फाक्स ने कहा था कि ऐसा भाषण हाउस आफ कामेन्स में अभी तक कभी नहीं हुआ।

कार्लाइल ने ठीक ही कहा है कि पहले अपने काम को जान लो, फिर उसे करो, और उसके करने मे अपनी सारी ताकत लगादो।

किसी भी कार्य की सफलता के लिए यह बहुत जरूरी है कि जिस काम को हाथ मे लो उसीमे सारी ताकत लगादो। रेनाल्ड कहते है कि कोई व्यक्ति यदि किसी भी कला में श्रेष्ठ होना चाहता है तो उसे चाहिए कि वह अपने मन की सब शक्तियों को उसीमे लगा दे सोकर उठने मे रात को बिछौने पर सो जाने तक केवल उसीका विचार करे। यही बात टरनर महोदय ने अपनी सफलता की कुंजी को प्रकट करते समय कही थी, कि मेरे पास कठिन परिश्रम के अलावा दूसरा कोई तरीका नहीं है।

आदमी अक्सर 'यह करे या वह करे ?' की उलझन मे पड़कर अपनी सफलता को गवा बैठता है। एक बार वह तय कर लेता है कि इस कार्य को करूंगा, लेकिन दूसरी बार दोस्त की सलाह से इरादा बदल देता है। एक विचार से वह दूसरे विचार की ओर बढ़ता है, एक तरीके को छोडकर दूसरे तरीके को पकडता है। हरेक हवा का झोंका उसे अपनी ओर खींच लेता है। ऐसे व्यक्ति से संसार का कोई बडा कार्य नहीं हो सकता। किसी एक पथ मे उन्नति करने की

अपेक्षा वह अपने स्थान से एक इंच आगे नहीं बढ़ सकता। इतना ही नहीं बल्कि वह सब बातों में पिछड़ता ही जावेगा।

इसके विपरीत, जो आदमी पहले दीर्घदृष्टि से विचार एवं संकल्प करके किसी काम के करने में लगता है और अध्यवसाय से छोटी-बड़ी कठिनाइयों को पार कर जाता है और हिम्मत नहीं हारता वह हरेक लाइन में—हरेक काम में—ऊंची-से-ऊंची जगह प्राप्त कर लेता है।

सतत-परिश्रम के द्वारा ही मिश्र के मैदानों में पिरामिड तैयार किये गये, सतत-परिश्रम के द्वारा ही जेरूसलम के विशाल और भव्य मंदिर बने, चीन-साम्राज्य की सीमा का रक्षण करनेवाली दीवाल खड़ी की गई, बादलों से ढके हुए आल्प्स पर्वत की चढाई हुई, विशाल और तूफानवाले अटलाण्टिक महासागर का मार्ग खुला, जंगल और पहाडों को नाश करके नई दुनिया में नगर राज्य और राष्ट्रों का निर्माण हुआ। उद्योग ने संगमर्मर की चट्टानों को सुन्दर रूपों में परिवर्तित किया है और धातु पर अदृश्य और छायामयी चीजों को बनाया है। उद्योग के द्वारा ही हजारों मशीनें चलती हैं। मोटर, हवाई जहाज, रेल आदि इधर-उधर चक्कर काटने लगे हैं। दूरी का प्रश्न ही मिटा जा रहा है। उसीने विशाल चट्टानों में छेदकर बोगदे तैयार किये हैं। सागर की छाती को जहाजों से पाट दिया है और अज्ञात भूमि को ढूंढ निकाला है। उसने प्रकृति को विज्ञान के अगणित रूपों में परिवर्तित कर दिया, उसे नियमों का पाठ पढ़ाया, उसके भविष्य की हलचल का ज्ञान प्राप्त किया, जिसपर कोई न

जासका ऐसे स्थान का परिमाण निकाला, अनन्त दुनिया के समूह का गिना और उनके अन्तर, आकार एवं गति का पता लगाया।

कौडी कौडी करके आनेवाला पैसा जल्दी से आनेवाले रुपये की अपेक्षा अधिक निश्चित होता है। धीरे-धीरे चलनेवाला घोडा रेस के घोड़े से अधिक लम्बी और निश्चित सफ़र कर सकता है। इसी प्रकार प्रतिभा तीव्र गति से आगे बढ़ती है, विचलित हो जाती और अत मे थक जाती है। जीवन की घटनाओं और विजयों का भी यही हाल है। परिश्रमी मनुष्य की अन्तिम चोट विजय की सीमा को पहुचाती है।

एक दिन एक पत्र-प्रतिनिधि ने प्रसिद्ध विज्ञानशास्त्री थॉमस एडिसन से पूछा—"कहिए महाशय, क्या आपके सारे आविष्कार उन्न प्रेरणाओं के परिणाम है? रात को जब आप जागते है तब क्या उन्हीका विचार करते रहते है?"

"नहीं भाई! केवल ग्रामोफोन को छोडकर करने लायक और कोई भी काम मैंने आचनक नहीं किया। मेरे सब आविष्कार लगातार प्रयत्नों के फलमात्र हैं। पहले मै देख लेता हूँ कि कौन-सी बात लाभ-प्रद होगी और फिर जान का लोभ छोडकर उसके पीछे पड जाता हू। जिस बात को मै शुरू करता हू वह मेरे दिमाग मे रहती है और जबतक वह पूरी नहीं हो जाती, तबतक मुझे चैन नहीं पडती।"

इसी तरह जो व्यक्ति अपनी सारी शक्तियों को एक कार्य मे लगा देता है, उसे सफलता अवश्य मिलती है। इसके अतिरिक्त यदि उसमें योग्यता और बुद्धि है तो उसे विजय मिले बिना नहीं रहेगी।

बुलवर ने किस प्रकार दैव से युद्ध करके अपने भाग्य को बदल दिया ? उसका पहला उपन्यास असफल रहा। उसकी प्राथमिक कवितायें अच्छी सिद्ध न हुई। उसके यौवन-काल के भाषणों ने विरोधियों को उसकी हंसी उडाने का मौका दिया। परन्तु उसने अपनी असफलता, हार और हंसी-मजाक के बादलों को भी अपनी चमक दिखाई।

प्रसिद्ध इतिहासकार गिबन ने अपने 'रोम सामाज्य का पतन' नामक ग्रन्थ की रचना मे २० वर्ष खर्च किये थे। वेब्स्टर ने अंग्रेजी का बडा कोष तैयार करने मे २६ वर्ष लगाये। शब्दो के संग्रह और परिभापाओं के संग्रह मे उसने कितनी सराहनीय धीरता का परिचय दिया। अमेरिका का इतिहास लिखने मे जार्ज बेक्राफ्ट ने २६ वर्ष लगाये थे। प्राचीन राष्ट्रो की वंश-परम्परा का हाल पन्द्रह बार लिखा था। टिटन ने अपनी रचना (Last suppe1) पाचवे चार्ल्स के पास भेजते हुए लिखा था कि इसे लिखने मे सात वर्ष लगे है। जार्ज स्टीफनसन ने १५ वर्ष रेलगाडी का सुधार करने में व्यतीत किये। वाट ने बीस वर्ष तक भाफ के इंजिन का अध्ययन किया था। हार्वे ने आठ वर्ष शरीर की रक्त-संचालन-विधि को ढूंढ निकालने में व्यय किये। उसके साथी उसे पागल कहा करते थे। २५ वर्ष तक गाली और हंसी-मजाक सहने के बाद उसके आविष्कार को डाक्टरों ने अपनाया था।

विपरीत परिस्थितियों का विरोध करने से ताकत पैदा होती है क्योंकि विरोध से प्रतिकार करने की अधिक से अधिक ताकत पैदा

होती है। एक बाधा को दूर करने से उससे कठिन दूसरी बाधा को दूर करने की ताकत आजाती है।

कोलम्बस ने कहा—"जब सूर्य और चन्द्रमा गोल है तब पृथ्वी गोल क्यों नहीं हो सकती ?"

एक आदमी बोल उठा—"जब पृथ्वी गेंद के समान है तो वह लटकी किसके सहारे है ?"

कोलम्बस—"महाशय, सूर्य और चन्द्रमा को कौन रोके हुए है ?"

एक पादरी ने कहा—"लेकिन यह सिद्धान्त ही बाइबल के विरुद्ध है। बाइबल कहती है कि आकाश तम्बू के समान ऊपर तना है—वह चपटा है, और उसे गोल कहना धर्म का अपमान करना है।"

यह सब सुन निराशा से कोलम्बस ने अपना देश छोड़ दिया और सातवें चार्ल्स की शरण लेना चाहो। परन्तु उसी समय एक धीमी आवाज उसके कानों में पड़ी। एक पुराने दोस्त ने रानी इसाबेला को सुझाया कि यदि इस मांझी का कथन सच है तो थोड़े से खर्च में उसकी बड़ी ख्याति हो जावेगी और आपको भी श्रेय मिलेगा। तब रानी ने हिम्मत करके कहा—"अच्छा बुलाओ, उसको। मैं स्वयं अपने हीरे-जवाहरात गिरवी रखकर उसे पैसा दूंगी।"

कोलम्बस लौटा और उसके साथ ही दुनिया भी लौट पड़ी। कोई नाविक उसके साथ जाना नहीं चाहता था। और मौत के मुंह में जाता भी कौन ? धुंधली-सी आशा के प्रकाश में अपना जीवन फेंक देनेवाले वीर संसार में विरले ही होते हैं। फिर भी राजा और रानी के जोर पर कुछ लोग तैयार हुए।

तीन दिन और रात तक पिन्टा नामक एक छोटा-सा जहाज महासागर की लहरों से टक्कर लेता रहा। ऊपर आकाश और नीचे आकाश से बातें करनेवाली लहरें, चारों ओर अनन्त जलराशि। ऐसे समय मे सहसा एक मस्तूल खराब हो गया। माझियों ने बलवा करना चाहा और देश को लौट जाने पर जोर देने लगे। परन्तु उद्योगी और निश्चयी कोलम्बस कब हटनेवाला था? उसके जीवन का एक काम, एक लक्ष्य और एक आशा थी। उसने साथियों को भारत के खजाने और कीमती हीरों का लोभ दिया। कनरीज द्वीप के २०० मील दूर पश्चिम के स्थान पर कुतुबनुमा-यत्र के खराब हो जाने से उसकी सुई ने उत्तरीय ध्रुव को बताना बन्द कर दिया। तब उपद्रवी मल्लाहों को उसने समझाया कि ध्रुव तारा बिलकुल उत्तर मे नहीं होता है। घर से २३०० मील की दूरी पर होने पर भी उसने साथियों को समझाया कि अभी तो हम १७०० मील ही चल पाये हैं, अभी हिम्मत नही हारनी चाहिए। थोड़े समय मे उसे झाड़ियो की कुछ लकड़िया तैरती हुई दिखाई दी। आकाश मे कुछ पक्षी उडते हुए दीख पडे। स्वप्न सच हो गया। १२ अक्तूबर १४९२ को पश्चिमी दुनिया मे जाकर कोलम्बस ने अपना झण्डा गाड दिया। उसे नई दुनिया मिल गई।

अपने चुने हुए कार्य मे बार-बार असफलता मिलने पर भी उसमे लगे रहने के कारण जीवन-सग्राम मे मनुष्य विजय पाते है। उनकी विजय मित्रो की सहायता, अनुकूल परिस्थिति अथवा अपनी स्वाभाविक शक्तियों की अपेक्षा उद्योग करने पर कहीं अधिक निर्भर

रहती है। योग्यता की भी आवश्यकता जरूर रहती है, परन्तु उद्योग किसी हालत मे कम उपयोगी नहीं रहता।

बाइबल मे एक वाक्य है—"मुसीबतों पर जो विजय प्राप्त करता है अपने तख्त पर उसके लिए मैं जगह करता हूँ।"

एक चीनी विद्यार्थी बार-बार अपने प्रयत्नों मे असफल होने के कारण निराश हो गया। किताबों को उसने दूर फेंक दिया। लेकिन उसकी दृष्टि एक बूढ़ी औरत पर पडी। वह एक लोहे के टुकड़े को घिसकर सुई बनाने मे लगी हुई थी। उसके धैर्य को देखकर विद्यार्थी ने भी अपना एक नवीन निश्चय किया और चीन के तीन प्रसिद्ध विद्वानों मे उसकी गणना होने लगी।

सिडनी स्मिथ का कहना है कि साधारणत: लगभग सारे महान पुरुषों का जीवन अत्यंत अविरत परिश्रमवाला होता है। जिन्दगी का पहला आधा भाग वे गरीबी और परिश्रम मे बिताते है। लोगों का ध्यान उनकी ओर जाता ही नहीं। जब लोग नींद मे सपने देखते होते है तब वे वर्तमान की स्थिति मे से रास्ता निकालकर भविष्य के महान व्यक्ति बनने का मार्ग खोजते रहते है। उनकी अन्तरात्मा तो यही कहा करती है कि वे जगत के इस उपेक्षित कचरे मे हमेशा कभी नहीं रह सकते, वे एक दिन जरूर चमकेंगे।

मिलिब्रान कहा करता था कि "यदि एक दिन मे अपने काम का अभ्यास करना छोड देता हू तो मुझे अपने अभ्यास की कमी स्पष्ट मालूम होने लगती है, यदि दो दिन निकल गये तो मेरे मित्र देखते है, और यदि एक सप्ताह तक यही हालत रही तो मेरी असफलता को

संसार देखता है।" बात ठीक ही है। बार-बार प्रयत्न करने से दिमाग की शक्तियाँ जागृत अवस्था में रहती है।

कार्लाइल ने फ्रांस की राज्यक्रान्ति का इतिहास लिखा था। उसका प्रथम भाग छपने के लिए जानेवाला था कि एक मित्र ने उसे पढ़ने के लिए माँगा। उसने वह दे दिया। मित्र की भूल से वह कापी फर्श पर पड़ी रह गई और दासी ने उसे रद्दी कागज समझकर आग जलाने के काम मे लेली। कितनी निराशा की बात थी ? परन्तु दृढव्रती कार्लाइल हतोत्साह नहीं हुआ। कई महीनों तक सैकड़ों ग्रन्थों, अनेकों हस्तलिखित पत्रों और दर्जनों विश्वसनीय घटनाओं से पूर्ण रचनाओं का अध्ययन करने के बाद उसने फिर से उस ग्रन्थ को लिख डाला।

बड़े-बड़े लेखक हमेशा ही अपनी अदम्य दृढ़ता के लिए प्रसिद्ध रहते हैं। उनकी रचनायें दिमाग की प्रतिभा की चिनगारियों का परिणाम नहीं होतीं, परन्तु वे बार-बार के सुधार का परिणाम रहती है। इस रचना कौशल के द्वारा उनमे विचित्र सौन्दर्य और महानता आ जाती है।

गतिशील पत्थर को काई नहीं लगती, काम मे आनेवाले लोहे पर जंग नहीं लगती। लगातार बार-बार प्रयत्न करनेवाला असफल नहीं होगा। बारह वर्ष घर मे नियम से प्रतिदिन १ घंटा काम करना स्कूल के चार वर्षों के अध्ययन से कही अधिक अच्छा है। एक अच्छे ग्रन्थ के पढ़ने से मनुष्य का जीवन सुधर जाता है। बुलवर कहता है कि धीरज विजेता का साहस है। वह सर्वोत्तम गुण है, जो मनुष्य के भाग्य के विरोध के आगे खड़ा होता है।

अपने हाथ मे लिये हुए कार्य मे डटे न रहने के कारण ही असफलता मिलती है। क्या तुम एक भी ऐसा उदाहरण बता सकते हो जहां सच्ची सफलता की जड मे दृढता न छिपी हो ? अमर चित्रकारों को अपनी कूचियो को कागज पर चलाते-चलाते क्या बरसों नहीं बीत जाते ? कोई अमर लेखक क्या योंही बन जाते है ? क्या उन्होंने बरसों अभ्यास के बाद अपनी रचना नहीं की है ? जिस समय संसार ऐश-आराम मे मग्न था उस समय वे अपने हाथ मे कलम लिये अपने दिमाग और अध्ययन को चिरस्थायी कर रहे थे। बर्क कहता है कि "निराश मत होओ। और अगर निराश होओ भी तो अपना काम बन्द मत करो। निराशा मे भी काम करते जाओ।"

———— ————

[१५]

संक्षेप

"चाहे कोई हमारी बात समझे या न समझे, संक्षेप मे कहना हमेशा ही अच्छा है ।"

—बटलर

"शब्द पत्तो के समान है। जहा वे बहुतायत मे रहते है वहा फलरूपी ज्ञानयुक्त बाते कठिनाई से दिखाई पडती है ।"

—पोप

"जो-कुछ तुम्हे कहना या लिखना हो उसे थोडे ही मे कहो या लिखो।"

—जान नील

"एकाग्रता मे ही विजय प्राप्त होती है ।"

—चार्ल्स बक्सटन

संक्षेप मे खतम करो। थोड़े-से मे अपनी कहने की बात पर आ जाना चाहिए। बुद्धिमत्ता और विनोद मे खास ध्यान देने योग्य बात संक्षेप है। सास के वेग से भी दूर हट जानेवाली वायु को एक

जगह खूब दबाकर रखने से उसमे इतनी ताकत आजाती है कि अपने सामने की चट्टान के भी टुकड़े-टुकड़े कर देती है। यदि तुम कोई महत्वपूर्ण काम करना चाहते हो तो एकाग्रता पर ध्यान दो। यदि तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारी बातो से लाभ उठावें तो उसके सार को एकत्र करके रखो।

'न्यूयार्क ट्रिब्यून' मे होरेस ग्रील जिस विषय पर एक लेख लिखता था उसी विषय पर थरलो वीड एक अन्य पत्र मे कुछ शब्द ही लिख देता था। उसके ये शब्द चिनगारियों का काम करते थे।

साइरस फील्डस अपने मुलाकातियों से कहा करते थे—"जो-कुछ आपको कहना हो संक्षेप मे कहिए। समय अमूल्य है। ठीक समय पर काम करना, ईमानदार रहना और संक्षेप मे काम निकालना ये तीनों ही जीवन कुंजिया है। कभी लम्बी चिट्ठी मत लिखा करो। एक कामकाजी आदमी के पास उसे पढने के लिए समय नहीं है। ऐसा कोई भी काम नही है जिसे एक कागज पर न लिख सकते हो। बरसों पूर्व जब मै अटलान्टिक महासागर म केबिल डालने मे लगा हुआ था तब मुझे एक महत्वपूर्ण पत्र इंग्लैण्ड को लिखने का मौका आया। मुझे मालूम था कि रानी और प्रधान मंत्री उसे पढेंगे। अपने विचारों को मैने लिखा। कई कागज भर गये। मैने उसको बीस बार पढा। हर बार कुछ-न-कुछ आवश्यक शब्दो को दूर कर देता था। होते-होते सारी बात कागज के एक टुकड़े में आ गई। फिर मैने उसे ठीक करके समय पर भेज दिया। उसका उत्तर सन्तोषजनक आया। क्या आप सोचते है कि लम्बा पत्र भेजता तो उसका भी यही परिणाम होता ?

उस पत्र को पढ़ने के लिए उनके पास समय कहा से आता ? संक्षेप एक बड़ा मूल्यवान गुण है ।"

ए० टी० स्टुवर्ट अपने समय को पूजी समझता था। उसके आफिस मे कोई भी व्यक्ति दरबान को बिना सूचना दिये प्रवेश नहीं कर पाता था। इसके बाद आफिस के पास खड़े रहनेवाले नौकर को भी सूचना देनी पड़ती थी। यदि आगन्तुक "अकेले मे" मिलने की इच्छा प्रकट करता था तो नौकर कह दिया करता था कि "मि० स्टुवर्ट किसीसे अकेले मे नही मिलते।" जब इतनी आपत्ति उठाने के बाद कोई स्टुवर्ट के सामने पहुचता था। तब उसे बिलकुल संक्षेप मे बातचीत करनी पड़ती थी। स्टुवर्ट के भारी कारबार का समस्त कार्य योग्य प्रणाली और शीघ्रता से होता था। प्रतिद्वन्द्वी व्यापारी इसे देखकर आश्चर्य में पड़ जाते थे। इधर-उधर कुछ नहीं होता था। व्यापारिक ढंग ही उनके जीवन की कुजी थी। सुबह से शाम तक यही बात आंखों के सामने रहती थी। वह काम-काज के समय मे अपने मित्रों से बातचीत तक न करते थे। उनके पास एक क्षण भी व्यर्थ जाने के लिए नहीं था।

साऊदे ने ठीक कहा है कि यदि तुम तीव्र होना चाहते हो तो संक्षेप को ग्रहण करो। जिस तरह सूर्य की किरणों के एकत्र होने से आग लग जाती है उसी तरह सक्षेप का परिणाम होता है।

स्टील ने कहा है कि "जब किसी को केवल स्पष्ट सत्य ही कहना है तब वह थोड़े में कह सकता है।"

ग्रीस के सात विद्वानों का नाम संसार मे आजतक उनके दो अथवा तीन शब्दों के छोटे-छोटे वाक्यों के कारण ही है।

एडवर्ड ट्रायन ने कहा भी है—"राष्ट्रों की विद्वत्ता उनकी कहावतों मे है। हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि पहले कहने के लिए कुछ सामग्री हो। सामग्री होने के बाद अपने कथन को संक्षेप मे कह दो और चुप हो जाओ।"

सस्ता-साहित्य-मण्डल के

प्रकाशन

१—दिव्य-जीवन ।=)
२—जीवन साहित्य (दो भाग) १)
३—तामिलवेद ॥)
४—शैतान की लकड़ी अर्थात् भारत में व्यसन और व्यभिचार ॥=)
५—सामाजिक कुरीतियाँ (जब्त, अप्राप्य) ॥)
६—भारत के स्त्री-रत्न (दो भाग) १॥-)
तीसरा भाग १)
७—अनोखा (विक्टर ह्यूगो) १।=)
८—ब्रह्मचर्य-विज्ञान ॥=)
९—यूरोप का इतिहास २)
१०—समाज-विज्ञान १॥)
११—खद्दर का सम्पत्ति-शास्त्र ॥=)
१२—गोरों का प्रभुत्व ॥=)
१३—चीन की आवाज (अप्राप्य) ।-)
१४—दक्षिण अफ्रिका का सत्याग्रह १।)
१५—विजयी बारडोली २)
१६—अनीति की राह पर ।=)
१७—सीताजी की अग्नि-परीक्षा ।-)
१८—कन्या-शिक्षा ।)
१९—कर्मयोग (अप्राप्य) ।=)
२०—कलवार की करतूत =)
२१—व्यवहारिक सभ्यता ॥)
२२—अँधेरे में उजाला ॥)
२३—स्वामीजी का बलिदान (अप्राप्य) ।-)
२४—हमारे जमाने की गुलामी (जब्त, अप्राप्य) ।)
२५—स्त्री और पुरुष ॥)
२६—घरों की सफाई ।=)
२७—क्या करें? (दो भाग) १॥=)
२८—हाथ की कताई-बुनाई (अप्राप्य) ॥=)
२९—आत्मोपदेश ।)
३०—यथार्थ आदर्श जीवन (अप्राप्य) ॥-)
३१—जब अंग्रेज नहीं आये थे- ।)
३२—गंगा गोविन्दसिंह (अप्राप्य) ॥=)
३३—श्रीरामचरित्र १।)

३४—आश्रम-हरिणी ।)

३५—हिन्दी-मराठी-कोष २)

३६—स्वाधीनता के सिद्धान्त ॥)

३७—महान् मातृत्व की ओर ॥।=)

३८—शिवाजी की योग्यता (छप रही है) ॥)

३९—तरंगित हृदय (छप रही है) ॥)

४०—नरमेध १॥)

४१—दुखी दुनिया ॥)

४२—जिन्दा लाश ॥)

४३—आत्म-कथा (गांधीजी) दो खण्ड सजिल्द १॥)

४४—जब अंग्रेज आये (जब्त) (अप्राप्य) १।=)

४५—जीवन-विकास अजिल्द १।) सजिल्द १॥)

४६—किसानों का बिगुल (जब्त) =)

४७—फांसी ? ॥)

४८—अनासक्तियोग तथा गीता-बोध (श्लोक-सहित) ।=)
अनासक्तियोग =)
गीताबोध— -)॥

४९—स्वर्ण-विहान (जब्त) ।=)

५०—मराठों का उत्थान पतन २॥)

५१—भाई के पत्र १॥) सजिल्द २)

५२—स्वगत ।=)

५३—युग-धर्म (जब्त:अप्राप्य) १=)

५४—स्त्री-समस्या १॥)

५५—विदेशी कपड़े का मुक़ाबला ॥=)

५६—चित्रपट ।=)

५७—राष्ट्रवाणी (अप्राप्य) ॥=)

५८—इंगलैण्ड में महात्माजी १)

५९—रोटी का सवाल १)

६०—दैवी सम्पद् ।=)

६१—जीवन-सूत्र ॥।)

६२—हमारा कलंक ॥=)

६३—बुद्बुद ॥)

६४—संघर्ष या सहयोग ? १॥)

६५—गांधी-विचार-दोहन ॥।)

६६—एशिया की क्रांति जब्त १॥।)

६७—हमारे राष्ट्रनिर्माता २॥) सजिल्द ३)

६८—स्वतन्त्रता की ओर— १॥)

६९—आगे बढ़ो ! ॥)

७०—बुद्ध-वाणी ॥=)

पता—सस्ता-साहित्य-मण्डल, नया बाज़ार, दिल्ली ।